लोक कथाओं में न्याय

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Nyaaya (Justice in Folktales)
Cover Page picture : Balance for Justice
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

लोक कथाओं में न्याय 7

1 राजा शिबि की कहानी 9

2 सोलोमन के न्याय की कहानियॉ 15

3 अरेबियन नाइट्स की कहानी 24

4 बीरबल की कहानियॉ 39

5 शेक्सपीयर की कहानी 57

लोक कथाओं में न्याय 67

6 न्याय प्रिय राजा फ़िरदी 69

7 नर मच्छर क्यों नहीं काटते 76

8 शेर का बॅटवारा 80

9 नौ हयीना और एक शेर 85

10 न्याय में अन्तर 89

11 टर्की और खरगोश को न्याय मिला 93

12 बतखों का बॅटवारा 102

13 शैम्याक का न्याय 114

14 लोकी और बौने 120

15 सूप की चुरायी हुई खुशबू 125

16 पैसे किसके लिये 129

17 कौवी और बाज 134

18 आधा आधा 140

19 पॉसा पलट गया 148

20 एक लोमड़ा और एक मगर 155

21 बबून का फैसला 162

22 भूत ब्राह्मण 165

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में न्याय

न्याय हर देश में हर परिवार में हर व्यक्ति को कहीं न कहीं कभी न कभी करना ही पड़ता है। आपस में शान्ति बमाये रखने के लिये यह बहुत ही आवश्यक है। संसार के इतिहास में कई राजा अपने न्याय के लिये बहुत मशहूर हो चुके हैं उनमें से कुछ पुराने हैं कुछ नये हैं। कुछ राजा हैं तो कुछ उनके सलाहकार हैं। ऐसी ही कुछ जानवरों की भी लोक कथाऐं हैं जिनमें जानवर आपस में न्याय कर के अपने झगड़े सिलटाते हैं। यहॉ हम कुछ ऐसे ही किस्से कहानियॉ दे रहे हैं जिनसे उनके न्याय का अन्दाजा होता है कि लोग कैसे न्याय करते हैं। इन कहानियों में ऐसी कई अलग अलग परिस्थितियॉ दी गयी हैं जो समज के सामने न्याय की विभिन्न तस्वीरें रखेंगी और उनको सोचने पर मजबूर करेंगी कि क्या उनका न्याय ठीक था या नहीं।

न्याय की कहानियॉ पुस्तक में केवल संसार की दूसरी भाषा की ही लोक कथाऐं नहीं है बल्कि इसमें संसार की विदेशी कहानियॉ, हिन्दू धर्म की पुरानी कहानियॉ, भारत के इतिहास की कहानियॉ और कुछ रोचक लोक कथाऍ भी शामिल हैं। इनमें से कुछ कहानियॉ तुम लोगों को आश्चर्यचकित करेंगी तो कुछ हॅसायेंगी और कुछ सोचने पर मजबूर कर देंगीं तो कुछ नफरत पैदा करेंगी कि यह किस तरह का न्याय है।

हिन्दू धर्म में न्याय के लिये राजा शिबि बहुत मशहूर हुए हैं। क्योंकि वे सबसे पुराने थे इसलिये सबसे पहले उन्हीं की कहानी से हम यह पुस्तक शुरू कर रहे हैं। ज्यू धर्म में राजा सोलोमन भी अपने न्याय के लिये बहुत मशहूर थे। उनके न्याय के भी कुछ किस्से यहॉ दिये जा रहे हैं। राजा सोलोमन के बाद बारी आती है अरेबियन नाइट्स[1] की। उसकी भी एक कहानी यहॉ दी गयी है। सम्राट अकबर अपने न्याय के लिये कई बार अपने सलाहकार बीरबल की सहायता लिया करते थे। कुछ किस्से उनके भी यहॉ दिये जा रहे हैं।

उन्हीं दिनों इंगलैंड में विलियम शेक्सपीयर[2] हुए जिनके नाम से इंगलैंड जाना जाता है। उनका लिखा एक नाटक है जो न्याय की एक बहुत ही सुन्दर कहानी है। वह कहानी भी यहॉ शामिल की गयी है।

ऐसी ही न्याय की कहानियॉ कुछ और भी हैं जो लोक कथाओं के रूप में हैं। यहॉ तीन लोक कथा अफ्रीका से, कुछ लोक कथाऐं एशिया से और एक लोक कथा नौर्स देशों से दी जा रही हैं। इन्हें पढ़ो और देखो कि न्याय कैसे किया जाता है। और यह भी देखो कि अगर तुम उनकी जगह होते तो तुम कैसे न्याय करते।

---

[1] Arabian Nights or “The Book of a Thousand and a Night”

[2] William Shakespeare – great name in the world of English literature with whose name the whole England is identified.

1 राजा शिबि की कहानी[3]

भारत में बहुत पुराने समय में एक राजा शिबि हो गये हैं जो अपने त्याग, अपनी शरण में आये हुए की रक्षा और न्याय के लिये बहुत मशहूर थे।

एक बार अग्नि देव और देवताओं के राजा इन्द्र ने उनके इन गुणों का इम्तिहान लेना चाहा तो अग्नि देव ने एक कबूतर[4] का रूप रखा और इन्द्र देव ने एक बाज़ का।

अब बाज़ तो कबूतर को खा जाता है सो वह बाज़ कबूतर को खाने के लिये उसके पीछे पीछे उड़ चला।

अब कबूतर आगे आगे और बाज़ उसके पीछे पीछे। दोनों उड़ते हुए राजा शिबि के दरबार में आये। राजा शिबि उस समय अपने दरबार में बैठे लोगों की परेशानियॉ सुन रहे थे और उनके मामले सिलटा रहे थे।

कि तभी एक कबूतर डरा डरा सा सहमा सहमा सा उनकी गोद में आ कर गिर गया और दुबक गया। बाज़ उसके पीछे पीछे था।

बाज़ ने राजा से कहा — "यह मेरा शिकार है राजन, इसे मुझे दे दीजिये।"

---

[3] Story of King Shibi – an Indian mythological story

[4] Translated for the word "Pigeon". See its picture above.

राजा ने भॉप लिया कि वह बाज़ उस कबूतर को खाना चाहता है इसलिये वह कबूतर बाज़ से बचने के लिये उनकी गोद में आ कर छिप गया है। इस तरह कबूतर अब उनकी शरण में था और जैसे कह रहा था कि "इस बाज़ से मेरी रक्षा करो।"

राजा का यह नियम था कि वह अपनी शरण में आये हुए की रक्षा जरूर करते थे चाहे उनकी जान ही क्यों न चली जाये। इस मामले में भी ऐसा ही हुआ।

उन्होंने कबूतर से कहा — "तुमको अब इस बाज़ से डरने की कोई जरूरत नहीं है। तुम मेरी शरण में हो वह तुम्हारा एक पंख भी नहीं छू सकता।"

फिर उन्होंने बाज़ से कहा — "यह कबूतर अब मेरी शरण में है इसलिये मैं इसको तो अब तुमको नहीं दे सकता। पर न्याय के अनुसार तुमको इसके बदले में जो कुछ भी चाहिये वह मुझसे ले लो मैं देने को तैयार हूँ।"

बाज़ बोला — "हे राजन, मैं सुबह से भूखा था। बड़ी मुश्किल से यह शिकार मुझे हाथ लगा था। मैं इसका बहुत दूर से पीछा करता चला आ रहा हूँ। मैं इसको पकड़ने ही वाला था कि यह आपकी गोद में आ कर गिर गया। यह मेरा शिकार है इसलिये आप इसको मुझे दे दीजिये। यही न्याय है।"

राजा बोले — "यह जब तक मेरी गोद में आ कर नहीं गिरा था तब तक यह तुम्हारा शिकार था पर अब यह मेरी शरण में है इसलिये एक राजा होने के नाते इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है।

हे चिड़ियों के राजा, अगर यह आपका खाना है भी तो भी आप मुझसे इसके बदले में जो कुछ और जितना खाना चाहें ले लीजिये मैं आपको तुरन्त दे दूँगा पर यह नन्हॉ सा जीव जो अब मेरी शरण में है मैं इसको आपको नहीं दूँगा।"

बाज़ बोला — "महाराज, वैसे तो मैं केवल अपना पकड़ा शिकार ही खाता हूँ दूसरे का दिया हुआ खाना नहीं। इसको मैंने पकड़ा है इसलिये मुझे तो यही चाहिये था पर अगर आप इसकी रक्षा पर इतना ज़ोर दे रहे हैं तो फिर मुझ भूखे की भूख मिटाने का कोई इन्तजाम कीजिये। बताइये आप क्या देंगे मुझे?"

राजा हॅस कर बोले — "पक्षीराज, मैं राजा हूँ। मेरे पास लाखों जानवर हैं। जो भी जानवर आपको खाने में पसन्द हो आप वह चुन लें मैं इस कबूतर के बराबर उसका मॉस आपको खाने के लिये दे दूँगा।"

बाज़ हॅस कर बोला — "राजन, मैं अपने खाने के लिये ऐसे किसी दूसरे जानवर की जान नहीं ले सकता। अच्छा तो यही होगा कि आप मुझे मेरा शिकार वापस कर दीजिये।"

राजा कुछ सोच में पड़ गये। फिर उन्होंने सोचा यह कबूतर है ही कितना बड़ा। अगर बाज़ कोई और जानवर नहीं ले रहा तो

इसके बराबर तो मैं अपना मॉस भी दे सकता हूँ। यही ठीक रहेगा। इस चिड़ियों के राजा को मैं अपना मॉस दे कर सन्तुष्ट करता हूँ।

सो वह बोले — "ठीक है। अगर आप अपने खाने के लिये किसी दूसरे जानवर को नहीं मारना चाहते तो न मारें पर इसके बदले में मैं आपको अपना मॉस तो दे ही सकता हूँ? आप मेरा मॉस खा कर अपनी भूख शान्त करें।"

बाज़ कुछ ना नुकुर करते हुए बोला — "हालॉकि मुझे आपका मॉस भी लेना तो नहीं चाहिये पर जब आपने मेरा शिकार न देने की कसम खायी है तो उसके बदले में मुझे कुछ न कुछ तो लेना ही पड़ेगा। मैं आपका मॉस लेने के लिये तैयार हूँ। पर मेरी दो शर्तें हैं।"

राजा खुशी से बोले — "मुझे बहुत खुशी है कि मैं इस कबूतर के किसी काम आया। पक्षीराज आप अपनी शर्तें बताइये मुझे आपकी सब शर्तें मंजूर हैं।"

बाज़ बोला — "राजन, पहली शर्त तो यह है कि जब आप मुझे अपना मॉस देंगे तो आपका पूरा परिवार यहॉ होना चाहिये।

मेरी दूसरी शर्त यह है कि जब आप अपना मॉस दे रहे होंगे तो आपकी किसी भी ऑख से एक भी ऑसू नहीं गिरना चाहिये। और अगर गिरा तो मैं वह मॉस अपने खाने के लिये नहीं लूँगा।"

राजा बोला — "मुझे मंजूर है।"

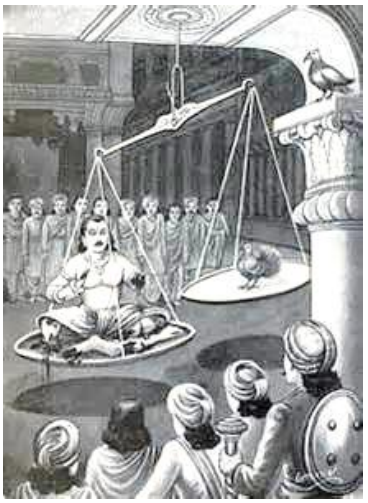

फिर उसने अपने नौकरों से कहा कि वह उनकी रानी को वहॉ ले कर आयें और एक तराजू लाने का हुक्म दिया। दोनों को तुरन्त ही वहॉ ले आया गया। राजा ने तराजू के एक पलड़े पर कबूतर को बिठाया और दूसरे पलड़े पर अपना मॉस काट कर रखना शुरू किया।

उन्होंने पहले अपनी दॉयी जॉघ से मॉस काट कर रखना शुरू किया।[5]

पर अजीब सी बात थी कि राजा जितना मॉस अपने शरीर से काट कर रखते जाते थे कबूतर वाला पलड़ा हमेशा ही भारी रहता। उन्होंने करीब करीब अपनी सारी दॉयी टॉग काट कर तराजू पर रख दी पर वह कबूतर अभी भी भारी था।

इसी समय उनकी बॉयी ऑख से एक बूँद ऑसू गिर पड़ा।

बाज़ ने यह देख लिया तो बोला — "राजन, तकलीफ से दिया गया खाना मैं स्वीकार नहीं कर सकता। तुम्हारी ऑख से गिरा हुआ यह एक ऑसू यह बता रहा है कि मुझे खाना देते समय तुम खुश नहीं हो इसलिये मेरा शिकार मुझे वापस कर दो।"

[5] In Hindu religion right part of the body is always considered auspicious that is why in all auspicious ceremonies every action is done with right hand or right part of the body. For the same reason, because the King was donating something, and donation is the auspicious ceremony, that is why he was using his right portion of his body first.

राजा मुस्कुरा कर बोले — "देखो चिड़ियों के राजा, यह ऑसू दुख का नहीं है बल्कि मेरे बॉये शरीर की खुशी का है कि अब वह भी इस नेक काम में इस्तेमाल किया जायेगा।

अगर केवल मेरे शरीर के दॉये हिस्से से ही आपकी जरूरत पूरी हो जाती तो मेरा बॉया हिस्सा आपकी सेवा न कर पाता। इसलिये मेरी बॉयी ऑख से गिरा यह ऑसू दुख का नहीं बल्कि खुशी का है।"

बाज़ इस जवाब से सन्तुष्ट हो गया और राजा ने फिर तराजू पर अपने शरीर का और मॉस रखना शुरू कर दिया।

अपनी दोनों टॉगें, दोनों बॉहें काटने के बावजूद जब राजा बाज़ को कबूतर के बराबर मॉस न दे सके तो वह कबूतर के बराबर मॉस देने के लिये खुद ही तराजू के पलड़े पर बैठ गये।

जैसे ही वह तराजू पर बैठे तो आसमान से फूलों की बारिश होने लगी और वह कबूतर और बाज़ दोनों गायब हो गये और उनकी जगह अग्नि देव और देवराज इन्द्र उनको आशीर्वाद देने के लिये वहॉ खड़े थे।

राजा शिबि को वे दोनों बहुत से वरदान दे कर अपने अपने लोक को चले गये। राजा शिबि भारत के इतिहास में अपनी तरह के अकेले ही राजा हुए हैं।

2 सोलोमन के न्याय की कहानियॉ[6]

राजा शिबि की बहुत पुरानी कहानी के बाद हमारे पास अब सबसे पुरानी कहानियों से में एक कहानी राजा सोलोमन की हैं। तो पढ़ो अब राजा सोलोमन के न्याय की कहानियॉ।

राजा सोलोमन का समय आज से करीब तीन हजार साल पुराना है। राजा सोलोमन जूडा या इजरायल देश का एक राजा था। उसकी बुद्धिमानी और न्याय के बारे में बहुत कहानियॉ मशहूर हैं।

कहते हैं कि बचपन में जब उसके भगवान जाहवेह[7] ने उससे कुछ मॉगने के लिये कहा तो सब कुछ छोड़ कर उसने उससे केवल अक्लमन्दी मॉगी।

इस बात से खुश हो कर भगवान जाहवेह ने उसको वह सब तो दिया ही जो उसने मॉगा था और उसको वह सब भी दे दिया जो उसने नहीं मॉगा था।

ये कहानियॉ इथियोपिया की एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक कैब्रा नैगास्ट[8] से ली गयी हैं।

[6] Stories of King Solomon – the justice tales of the King Solomon as given in Kebra Negast. Read about Solomon in Hindi in “Raja Solomon” by Sushma Gupta, Delhi, Prabhat Prakashan. 2022.

[7] Jahweh or Yahweh – the God of Jews or Israel

[8] Kebra Negast is a very important book of Ethiopia. Kebra Negast means the Glory of Kings.

कहते हैं कि इथियोपिया की रानी मकेडा[9] राजा सोलोमन की अक्लमन्दी और न्याय की कहानियॉ सुन कर ही उससे मिलने गयी थी। वहॉ उसने उसकी अक्लमन्दी की परीक्षा ली और उसका न्याय भी देखा और उससे वह बहुत प्रभावित हुई।

जिस सिंहासन पर बैठ कर वह न्याय करता था वह इस संसार का अद्वितीय सिंहासन था। उसका वर्णन उस कैब्रा नैगास्ट में कुछ इस प्रकार से दिया हुआ है

"इस राजा का सिंहासन संसार के दूसरे सिंहासनों से कहीं शानदार था। वह हाथी दॉत के काम से युक्त संगर्मरमर का बना हुआ था। उसमें अनगिनत लाल और पन्ने जड़े हुए थे और उसमें सोने के फूल और मोतियों की जाली बनायी गयी थी।

उसके हत्थे सोने के थे और उसका पैर रखने का स्टूल नीलम का था। उस सिंहासन के दोनों तरफ सोने का एक एक शेर और एक एक चील बने हुए थे।

क्योंकि ऐसा माना जाता है कि जाहवेह के लोक और इस पृथ्वी लोक के बीच में छह लोक थे इसी लिये सोलोमन के सिंहासन की छह सीढ़ियॉ थीं।

[9] Queen Maqeda or Makeda – she was known as the Queen of Sheba too. Read about her meeting with King Solomon in the book "Sheba Ki Rani Maqeda" by Sushma Gupta in Hindi language. Delhi: Prabhat Prakashan. 2018.

पहली सीढ़ी पर लोहे का एक शेर और एक बैल था। दूसरी सीढ़ी पर लैड[10] के बने एक चीता और बकरा थे। तीसरी सीढ़ी पर पीतल के बने हुए एक भेड़िया और मेमना थे।

चौथी सीढ़ी पर कॉसे के बने एक भालू और एक बारहसिंगा थे। पॉचवीं सीढ़ी पर तॉबे के बने एक भैंसा और एक गधा थे और छठी सीढ़ी पर चॉदी के बने चील और फाख्ता[11] थे।

जब राजा अपने हाथ में कानून की किताब और पन्ने का बना राज दंड ले कर चढ़ता था तो जिस जिस सीढ़ी पर वह अपना पैर रखता था उस उस सीढ़ी पर बने जानवर अपनी अपनी बोली बोलते थे।

जब वह उस सिंहासन पर बैठता था तो उसके चारों ओर सोने की लताएँ कई प्रकार की सुगन्ध बिखेरती हुई उसके चारों ओर लिपट जाती थीं। उसके सिर के ऊपर फूलों का बना हुआ एक छत्र था।"

ऐसे सिंहासन पर बैठ कर वह न्याय करता था। उसके मुकुट में भी साठ भिन्न भिन्न प्रकार के नीले हरे पीले रंगों के रत्न जड़े हुए थे।

[10] Lead – a kind of metal
[11] Hawk and Dove birds

1 राजा सोलोमन के न्याय की पहली कहानी

राजा सोलोमन के न्याय की यह पहली कहानी उस समय की है जब वह केवल सात साल का था। उस समय वह अपने पिता डेविड के पास उसके लोगों के झगड़े सुनने और उनके फैसले करने के समय बैठा रहता था।

एक दिन राजा डेविड के दरबार में दो आदमी आये और उनमें से एक ने कहा — "राजा डेविड, मैंने इस आदमी से जैतून का एक बाग[12] खरीदा था। उसके एक पेड़ की जड़ खोदते हुए मुझे वहाँ सोना मिला।

मैं इसके पास गया और कहा कि भाई, तुम अपना खजाना ले लो। यह खजाना तो तुम्हारा है क्योंकि यह खजाना तो मैंने तुमसे इस बाग के साथ खरीदा नहीं था।

पर यह कहता है कि "मैं इस सोने के विषय में कुछ नहीं जानता। मैंने तो तुमको इस बाग के साथ जो कुछ भी था सब बेच दिया। इसलिये अब इसकी किसी भी चीज़ पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।

राजा साहब, अब आप ही इस बात का फैसला करें कि ऐसे मामले में मुझे क्या करना चाहिये।"

राजा डेविड ने दूसरे आदमी से पूछा — "भाई, तुम अपना खजाना क्यों नहीं लेते?"

[12] Garden of Olives. See the picture of olive fruits above.

दूसरा आदमी बोला — "राजा साहब, वह खजाना मेरा है ही नहीं और मैं यह भी नहीं जानता कि उसे किसे दूँ क्योंकि यह बाग मैंने जिस आदमी से खरीदा था वह कई साल हुए मर गया और अब उसका कोई वारिस भी नहीं है।"

इस पर राजा डेविड बोला — "तब तुम दोनों बॉट लो इस सोने को।"

दोनों आदमी एक आवाज में बोले — "हम ऐसा कैसे कर सकते हैं जब यह सोना हमारा है ही नहीं।"

सारा दरबार भरा हुआ था। सभी राजा के फैसले का इन्तजार कर रहे थे। तब डेविड ने अपने पैरों के पास बैठे हुए अपने इस सात साल के बेटे की तरफ देखा और पूछा — "बेटे, यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम क्या करते?"

बालक सोलोमन ने उन दोनों आदमियों की ओर देखा और पहले आदमी से पूछा — "तुम्हारे कोई बेटा है?"

वह आदमी बोला — "मेरे तो केवल एक बेटी है।"

तब उसने दूसरे आदमी से पूछा — "क्या तुम्हारे कोई बेटा है?"

दूसरा आदमी बोला — "जी मालिक, मेरे एक बेटा है।"

तब सोलोमन ने अपने पिता से कहा — "क्यों न इन दोनों के बच्चों की शादी कर दी जाये और वे ही इस खजाने को इस्तेमाल करें।" और फिर ऐसा ही हुआ।

2 राजा सोलोमन के न्याय की दूसरी कहानी

राजा सोलोमन के न्याय की यह दूसरी कहानी शीबा की रानी के उससे मिलने के बाद की है। उस समय वह भी उसके दरबार में बैठी हुई थी।

एक बार तीन भाई सोलोमन के दरबार में आये जिनके चेहरे से ही एक दूसरे के लिये नफरत छलकी पड़ रही थी।

सबसे बड़ा भाई बोला — "हमने आज ही अपने पिता को दफनाया है। जब वह मर रहे थे तो उन्होंने यह कहा था कि जो कुछ मेरा है वह अबसे तुम्हारा है। परन्तु तुम लोग कहीं झगड़ा न करो इसलिये मैंने उसको तीन हिस्सों में बॉट दिया है।

यह बक्सा देखो, इसके तीन हिस्से हैं। इसमें से सबसे ऊपर वाला हिस्सा मेरे बड़े बेटे के लिये है, बीच वाला हिस्सा मेरे बीच वाले बेटे के लिये और सबसे नीचे वाला हिस्सा मेरे सबसे छोटे बेटे के लिये है। इतना कहने के बाद वह मर गये।

उसके बाद जब हमने उस बक्से को खोला तो हमने देखा कि उसका सबसे ऊपर वाला हिस्से सोने के गोल टुकड़ों से भरा है।

उसका बीच वाला हिस्सा खाना, कपड़े और हड्डियों के टुकड़ों से भरा है और उसके सबसे नीचे वाले खाने में लकड़ी के टुकड़े रखे थे।

अब क्योंकि मेरे ही खाने में रखने योग्य कुछ था तो सबसे बड़ा होने के नाते मैं यह समझता हूँ कि वह अपनी सारी सम्पत्ति मुझे ही दे गये थे।"

जब वह यह सब कुछ कह रहा था तो उसके दूसरे भाई मुट्ठियाँ भींचे गुस्से से फुंकार रहे थे।

सोलोमन बोला — "शान्ति ओ छोटे दिमाग वाले लोगों, शान्ति। तुम्हारे पिता के इरादे तो नीले आसमान के समान साफ हैं। सोना उनकी सम्पत्ति का सूचक है, हड्डी और कपड़े उनके पशुओं और दासों के सूचक हैं, और लकड़ी और मिट्टी उनके घर और बागीचे के सूचक हैं। इसलिये तुम लोग उसको इसी प्रकार बाँट लो।"

यह सुन कर तीनों के चेहरे की रंगत बदल गयी और तीनों स्नेह का भाव लिये खुशी खुशी वहाँ से चले गये।

3 राजा सोलोमन के न्याय की तीसरी कहानी

राजा सोलोमन के न्याय की यह तीसरी कहानी भी शीबा की रानी के उससे मिलने के बाद की है। वह उस समय भी उसके दरबार में ही बैठी हुई थी।

सोलामन के दरबार में दो स्त्रियॉ आयीं। दोनों ही वेश्याएँ थीं और अपने हुनर में होशियार थीं।

उनमें से एक ने रोते हुए कहा — "महाराज, हम दोनों एक ही कमरे में एक साथ रहते हैं। तीन दिन हुए हम दोनों के एक ही समय लड़का पैदा हुआ।

आज सुबह जब मैं जागी और अपने बच्चे को मैंने दूध पिलाने के लिये उठाया तो मुझे लगा कि मेरे हाथों में बच्चा नहीं बल्कि एक बोझ है

और जब मैंने उसे पास से देखा तो मैंने देखा कि वह मेरा नहीं बल्कि उसका बच्चा था क्योंकि रात में ही उसने मेरे ज़िन्दा बच्चे से अपना मरा हुआ बच्चा बदल दिया था।"

सोलोमन ने दूसरी स्त्री से पूछा — "तुम अपनी सफाई में क्या कहना चाहती हो?"

दूसरी स्त्री बोली — "यह काम मेरा नहीं है, इसी का है। बच्चा इसी ने बदला है।" और उसका दुख उसके चेहरे पर झलक आया।

वहॉ बैठे सभी लोगों को यह पहेली कुछ अनसुलझती सी लगी। सोलोमन ने अपनी बड़ी बड़ी ऑखें एक पल के लिये बन्द कीं और फिर अपने पहरेदार से बोला — "जाओ और दोनों बच्चों को यहॉ ले आओ, मरे हुए को भी और ज़िन्दा को भी।"

पहरेदार उन दोनों बच्चों को वहॉ ले आया। सोलोमन ने पहरेदार से कहा — "अब अपनी तलवार खींचो और दोनों के दो

दो टुकड़े कर दो ताकि दोनों स्त्रियों को आधा मरा बच्चा और आधा ज़िन्दा बच्चा मिल जाये।"

वहाँ बैठे लोगों ने यह सुन कर दाँतों तले उँगली दबा ली। बड़े लोग अपने हाथ मलने लगे। सब लोगों ने अपने अपने मन में इस फैसले को अन्याय और मूर्खता भरा फैसला समझा।

लेकिन जैसे ही उस पहरेदार ने उन बच्चों के टुकड़े करने के लिये अपनी तलवार उठायी और वह पहले जीवित बच्चे के दो टुकड़े करने ही वाला था तो पहली वाली स्त्री ने एक ज़ोर की चीख मार कर उसका हाथ पकड़ लिया।

वह सिसकती हुई राजा सोलोमन से बोली — "महाराज आप उसको मेरा बच्चा दे दीजिये। उस छोटे से बच्चे की चिता जलाने से तो अच्छा है कि मैं उसको उस दूसरी की बाँहों में खेलते देखती रहूँगी।"

इस पर सोलोमन बोला — "यह जीवित बच्चा तुम्हारा है, यह तुम्हारे इन स्वाभाविक आँसुओं से लग रहा है इसे तुम ले जाओ।"

और कड़कती हुई आवाज में वह दूसरी स्त्री से बोला — "तुम्हारे अन्दर द्वेष की भावना है। तुमने अपना बच्चा तो खो ही दिया और दूसरे का बच्चा भी खोने जा रही हो।

मेरे शहर से निकल जाओ तुम, और यदि फिर कभी तुम यहाँ आयीं तो इस शहर की चिड़ियें तुम्हारी आँखें नोच नोच कर खा जायेंगी।"

3 अरेबियन नाइट्स की कहानी

सोलोमन के समय के बाद आता है अरेबियन नाइट्स[13] का समय। यह कहानी अरेबियन नाइट्स से ली गयी है। बहुत सारे लोगों ने इन कहानियों को करीब करीब सन् **700** और **800** एडी के बीच का लिखा हुआ बताया है।

ये कहानियॉ अपने नाम के अनुसार एक हजार एक होनी चाहिये पर ये सारी कहानियॉ एक साथ कहीं मिलती नहीं हैं। इसकी कुछ कहानियॉ बहुत मशहूर और लोकप्रिय हैं जैसे अलादीन का चिराग, अलीबाबा चालीस चोर, सिन्दबाद की समुद्री यात्राएँ आदि।

और ये कहानियॉ बच्चे बिना जाने कि ये कहानियॉ अरेबियन नाइट्स की कहानियॉ हैं बड़े शौक से पढ़ते और सुनते हैं।

इस किताब में बहुत तरीके की कहानियॉ हैं जानवरों की, प्रेम की, वफा की, बेवफाई की, जिन्नों की, जादूगरों की। आज हम तुम्हारे लिये यहॉ इन कहानियों में से एक ऐसी कहानी ले कर आये हैं जो न्याय की कहानी है। लो इसे पढ़ो और इसका आनन्द लो।

[13] Arabian Nights is the short form of the “The Book of a Thousand and a Night”. One can read its many stories in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

अली ख्वाजा और बगदाद का सौदागर[14]

एक बार की बात है कि बगदाद में ख़लीफा हारूँ अल रशीद राज करते थे। उनके राज्य में अली ख्वाजा नाम का एक सौदागर रहता था। उसके पास बहुत कम पैसे थे जिनसे वह अपना गुजारा भी मुश्किल से कर पाता था।

एक दिन उसने एक ही सपना लगातार तीन रात तक देखा। उसने सपने में देखा कि एक शेख़ उससे कह रहा था कि "तुम यहाँ क्या कर रहे हो तुम हज करने[15] के लिये मक्का जाओ।"

यह सपना देख कर वह बहुत डर गया और अपना सब कुछ बेच कर मक्का चला गया। उसने अपना घर किराये पर उठा दिया और मक्का जाने वाले एक कारवाँ के साथ हो लिया।

उसने सफर के लिये अपनी जरूरत से एक हजार सिक्के ज़्यादा ले लिये। बाकी बचे सिक्कों को उसने मिट्टी के एक बर्तन में रखा और उसे स्पैरो औलिव[16] से भर दिया।

उस बर्तन के मुँह पर उसने एक कपड़ा बाँध दिया और उसको अपने एक बहुत पुराने सौदागर दोस्त के पास ले गया और उस

---

[14] You can read this story in English at the Web Site :
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-4/85-khwaajaa.htm .
There are many other Arabian Nights stories also to read.
A similar story is by Birbal also – read it in its Akbar Birbal Stories section at the same Web site.

[15] Hajj is a piligrimage which normally all Muslims wish to take at least once in their lifetime. In this pilgrimage they go to Mecca which is in Saudi Arabia.

[16] Sparrow olive – a kind of olive fruit. See the picture of olive fruit above.

बर्तन को उसे देते हुए बोला — "दोस्त, मैं मक्का जा रहा हूँ, हज के लिये। मैं औलिव से भरा यह बर्तन लाया हूँ। जब तक मैं वापस आता हूँ इसे तुम रख लो।"

वह सौदागर उठा और उसको अपने भंडारे की चाभी देते हुए बोला — "लो, यह चाभी लो, यह भंडारघर खोलो और इस बर्तन को जहाँ चाहे वहाँ रख दो। जब तुम वापस आओ तो इसको तुम फिर वहीं से वापस ले सकते हो जहाँ तुमने इसे रखा था।"

अली ने अपने दोस्त से चाभी ली, भंडारघर का दरवाजा खोला और उस बर्तन को एक जगह पर रख कर भंडारघर का ताला लगा कर चाभी उस सौदागर को वापस कर दी। और वह मक्का चला गया।

मक्का जा कर उसने वहाँ होने वाली सारी रस्में पूरी की और फिर अपना सामान बेचने के लिये वहाँ एक दूकान लगा ली।

अब कुछ ऐसा हुआ कि दो सौदागर उसकी दूकान के सामने से गुजरे और उसकी दूकान के सामान को उसकी सुन्दरता और अच्छे किस्म की वजह से उन्होंने बहुत पसन्द किया।

उसको देख कर उनमें से एक ने दूसरे से कहा — "इस आदमी को इस सामान की कैरो[17] में अच्छी कीमत मिल सकती है।"

[17] Cairo – the capital of Egypt and the largest city in the Middle-East and Africa. It is located near the Nile Delta and was founded in CE 969 – nicknamed as "the city of a thousand minarets" for its preponderance of Islamic architecture.

यह सुन कर उसने अपना सामान बेचने के लिये कैरो जाने का विचार किया।

उसने उस समय बगदाद वापस जाने का इरादा बिल्कुल छोड़ दिया और एक कारवॉ के साथ कैरो चल दिया ताकि वह वहॉ अपना सामान बेच सके और उसको बेच कर अच्छा पैसा बना सके। वह वहॉ एक महीना रहा और वहॉ से फिर वह जेरुसलेम[18] चला गया।

जेरुसलेम में उसने बानू इजरायल[19] के मन्दिर में प्रार्थना की और फिर डैमैस्कस[20] आ गया। डैमैस्कस उसको इतना अच्छा लगा कि उसने बगदाद जाने का विचार बिल्कुल ही छोड़ दिया और वह वहीं रह गया।

वह कुछ और जगह भी गया पर फिर सात साल बाद बगदाद लौटा।

यहॉ उस बगदाद वाले सौदागर ने सात साल तक अली के बारे में कुछ भी नहीं सोचा। पर एक दिन शाम को खाना खाते हुए उसकी पत्नी ने औलिव के बारे में कुछ बात की तो वह बोला — "सात साल पहले जब अली मक्का जा रहा था तो वह स्पैरो औलिव का एक बर्तन यहॉ छोड़ गया था।

[18] Jerusalem is in Israel. It is located on a plateau in the Judean Mountains between the Mediterranean and the Dead Sea, is one of the oldest cities in the world. It is considered holy to the three major Abrahamic religions—Judaism, Christianity and Islam. Israelis and Palestinians both claim Jerusalem as their capital,

[19] Banoo Israel Temple

[20] Damascus (Damishk in Hindi) is a big city in Syria, nicknamed as "The City of Jasmine"

कौन जाने अब अली कहॉ है। हाल में ही मक्का से आया एक आदमी मुझे मिला था वह कह रहा था कि वह मक्का छोड़ कर मिश्र[21] चला गया है। अल्लाह ही जानता है कि वह ज़िन्दा भी है कि नहीं।

कोई बात नहीं, मैं उसके बर्तन में से कुछ औलिव निकाल लाता हूॅ हम लोग वही खा लेंगे। मुझे एक प्लेट और एक लैम्प दे दो।"

उसकी पत्नी बहुत ईमानदार स्त्री थी। उसने अपने पति से कहा — "वह अली की अमानत है हमको उसे नहीं छूना चाहिये। हो सकता है कि वह सही सलामत हो और मिश्र से वापस आ जाये और अपना बर्तन मॉगे तब अपने दोस्त के सामने तुम्हारी बड़ी बेइज़्ज़ती होगी।

मैं यह इलजाम अपने सिर नहीं लेना चाहती और इसके अलावा मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि वे अब सात साल बाद वे औलिव खाने लायक भी होंगे या नहीं।"

हालॉकि सौदागर उस समय तो अपनी पत्नी की इस बात पर राजी हो गया फिर भी उसने अपने दिमाग में जो सोच रखा था उस पर वह डटा रहा।

एक दिन अपनी जिद की वजह से वह अपने भंडारघर की तरफ गया तो वहॉ उसको अपनी पत्नी दिखायी दे गयी।

[21] Egypt

पत्नी ने अपने पति से फिर कहा — "देखो मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं इस बुरे काम में तुम्हारी साथी नहीं हूँ। और सच तो यह है कि अगर तुम यह बुरा काम करोगे तो जरूर ही तुम्हारे साथ कुछ बुरा होगा।"

उसने पत्नी की बात नहीं सुनी और वह भंडारघर में अन्दर चला गया। उसने अली का रखा बर्तन खोला तो देखा कि उसमें रखे तो सब औलिव खराब हो गये थे।

सो उसने वह बर्तन खराब औलिव को एक दूसरे बर्तन में पलटने के लिये पलटा तो खराब औलिव के साथ साथ उसके नीचे रखी अशर्फियॉ[22] भी उस बर्तन में गिर पड़ीं। उनको देख कर वह ललचा गया और उसने पूरा का पूरा बर्तन ही पलट डाला।

उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उन खराब औलिव के नीचे तो सारी की सारी अशर्फियॉ ही भरी थीं। औलिव तो उसमे केवल थोड़े से थे उनको ढकने के लिये। उसने वे सारी अशर्फियॉ और औलिव फिर से उसी बर्तन में भर दिये।

उसने उस बर्तन को बन्द किया और अपनी पत्नी से बोला — "तुमने ठीक कहा था। सारे औलिव खराब हो चुके हैं सो मैंने उनको उसी बर्तन में वापस भर दिया।"

[22] Asharfee is the gold coin used as money in those days

बर्तन को उसी जगह रख कर वह वापस आ गया पर वह सो नहीं सका। वह यही सोचता रहा कि वह उन अशर्फियों को कैसे ले सकता था।

अगले दिन उसने उस बर्तन में से सारी अशर्फियॉ निकाल लीं, नये औलिव खरीद कर उनको उस बर्तन में रख कर और बन्द कर के उसी जगह रख दिया जहॉ वह पहले रखा था।

अल्लाह की मेहरबानी से अली उसी महीने के आखीर में बगदाद वापस आ गया और अपने दोस्त से मिलने गया। उसने उससे अपने बर्तन के बारे में पूछा तो वह बोला कि वह तो वहीं रखा है जहॉ वह रख कर गया था।

इतना कह कर उसने अली को अपने भंडारघर की चाभी दे दी। अली वह चाभी ले कर भंडारघर में गया और अपना बर्तन निकाल कर ले आया। उसने चाभी अपने दोस्त को वापस की और अपना बर्तन ले कर अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने अपना बर्तन खोला पर उसमें तो उसकी अशर्फियॉ नहीं थीं। बल्कि उसमें तो नये औलिव रखे थे। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ और वापस अपने दोस्त के घर पहुॅचा।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "अल्लाह की कसम, जब मैं मक्का गया था तब मैं इस बर्तन में अशर्फियॉ छोड़ गया था पर अब वे यहॉ नहीं हैं। क्या तुम मुझे बता सकते हो कि उनका क्या हुआ?

अगर तुमने उनको इस्तेमाल कर लिया है तो कोई बात नहीं तुम जब भी उनको वापस कर सको तब वापस कर देना पर मुझे यह तो बता दो कि उनका हुआ क्या।"

सौदागर बोला — "तुम खुद ही वह बर्तन वहॉ रख कर गये थे और तुमने खुद ही उसको वहॉ से उठाया। मुझे नहीं मालूम कि उस बर्तन में औलिव के अलावा कुछ और भी था। वह तो वहॉ वैसे ही रखा था जैसा तुम रख कर गये थे फिर भी तुम मुझ पर चोरी का इलजाम लगा रहे हो।

पर जब तुम गये थे तब तो तुमने उसमें किसी पैसे का जिक्र किया नहीं था बल्कि कहा था कि उसमें औलिव रखे हैं सो वे तुमको मिल गये होंगे।"

अली ने उसकी बहुत मिन्नतें कीं कि उसके पास वही एक हजार अशर्फियॉ थीं वह उनको उसको मेहरबानी कर के वापस दे दे पर सौदागर तो इस बात पर बहुत गुस्सा हो गया और उसको फिर कभी अपने घर न आने के लिये कहा।

दोनों की कहा सुनी सुन कर पड़ोसियों को भी पता चल गया कि क्या हुआ था। और उसके बाद तो यह बात सारे बगदाद में फैल गयी। जब अली को अपना पैसा वापस नहीं मिला तो वह काज़ी[23] के पास गया और उसको अपना मामला समझाया।

[23] Kaazee in Muslims is the religious leader who performs marriages in the society and acts as a judge too.

काज़ी ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा आदमी है जो तुम्हारी तरफ से बोल सके?"

अली बोला — "नहीं, मैंने यह बात किसी को नहीं बतायी। अल्लाह ही मेरा गवाह है। यह सौदागर मेरा दोस्त था और मैं इस पर भरोसा करता था।"

काज़ी बोला — "ठीक है मैं उस सौदागर को बुलवाता हूँ और उससे कसम खाने को कहता हूँ।"

काज़ी ने सौदागर को बुलाया। वह सौदागर आया और उसने काज़ी के सामने कसम खायी कि उसको अली की अशर्फियों के बारे में कुछ पता नहीं है।

यह सुन कर काज़ी ने उसको बेगुनाह बता दिया और अपनी कचहरी से छोड़ दिया। अली बेचारा दुखी हो कर घर चला गया।

अगले दिन अली ने अपनी सब बात एक कागज पर लिखी और जब खलीफा शुक्रवार की नमाज पढ़ने के लिये मस्जिद जा रहा था तो उसके पैरों पर गिर कर उसने वह कागज उसको थमा दिया। खलीफा ने दोनों को अगले दिन अपने दरबार में आने के लिये कहा।

उसी रात खलीफा अपने वज़ीर[24] जाफर और एक और आदमी मसरूर के साथ शहर में घूम रहा था तो वह एक बाजार के पास से

[24] Vazeer means Chief Minister – so he was taking a round of his city with his Minister Jaafar and one more man Masaroor.

गुजरा। वहॉ उसने चॉदनी में दस बारह लड़कों के खेलने का शोर सुना।

उनमें से एक लड़का कह रहा था — "चलो आज काज़ी का खेल खेलते हैं। मै जज बनता हूँ, तुममें से एक अली बन जाओ और कोई दूसरा वह सौदागर बन जाये जिसके पास उसने अपना पैसा रखवाया था।"

यह सुन कर खलीफा यह देखने के लिये वहीं रुक गया कि देखूँ ये बच्चे यह खेल कैसे खेलते हैं। फिर उसने सोचा कि "अरे, इस घटना के बारे में तो शहर के बच्चे भी जानते हैं।"

उन बच्चों में बने जज ने अली से पूछा — "तुम्हारा इस सौदागर से क्या झगड़ा है?"

अली ने उसको अपना मामला समझाया तो जज ने सौदागर से पूछा — "तुमको इस बारे में क्या कहना है? और तुमने उसकी अशर्फियॉ वापस क्यों नहीं कीं?"

इस सौदागर बने बच्चे ने भी असली सौदागर की तरह से कहा कि उसको अली की अशर्फियों के बारे में कुछ नहीं मालूम।

इस पर जज बोला — "मैं औलिव का वह बर्तन देखना चाहूँगा जो अली ने तुमको दिया था।"

उसके बाद उसने अली से कहा — "जाओ और वह बर्तन ले कर आओ जो तुमने अली के पास रखा था।"

अली तुरन्त ही वह बर्तन ले आया।

जज फिर अली से बोला — "इस बर्तन को देखो और मुझे बताओ कि क्या यह वही बर्तन है जो तुमने इस सौदागर के पास रखा था?"

"जी हॉ सरकार।"

जज बोला — "अब तुम अपना बर्तन खोलो और उसमें रखी चीज़ें ले कर आओ ताकि मैं यह देख सकूँ कि वे अशर्फी और औलिव कैसे रखे थे।"

अली बना बच्चा उस बर्तन में रखी चीज़ें ले कर आया तो जज ने उसमें से एक औलिव निकाल कर चखा और बोला — "यह कैसे हुआ कि इस औलिव का स्वाद बिल्कुल ताजे औलिव जैसा है और इनकी शक्ल भी इतनी सुन्दर है। सात साल के बाद तो ये सारे औलिव खराब हो जाने चाहिये थे।"

फिर उसने अपने नौकर से कहा — "जाओ, और जा कर दो औलिव के सौदागरों को ले कर आओ जो मुझे इन औलिव के बारे में बता सकें।" नौकर तुरन्त ही दो औलिव के सौदागरों को काज़ी के सामने ले आया।

जज ने उन सौदागरों से पूछा — "क्या तुम लोग औलिव के सौदागर हो?"

"जी हॉ। हम यह धन्धा पीढ़ियों से करते चले आ रहे हैं।" सौदागरों ने जवाब दिया।

जज ने उनसे फिर पूछा — "अच्छा तो मुझे यह बताओ कि औलिव कितने समय तक खाने के लायक ताजा रखे जा सकते हैं?"

वे बोले — "अगर उनको ठीक से रखा जाये तो तीसरे साल में उनका रंग बदलने लगता है और फिर वे खाने लायक नहीं रहते। असल में उस समय वे फेंक देने चाहिये।"

जज बोला — "ठीक है। अच्छा इन औलिव को देखो और यह बताओ कि ये औलिव कितने पुराने हैं।"

उन सौदागरों ने उन औलिव को देखा और बोले — "ये औलिव तो बहुत ही अच्छे दिखायी दे रहे हैं।"

जज बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो। क्योंकि अली ने औलिव का यह बर्तन सात साल पहले जब वह मक्का जा रहा था तब अपने इस सौदागर दोस्त के पास रखा था।"

सौदागर बोले — "आप जो चाहे कहें पर ये औलिव तो इसी साल के पैदा हुए हैं।"

उसके बाद जज ने अली के दोस्त सौदागर से उन फलों को चखने के लिये कहा तो उसने भी उनको चख कर यही कहा कि वे फल इसी साल के हैं।

इस पर जज बोला — "इसका मतलब यह है कि तुम झूठ बोल रहे थे। तुमको सजा मिलनी ही चाहिये।"

जज ने ताली बजायी और उस सौदागर को फॉसी लगाने वालों के हवाले कर दिया।

खलीफा उस बच्चे को देख कर बहुत खुश हुआ जो जज बना हुआ था। कितने अच्छे तरीके से उसने सौदागर का किस्सा निबटा दिया था।

उसने अपने वज़ीर जाफर से कहा — "इस लड़के को कल हमारे दरबार में पेश करो। यह लड़का कल हमारे दरबार में असली जज बनेगा।

और हॉ देखो असली काज़ी को भी बुलाना ताकि वह भी इस लड़के से सीख सके कि न्याय कैसे किया जाता है। अली से उसका बर्तन लाने के लिये कहना और दो औलिव के सौदागरों को भी बुला कर रखना।"

जब अगली सुबह वज़ीर उस जज बने लड़के को लेने के लिये गया तो स्कूल के हैडमास्टर ने कहा कि सारे लड़के तो घर चले गये हैं यहॉ तो अब कोई नहीं है।

किसी तरह वज़ीर ने उस लड़के के घर का पता मालूम किया और वह उसको लेने उसके घर जा पहुँचा।

लड़के की मॉ यह सुन कर बहुत परेशान हुई कि उसके बच्चे को खलीफा ने बुलाया है पर वज़ीर ने उसको तसल्ली दी कि वह अपने बेटे के बारे में चिन्ता न करे उसका बेटा जल्दी ही घर वापस आ जायेगा। हो सकता है कि उसको कुछ इनाम भी मिल जाये।

सो सब लोग खलीफा के दरबार में इकट्ठा हुए। खलीफा ने अली और उसके दोस्त सौदागर दोनों को अपनी अपनी बात उस बच्चे जज के सामने कहने के लिये कहा।

जैसे ही सौदागर कसम खाने को तैयार हुआ कि बच्चे जज ने उसे रोक दिया और बोला — "आप तब तक कसम न खायें जब तक आपसे कसम खाने के लिये कहा न जाये। पहले वह बर्तन दरबार में पेश किया जाये।"

अली वह बर्तन ले लाया। बच्चे जज ने उसे खोला और उसमें से एक औलिव चखा और उसमें कुछ उन दो औलिव के सौदागरों को दे कर कहा कि वे उनके ताजेपन के बारे में बतायें। वे बोले कि वे औलिव इसी साल की फसल के हैं।

बच्चा जज बोला — "मुझे लगता है कि तुम भूल कर रहे हो सौदागरों। अली ने यह बर्तन इस सौदागर के घर सात साल पहले रखा था तो ये औलिव इस साल की फसल के कैसे हो सकते हैं?"

पर वे बोले — "अगर आपको हमारे ऊपर भरोसा नहीं है तो आप दूसरे सौदागरों से पूछ लें।"

जब अली के दोस्त सौदागर ने देखा कि अब उसके बचने का कोई तरीका नहीं है तो उसने अपनी गलती मान ली कि उसी ने अली की अशर्फियॉ चुरायीं हैं और फिर उस बर्तन को ताजे औलिव से भर दिया है।

यह सुन कर वह बच्चा जज खलीफा से बोला — "कल रात हमने यह पहेली सुलझाने की कोशिश की थी पर इसका फैसला और सजा पूरी तरीके से आप ही के हाथों में है।"

खलीफा ने उस सौदागर से यह पूछा कि उसने वह पैसा कहॉ रखा है और फिर उस पैसे को अली को दे दिया। इसके बाद उसने सौदागर को फॉसी की सजा सुना दी।

खलीफा ने असली काज़ी को उस बच्चा जज से न्याय करना सीखने के लिये कहा। फिर उसने अपने वज़ीर से बच्चे जज को एक हजार अशर्फियॉ देने के लिये कहा और उसको सही सलामत उसके घर वापस भिजवा दिया।

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो खलीफा ने उसको अपना शराब का साथी बना लिया।

4 बीरबल की कहानियॉ

अरेबियन नाइट्स की कहानी के बाद अब हमारे पास आती हैं बीरबल की कुछ कहानियॉ। बीरबल[25] हिन्दुस्तान के मुगल बादशाह अकबर के खास सलाहकार थे। अकबर ने **1560** से **1605** तक दिल्ली से राज किया था।

बीरबल उनके दरबार के नौ रत्नों में से एक थे और वह अकबर को बहुत प्रिय थे। वह बहुत ही हाजिरजवाब थे और बहुत सारी समस्याओं का हल बहुत जल्दी और बड़ी होशियारी से ढूँढ दिया करते थे।

बादशाह के पास जब कोई कठिन समस्या आ जाती या फिर कोई ऐसी समस्या आ जाती जो किसी से न सुलझती तो वह बीरबल की तरफ ही देखा करते थे।

अकबर के उनके लिये इस खास प्रेम के लिये अकबर के सारे दरबारी बीरबल से जलते थे पर बीरबल क्योंकि होशियार थे इस लिये उनके ऊपर इस जलन का कोई असर नहीं पड़ता था।

बीरबल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि दूर दूर के देशों में भी अपनी हाजिरजवाबी और होशियारी के लिये प्रसिद्ध थे। वह न्याय

[25] To read more stories of Birbal visit the Web Site :
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/index-birbal.htm

भी बहुत अच्छा करते थे। उनके न्याय की कुछ कहानियॉ यहॉ दी जाती है।

उनके न्याय करने का तरीका बिल्कुल अलग था जो तुम लोगों को उनकी कहानियॉ पढ़ने पर ही पता चलेगा।

1 बीरबल नाई के अन्याय से बचे[26]

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं कि क्योंकि बीरबल बहुत ही हाजिरजवाब और होशियार थे इसलिये बादशाह अकबर के दरबार के बहुत सारे दरबारी उनसे जला करते थे और हमेशा इस ताक में रहते थे कि किस तरह से उनको नीचा दिखाया जाये।

एक दिन शाही नाई ने जो बीरबल से बहुत ज़्यादा जलता था उनको मारने की एक तरकीब सोची।

जब अगली बार बादशाह ने अपने शाही नाई को अपनी दाढ़ी बनाने के लिये बुलवाया तो उसने बादशाह से कहा — "हुजूर, कल रात मैंने सपने में आपके अब्बा हुजूर[27] को देखा।"

यह सुन कर बादशाह थोड़े से चौकन्ने हुए और उससे उत्सुकता से पूछा — "उन्होंने तुमसे क्या कहा?"

[26] This story is not of injustice done by others, but done by somebody to Birbal only, and how sweetly he saved himself,

[27] Respected father

वह नाई चालाकी से बोला — "हुजूर, उन्होंने मुझसे कहा कि बाकी सब तो यहाँ जन्नत[28] में ठीक है पर मैं एक ऐसे हँसाने वाले की कमी बहुत महसूस करता हूँ जो मुझे हँसा सके।"

बादशाह ने बहुत सोचा बहुत सोचा कि ऐसा आदमी कौन हो सकता है जिसको मैं अपने अब्बा जान के पास उनको हँसाने के लिये भेज दूँ पर वह बीरबल के अलावा किसी और के बारे में सोच ही नहीं सके जो इस काम को अच्छी तरह से कर सकता।

पर यह काम करने के लिये तो मरना जरूरी था। बादशाह यह सोच कर बहुत दुखी हुए कि बीरबल अब उनके पास से चले जायेंगे पर अपने अब्बा जान के बारे में सोचते हुए उन्होंने पक्का इरादा कर लिया कि वह बीरबल को ही उनके पास भेजेंगे।

उन्होंने बीरबल को बुलाया और कहा — "बीरबल मैं सोचता हूँ कि तुम मुझको बहुत प्यार करते हो और तुम मेरे लिये कुछ भी कर सकते हो।"

बीरबल ने बादशाह के इन शब्दों का मतलब समझने की बहुत कोशिश की पर वह कुछ न भाँप सके तो वह बोले — "हाँ हुजूर, करता तो हूँ और यह भी ठीक है कि आपके लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ।"

बादशाह बोले — "तब बीरबल, तुम जन्नत जाओ और मेरे प्यारे अब्बा हुजूर का दिल बहलाओ।"

[28] Jannat means Heaven

बीरबल समझ गये कि उनके किसी दुश्मन ने उनको मारने के लिये यह चाल चली है सो उन्होंने बादशाह से बड़ी नर्मी से कहा — "मैं ऐसा ही करूँगा पर मुझे जन्नत जाने की तैयारी करने के लिये कुछ समय चाहिये।"

बादशाह बोले — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जब तुम हमारे लिये इतना कुछ कर रहे हो तो मैं तुमको वहॉ जाने की तैयारी करने के लिये एक हफ्ता देता हूँ।"

बीरबल घर आ गये। अब वह चिन्ता में पड़ गये कि इस चाल से कैसे बचा जाये।

उन्होंने सोचा कि किसी ने मुझे मारने की इतनी अच्छी योजना बनायी है कि मैं किसी तरह बच ही न सकूँ। बहुत सोचने के बाद उनको एक तरकीब सूझी।

उन्होंने अपने घर के पास एक बड़ा सा गड्ढा खोदा और वहॉ से एक सुरंग खोदी जो उनके घर के एक कमरे में खुलती थी। इतना कर के वह शाही दरबार में गये और बोले — "हुजूर मैं जन्नत जाने के लिये तैयार हूँ। पर मेरी दो शर्तें हैं।"

बादशाह तो यह सुन कर इतने खुश हुए कि भूल ही गये कि बीरबल उनके सामने कुछ शर्तें भी रख सकता था सो उन्होंने पूछा — "वे क्या शर्तें हैं बीरबल? मुझे जल्दी बताओ। मैं उनको पूरा करने की पूरी पूरी कोशिश करूँगा ताकि तुम जल्दी से जल्दी मेरे अब्बा हुजूर के पास जा सको।"

बीरबल बोले — "पहली शर्त तो यह है हुजूर कि मुझे मेरे घर के पास गड़वाया जाये और दूसरी यह कि मुझे ज़िन्दा ही गड़वा दिया जाये ताकि मैं ज़िन्दा ही आपके अब्बा हुजूर के पास उनका दिल बहलाने के लिये पहुँच जाऊँ।"

बादशाह को बीरबल की दोनों बातें ठीक लगी सो वह तुरन्त ही इन दोनों बातों पर राजी हो गये।

शर्त के अनुसार बीरबल अपने घर के पास ज़िन्दा गाड़े गये। जब लोग उनको गाड़ कर चले गये तो वह अपनी खोदी हुई सुरंग से हो कर अपने घर आ गये। वहाँ वे छह महीने तक घर के अन्दर बन्द रहे।

छह महीने बाद वह घर के बाहर निकले और सीधे बादशाह के दरबार पहुँचे और अन्दर जाने की इजाज़त चाही। उस समय उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और सिर के बाल बहुत लम्बे हो गये थे।

उनको देखते ही बादशाह अकबर चिल्लाये — "बीरबल तुम इतने दिन कहाँ रहे?"

बीरबल बोले — "हुजूर, मैं आपके अब्बा हुजूर के साथ जन्नत में था। मैंने उनके साथ बड़ा अच्छा समय गुजारा। वह मेरी सेवाओं से इतने खुश थे कि उन्होंने मुझे धरती पर आने की खास इजाज़त दे दी।"

बादशाह अकबर अपने अब्बा के बारे में जानने के लिये बहुत उत्सुक थे सो उन्होंने तुरन्त पूछा — "क्या उन्होंने मेरे लिये भी कोई खबर भेजी है बीरबल?"

बीरबल बोले — "जी हॉ हुजूर। उन्होंने कहा है कि मैं आपसे कहॅू कि वह आपको बहुत याद करते हैं। और दूसरी बात उन्होंने आपसे यह कहलायी है कि बहुत ही कम नाई जन्नत तक पहॅुच पाते हैं इसलिये वहॉ के लोग बहुत ही गन्दे तरीके से रह रहे हैं।

इस बात का अन्दाजा तो आप मेरी बढ़ी हुई दाढ़ी और बालों से भी लगा सकते हैं। मैं जितने समय वहॉ रहा अपने बाल ही नहीं कटवा सका। इसलिये उन्होंने कहा है कि अगर आप अपने नाई को उनके पास तुरन्त भेज सकें तो... ।"

अकबर की समझ में सब कुछ आ गया। उन्होंने इस अन्याय का न्याय करने के लिये बीरबल को बहुत बड़ा इनाम दिया और उस नाई को मौत के घाट उतरवा दिया।

2 बीरबल ने हार ढॅूढा

एक बार एक आदमी हसन नाम के एक आदमी को परेशान करना चाहता था सो उसने उस पर अपने हार की चोरी का इलजाम लगा दिया और पुलिस में इसकी रिपोर्ट लिखा दी।

जज हसन को बहुत अच्छी तरह जानता था और वह यह भी जानता था कि हसन चोर नहीं था।

सो जज ने उस आदमी से पूछा — "तुम उसको चोर क्यों बताते हो?"

आदमी बोला — "जज साहब, क्योंकि मैंने उसको हार चुराते हुए देखा है।"

हसन बोला — "मैं बेकुसूर हूँ जज साहब। मैं इसके हार के बारे में कुछ नहीं जानता।"

वह आदमी बोला — "अगर यह बेकुसूर है तो यह अपना बेकुसूर होना साबित करे। मैं लोहे की एक गर्म सलाख लाता हूँ अगर यह उसको अपने नंगे हाथों से पकड़ ले तो मैं मान जाऊँगा कि इसने मेरा हार नहीं चुराया और यह सच बोल रहा है।"

हसन बोला — "इसका मतलब यह है कि अगर मैं सच बोल रहा हूँ तो मैं लोहे की गर्म सलाख अपने नंगे हाथों में पकड़ लूँगा और मेरे हाथ नही जलेंगे?"

वह आदमी बोला — "तुम ठीक कहते हो क्योंकि तब अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।"

अब बेचारा हसन कुछ नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि अपने को बेकुसूर साबित करने के लिये वह उस आदमी की दी हुई गर्म सलाख अपने नंगे हाथों में पकड़ ले।

उसने जज से कहा कि वह उसको एक दिन का समय और दे ताकि वह फिर दोबारा से उस हार को ढूँढ सके। जज ने उसको इजाज़त दे दी और वह घर चला गया।

कुछ सोच कर वह बीरबल के पास गया और उनको सारी बात बता कर उनसे सलाह माँगी।

अगले दिन वह जज की कचहरी में फिर से दाखिल हुआ और बोला — "अगर आप भी ऐसा ही सोचते हैं कि वह हार मैंने चुराया है तो मैं उसकी दी हुई जलती हुई सलाख पकड़ने के लिये तैयार हूँ जज साहब। पर यही चीज़ तो उस आदमी पर भी तो लागू होनी चाहिये।

अगर वह सच बोल रहा है तो उस गर्म लोहे की सलाख को पकड़ने से उसके हाथ भी नहीं जलने चाहिये। सो उसको वह गर्म सलाख लाने दीजिये और अपने दोनों हाथों में पकड़ने दीजिये। अगर उसके हाथ नहीं जलेंगे तो उसके बाद फिर मैं उसको पकड़ लूँगा।"

यह सुन कर उस आदमी की तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। वह जज से बोला — "मैं एक बार फिर से घर जा कर अपना हार ढूँढता हूँ। हो सकता है कि मैंने ही उस हार को कहीं इधर उधर रख दिया हो।"

इतना कह कर उसने जज को जल्दी से सिर झुकाया और घर वापस चला गया।

तुम क्या सोचते हो बच्चों? क्या वह आदमी फिर उस जज के पास लौटा होगा? या फिर दोबारा उसने हसन के ऊपर हार की चोरी का इलजाम लगाया होगा?

नहीं, वह फिर कभी वहाँ देखा ही नहीं गया। इस तरह बीरबल ने हसन को न्याय दिलवाया।

3 कुँए का कुँआ और पानी का पानी

एक बार एक किसान ने एक आदमी से एक कुँआ खरीदा। अगले दिन जब वह किसान उस कुँए से पानी लाने गया तो उस आदमी ने उस किसान को उस कुँए से पानी निकालने से मना कर दिया।

किसान बेचारा बहुत दुखी हुआ कि कुँआ खरीद कर भी वह उस कुँए का पानी इस्तेमाल नहीं कर सकता था। सो वह बादशाह अकबर के दरबार में आया और बादशाह से न्याय की प्रार्थना की।

बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलाया और उनसे यह मामला सिलटाने के लिये कहा। बीरबल ने उस आदमी को बुलाया जिसने उस किसान को वह कुँआ बेचा था।

बीरबल ने पूछा — "जब तुमने यह कुँआ इस किसान को बेच दिया तो फिर तुम उसको उस कुँए से पानी क्यों नहीं निकालने देते?"

वह आदमी चतुराई से बोला — "बीरबल, मैंने उसको कुँआ बेचा है कुँए का पानी नहीं। इसलिये वह उस कुँए का पानी नहीं ले सकता।"

बीरबल भी कम नहीं थे। उन्होंने मुस्कुरा कर उस आदमी से कहा — "ठीक, लेकिन यह तो तुम मानते हो कि वह कुँआ तुमने उस किसान को बेचा?"

"जी हॉ। यह मैं मानता हूँ कि मैंने इस किसान को यह कुँआ बेचा।"

बीरबल फिर बोले — "इसका मतलब यह हुआ कि अब वह कुँआ किसान का हो गया और तुम्हारा उस पर कोई अधिकार नहीं है। पक्का?"

"जी हॉ।"

"और तुम कहते हो कि यह पानी तुम्हारा है तो तुमको इस किसान के कुँए में अपना पानी रखने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह कुँआ तो अब तुम्हारा है ही नहीं वह कुँआ तो अब तुम उस किसान को बेच चुके। वह कुँआ अब किसान का है।

तो या तो तुम किसान को अपना पानी उसके कुँए में रखने के लिये किराया दो और या फिर अपना पानी उसके कुँए से निकाल लो।"

यह सुनते ही उस आदमी की समझ में आ गया कि उसकी चाल बेकार गयी। उसने किसान को कुँए से पानी खींचने की इजाज़त दे दी।

बच्चो, ऐसी ही एक कहानी इंगलैंड के महान कवि और नाटककार शेक्सपीयर ने भी लिखी है उसका नाम है "द मर्चेन्ट औफ

वेनिस"। बहुत ही सुन्दर, दिलचस्प और अक्लमन्दी की कहानी है वह भी। यह कहानी इसी पुस्तक में आगे दी गयी है। उसे जरूर पढ़ना।

4 बीरबल की खिचड़ी

बीरबल की यह कहानी बहुत मशहूर है। बड़े लोग इसको खूब मिर्च मसाला लगा कर कहते हैं और बच्चे और बड़े दोनों इसको बड़े शौक से सुनते है।

यहॉ तक कि अब तो यह एक कहावत[29] बन गयी है – जब कोई आदमी कोई काम बहुत धीरे करता है तो लोग कहते हैं कि तुम्हारा काम तो बीरबल की खिचड़ी हो गयी जो अभी तक हुआ ही नहीं।

हालॉकि यह कहावत इसी तरह इस्तेमाल होती है पर इसकी असली वजह खिचड़ी पकाना या कोई काम बहुत धीरे करना नहीं है। आओ इसकी असली वजह जानने की कोशिश करें कि बीरबल ने खिचड़ी पकायी ही क्यों। यह उन्होंने किसी को न्याय दिलवाने के लिये पकायी थी।

जाड़े का मौसम था। सारे तालाबों का पानी जमने जैसा हो रहा था। अकबर और बीरबल अपने शाही बागीचे में सैर कर रहे थे।

[29] Read more of proverb stories in "Kahavaton Ki Janma Kathayen" written by Sushma Gupta in Hindi language. Available from : hindifolktales@gmai;.com

ठंड महसूस करने के लिये अकबर ने एक तालाब के पानी में अपना हाथ डाला और तुरन्त ही बाहर निकाल लिया। उस पानी की ठंड महसूस कर के अकबर के दिमाग में एक ख्याल आया और उन्होंने बीरबल से पूछा — "बीरबल, क्या कोई आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है?"

बीरबल बोले — "जी जनाब, अगर उसको पैसों की वाकई जरूरत हो तो।"

बादशाह बोले — "अच्छा तो इसको साबित करो।"

अगले दिन बीरबल एक बहुत ही गरीब आदमी को ले कर आये जिसके पास कोई पैसा नहीं था और बोले — "हुजूर यह आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है।"

बादशाह ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम सर्दी के इस मौसम में एक रात यमुना के ठंडे पानी में खड़े हो कर गुजार सकोगे? अगर तुम गुजार सकते हो तो हम तुमको सोने की एक हजार मुहरें देंगे।"

अब एक हजार मुहरें तो बहुत होती हैं। वह गरीब आदमी बेचारा उन एक हजार मुहरों के लालच में आ गया और वह उस सर्दी की रात यमुना के पानी में गुजारने चला गया।

सर्दी बहुत थी पर एक हजार सोने की मुहरें भी तो उसके लिये कम नहीं थीं। बादशाह के कुछ चौकीदार भी वहाँ यह देखने के

लिये खड़े थे कि वह आदमी वाकई उस ठंडे पानी में खड़ा रहा कि नहीं और उसने कोई धोखा तो नहीं किया।

अगले दिन वह आदमी अपना इनाम लेने के लिये बादशाह के दरबार में पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा — "यह तो बताओ कि तुम इतने ठंडे पानी में सारी रात कैसे खड़े रहे?"

आदमी सीधा था। सीधे स्वभाव बोला — "सरकार, करीब पॉच सौ गज की दूरी पर एक लैम्प पोस्ट जल रहा था मैं उसी को देखता रहा। बस वही मेरी आशा थी।"

यह सुन कर बादशाह ने कहा कि वह आदमी इस इनाम के काबिल नहीं है क्योंकि वह आदमी यकीनन उस लैम्प पोस्ट से गर्मी ले रहा था इसलिये वह पूरी तरीके से उस ठंडी रात में ठंडे पानी में खड़ा नहीं रहा।

यह सुन कर वह गरीब आदमी बेचारा बहुत ही निराश हुआ कि वह बेचारा सारी रात तो उस सर्दी की रात में यमुना के ठंडे पानी में खड़ा रहा और फिर भी उसे इनाम नहीं मिला।

बीरबल भी यह सब सुन रहे थे। उनको बादशाह का यह तर्क बिल्कुल भी ठीक नहीं लगा कि पॉच सौ गज दूर से वह आदमी उस लैम्प पोस्ट से गर्मी ले रहा था।

उस समय तो उन्होंने कुछ कहना ठीक नहीं समझा पर उन्होंने सोच लिया कि वह राजा को इसका जवाब जरूर देंगे और उसको न्याय दिलवा कर ही रहेंगे।

अगले दिन बीरबल बहुत देर तक दरबार नहीं गये। अकबर ने उनका बहुत देर तक इन्तजार किया पर फिर भी जब बीरबल दरबार में नहीं आये तो उन्होंने अपने एक आदमी को उनके घर भेजा कि जाओ देख कर आओ कि बीरबल आज दरबार में क्यों नहीं आये।

नौकर ने वापस आ कर बादशाह को बताया कि बीरबल अपनी खिचड़ी पका रहे हैं। वह कहते हैं कि जब उनकी खिचड़ी पक जायेगी तब वह अपनी खिचड़ी खा कर ही दरबार में आयेंगे।

एक घंटा हुआ, दो घंटे हुए, तीन घंटे हुए पर बीरबल दरबार नहीं आये। लगता है कि बीरबल की खिचड़ी अभी तक नहीं पकी थी। यह ऐसी कैसी खिचड़ी थी बीरबल की कि पकने पर ही नहीं आ रही थी?

नौकर कई बार जा कर वापस आ चुका था पर बीरबल के आने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे सो इस बार बादशाह ने उन्हें खुद जा कर देखने का विचार किया।

बादशाह बीरबल के घर गये। बादशाह को अपने घर आया देख कर बीरबल बादशाह को लेने बाहर आये और उनको बड़े आदर से अन्दर ले गये।

बादशाह ने बताया कि क्योंकि बीरबल बहुत देर से दरबार में नहीं आये थे इसलिये वह खुद ही बीरबल को देखने के लिये चले आये थे।

बीरबल बोले — "सरकार, मैं अपनी खिचड़ी बना रहा था। जैसे ही मेरी खिचड़ी बन जायेगी मैं खिचड़ी खा कर तुरन्त ही दरबार में हाजिर होता हूँ।"

"क्या मैं तुम्हारी खिचड़ी देख सकता हूँ कहाँ है वह?"

"जरूर सरकार।" कह कर बीरबल उनको वहाँ ले गये जहाँ उनकी खिचड़ी बन रही थी।

बादशाह को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि खिचड़ी की हाँडी एक पेड़ की बड़ी ऊँची सी शाख पर लटक रही थी और नीचे जमीन पर दो चार लकड़ियों की सहायता से एक छोटी सी आग जल रही थी।

बादशाह से पूछे बिना नहीं रहा गया — "बीरबल, इस तरह से तो यह तुम्हारी खिचड़ी ज़िन्दगी भर तक नहीं पकने की। इतनी दूर से और इतनी कम आग से खिचड़ी कैसे पकेगी? यह तुम्हें क्या हो गया है?"

बीरबल बोले — "सरकार, यह खिचड़ी भी उसी तरह पकेगी जिस तरह से उस गरीब आदमी को पाँच सौ गज दूरी से लगे उस लैम्प पोस्ट से गर्मी मिल रही थी।"

बादशाह समझ गये कि उन्होंने उस गरीब आदमी को उसका इनाम न दे कर उसके साथ बड़ा अन्याय किया। बादशाह बीरबल

का जवाब सुन कर उलटे पैरों दरबार वापस लौट गये और उस गरीब आदमी को दरबार में फिर से पेश करने का हुक्म दिया।

तुरन्त ही वह आदमी दरबार में लाया गया। बादशाह ने उसको उसका एक हजार सोने के सिक्के का इनाम और दो सौ सोने के सिक्के और दे कर आदर सहित विदा किया।

इस तरह बीरबल ने उस गरीब आदमी को उसका इनाम दिलवा कर उसको न्याय दिलवाया।

5 अचार का बर्तन या पैसे का बर्तन?

यह कहानी काफी कुछ अरेबियन नाइट्स की अली वाली कहानी से मिलती जुलती है।

एक बार एक आदमी ने दूसरे आदमी को एक बर्तन रखने के लिये दिया और कहा कि वह तीर्थ यात्रा के लिये जा रहा है और वहॉ से आ कर वह उसे वापस ले लेगा।

दूसरे आदमी ने वह बर्तन रख लिया और पहला आदमी तीर्थ यात्रा पर चला गया। छह महीने बाद वह पहला आदमी तीर्थ यात्रा से वापस आया तो उस दूसरे आदमी के पास अपना बर्तन लेने गया।

दूसरे आदमी ने उसको उसका बर्तन ला कर दे दिया। पहले आदमी ने वह बर्तन खोला तो देखा कि उसमें तो उसके पैसों की बजाय आम का अचार भरा हुआ था।

उसने उस दूसरे आदमी से पूछा — "इस बर्तन में से मेरे पैसे कहाँ गये?"

दूसरा आदमी बोला — "मुझे क्या मालूम। मैं नहीं जानता कि इस बर्तन में क्या था। जैसा तुमने दिया था मैंने उसको वैसा ही ले जा कर अन्दर रख दिया और आज जब तुमने माँगा तो तुमको वैसा का वैसा ही वहाँ से ला कर दे दिया। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि उसके अन्दर क्या था।"

पहला आदमी बोला — "इसमें मेरे पैसे रखे थे पर अब इसमें आम का अचार रखा है यह कैसे हुआ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

पहला आदमी बादशाह अकबर के दरबार में गया और अपना मामला उनके सामने रखा। बादशाह ने यह मामला न्याय करने के लिये बीरबल को सौंप दिया।

बीरबल ने दूसरे आदमी से पूछा — "इस बर्तन के पैसे कहाँ हैं?"

दूसरा आदमी बोला — "मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मुझे इस बर्तन में रखे पैसों की कोई जानकारी नहीं है।"

बीरबल ने कहा — "यह तुम सच बोल रहे हो?"

"जी हाँ।"

बीरबल ने शाही रसोई से कुछ औरतों को बुलवाया और उनसे कहा कि वह उस अचार को देख कर बतायें कि वह अचार कितना पुराना हो सकता है।

उन औरतों ने अचार को देख कर और चख कर बताया कि वह अचार एक महीने से ज़्यादा पुराना नहीं था और निश्चित रूप से छह महीने पुराना तो नहीं था।

अब उस दूसरे आदमी के पास अपने बचाव का कोई साधन नहीं था। उसको पहले आदमी के उस बर्तन में रखे पैसे वापस करने पड़े।

इस तरह बीरबल ने पहले आदमी को उसके पैसे वापस दिलवाये।

5 शेक्सपीयर की कहानी

शहंशाह अकबर के समय में इंगलैंड में विलियम शेक्सपीयर[30] नाम के एक बहुत ही बड़े कवि और नाटककार हो गये हैं। बहुत ही बड़े का मतलब कि वह वहॉ के इतने बड़े कवि और नाटककार हैं कि उनके नाम से इंगलैंड की पहचान होती है। इंगलैंड माने शेक्सपीयर और शेक्सपीयर माने इंगलैंड।

इनके सबसे ज्यादा लोकप्रिय नाटकों में हैमलैट, किंग लीर, औथैलो और मैकबैथ[31] हैं। इनकी दूसरी लोकप्रिय रचनाएँ हैं – द कौमेडी औफ ऐरर्स, द टू जैन्टिलमैन औफ वरोना, ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम[32] आदि।

यहॉ हम उनकी "द मर्चेन्ट औफ वेनिस" यानी "वेनिस का सौदागर" नाम की न्याय की एक कहानी दे रहे हैं जो इटली के वातावरण में लिखी गयी है। इसमें एक वकील अपने मुवक्किल को अपना मॉस देने से किस तरीके से बचाता है यह देखने वाली बात है।

यह सच्ची घटना तो नहीं है पर यह एक बहुत ही मशहूर कहानी है और न्याय का एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है।

---

[30] William Shakespeare from England – a list of Shakespeare's very famous works is given at the end of this book.

[31] Hamlet, King Lear, Othello, Macbeth

[32] The Comedy of Errors, The Two Gentlemen of Verona, A Midsummer Night's Dream etc

द मर्चेन्ट औफ वेनिस

वेनिस का एक कुलीन आदमी बैसैनियो[33] बैलमौन्ट[34] में रहने वाली एक बहुत ही सुन्दर और अमीर लड़की पोर्शिया[35] से प्यार करता था और वह उसको चाहिये भी थी पर वह खुद बहुत गरीब था।

इस तरह से वह कैसे उसको पा सकता था जबकि वह इतना गरीब था और वह इतनी अमीर थी सो उसने अपने दोस्त एन्टोनियो[36] से कुछ पैसे मॉगे ताकि वह पोर्शिया से शादी कर सके।

एन्टोनियो वेनिस का एक बहुत ही अमीर व्यापारी था और वह बैसैनियो के लिये कुछ भी करने को तैयार था क्योंकि वह उसका बहुत अच्छा दोस्त था।

बैसैनियो ने सोचा पोर्शिया से शादी करने के लिये तीन हजार डकैट[37] काफी रहेंगे सो उसने ऐन्टोनियो से तीन हजार डकैट मॉगे पर ऐन्टोनियो का काफी सारा पैसा उसके धन्धे में लगा हुआ था इसलिये उसके पास उस समय हाथ में इतना पैसा नहीं था कि वह बैसैनियो को उतना पैसा उधार दे सकता।

पर क्योंकि जल्दी ही उसके सामान से भरे जहाज आ जायेंगे इसलिये वह बैसैनियो के लिये अपनी जायदाद के ऊपर कुछ कर्ज ले सकता था।

---

[33] Bassanio – the lover of Portia living in Belmont

[34] Belmont – a fictional Italian town in Shakspeare's play "The Merchant of Venice"

[35] Portia – the girl whom Bassanio loved

[36] Antonio was the rich merchant of Belmont

[37] Ducat – currency of Italy at that time

पोर्शिया बैसैनियो को एक बहुत ही अच्छा नौजवान समझती थी सो उसने अपने पिता से वायदा किया कि वह उसी आदमी से शादी करेगी जो उसकी तीन सन्दूकचियों मे से ठीक सन्दूकची चुनेगा।

उसकी तीन सन्दूकचियों में से एक सन्दूकची सोने की थी, एक सन्दूकची चॉदी की थी और एक सन्दूकची लैड[38] की थी। ठीक सन्दूकची वह थी जिसमें उसकी अपनी यानी पोर्शिया की तस्वीर रखी हुई थी।

बहुत सारे देशों से बहुत सारे लोग उससे शादी करने की इच्छा से उसके पास आये पर कई लोगों ने उसकी इस बक्से वाली लौटरी में हिस्सा ही नहीं लिया और वे अपने घर वापस चले गये।

इससे पोर्शिया ने चैन की सॉस ली क्योंकि वह उनमें से किसी को भी पसन्द नहीं करती थी।

उधर बैसैनियो ऐन्टोनियो से कर्ज मिलने का वायदा ले कर एक बहुत बड़े पैसा उधार देने वाले ज्यू शाइलौक[39] से मिला और उससे यह कह कर पैसा मॉगा कि ऐन्टोनियो तीन महीने बाद उसका पैसा उसको वापस कर देगा।

पर वेनिस के रहने वाले ऐन्टोनियो और दूसरे ईसाई लोग शाइलौक का पहले ही बहुत मजाक बना चुके थे सो वह उनसे चिढ़ा हुआ था। वे लोग उसका मजाक केवल इसी लिये नहीं बनाते थे

[38] Lead - a kind of metal
[39] Shylock – a Jew money lender

क्योंकि वह बहुत ऊँचे ब्याज पर पैसे देता था बल्कि ऐसा इसलिये भी था क्योंकि वह एक ज्यू था।

फिर भी शाइलौक बैसैनियो को पैसे देने को तैयार हो गया इस शर्त पर कि अगर ऐन्टोनियो समय पर पैसे वापस नहीं दे सका तो वह उसका एक पौंड मॉस ले लेगा।

ऐन्टोनियो ने भी इस अजीब सी शर्त के कागज पर इस उम्मीद में दस्तखत कर दिये कि उसके जहाज़ तो उसका सामान ले कर समय से आ ही जायेंगे तो फिर वह उसका कर्ज वापस कर देगा।

उधर शाइलौक छिपे तौर पर यह दुआ मनाता रहा कि ऐन्टोनियो के जहाज समय पर न आयें ताकि वह उसका एक पौंड मॉस काट सके। उधर बैसैनियो शाइलौक से पैसा ले कर पोर्शिया के घर बैलमौन्ट चला गया।

इधर शाइलौक की बेटी जैसिका[40] शाईलौक का काफी सारा सोना और जवाहरात ले कर बैसैनियो के दोस्त लौरेन्ज़ो[41] के साथ भाग गयी और ईसाई भी बन गयी।

वैनिस की सड़कों पर बैसैनियो के दोस्त बात कर रहे थे कि लौरेन्ज़ो और जैसिका दोनों एक गोन्डोला[42] में साथ साथ देखे गये और ज्यू शाईलौक भी सड़क पर अपनी बेटी का नाम ले कर चिल्लाता हुआ पाया गया।

---

[40] Jessica – daughter of Shylock

[41] Lorenzo – friend of Bassanio and lover of Jessica

[42] Gondola - The gondola is a traditional, flat-bottomed Venetian rowing boat, well suited to the conditions of the Venetian lagoon.

शाइलौक अपने दोस्तों से मिला और उनसे कहा कि उसकी बेटी जैसिका उसको छोड़ कर चली गयी और ऐन्टोनियो के जहाज़ समुद्र में खो गये हैं तो अब वह उसका पैसा कैसे देगा।

इस पर उन्होंने शाइलौक से पूछा कि अगर ऐन्टोनियो उसका पैसा वापस नहीं दे सका तो क्या वाकई वह ऐन्टोनियो से उसका मॉस ले लेगा?

इस पर शाइलौक बोला "यकीनन" क्योंकि वह खुद भी तो ईसाइयों की तरह से एक इन्सान ही है।

पैसा ले कर जब बैसैनियो अपने दोस्त के साथ पोर्शिया के साथ शादी करने के लिये बैलमौन्ट आया तो पोर्शिया ने तीन सन्दूकचियॉ बनवायीं जिनमें से एक में उसने अपनी तस्वीर रखी और कहा कि वह उससे तभी शादी करेगी जब वह उनमें से वह वाली सन्दूकची चुन लेगा जिसमें उसकी तस्वीर रखी हुई थी।

सो पोर्शिया उसको देख कर बहुत चिन्तित हुई कि कहीं ऐसा न हो कि वह गलत सन्दूकची चुन ले और फिर उसकी शादी बैसैनियो से न हो।

इसलिये वह चाहती थी कि वह ठीक सन्दूकची ही चुने ताकि वह उससे शादी कर सके। बैसैनियो के चिन्ता प्रगट करने पर वह बोली कि "अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो तुम मुझे जरूर ही पा जाओगे।"

वह सही सन्दूकची चुन सके इसके लिये उसने उसके लिये एक गीत गाया जिसमें उसने उसको इशारा किया कि उसको कौन सी सन्दूकची चुननी चाहिये।

बैसैनियो ने ठीक सन्दूकची चुन ली – लैड का बक्सा। उसी में पोर्शिया की तस्वीर थी।

पोर्शिया ने उससे शादी करने का वायदा किया और उसको एक अँगूठी पहना दी और बोली कि वह उस अँगूठी का ख्याल रखे – न तो वह उसको खोये और न ही किसी और को दे।

इधर बैसैनियो और पोर्शिया ने शादी कर ली उधर शाइलौक की बेटी जैसिका ने लौरेन्ज़ो के साथ शादी कर ली। फिर लौरेन्ज़ो और जैसिका एक दूत के साथ बैसैनियो के पास आये। उस दूत ने बैसैनियो को ऐन्टोनियो की एक चिट्ठी दी।

बैसैनियो ने उस चिट्ठी में एक बुरी खबर पढ़ी – ऐन्टोनियो ने उसको लिखा था कि क्योंकि उसके जहाज समुद्र में टूट गये हैं इसलिये वह शाइलौक का कर्जा नहीं चुका सकता इसलिये उसको शाइलौक के कर्जे की शर्त माननी पड़ेगी यानी उसको अपना एक पौंड मॉस शाइलौक को देना पड़ेगा।"

पोर्शिया ऐन्टोनियो का कर्ज चुकाने के लिये बैसैनियो को बहुत सारा सोना देती है और बैसैनियो उस सोने को ले कर शाइलौक का कर्जा चुकाने जाता है। पोर्शिया बैलमोन्ट में ही रह जाती है।

पोर्शिया जो सुन्दर होने के साथ साथ अक्लमन्द भी है बैलमोन्ट में चुपचाप नहीं बैठती। उसका ऐन्टोनियो को बचाने का अपना एक प्लान है। वह और उसकी नौकरानी नरीसा[43] पुरुष के वेष में बैसैनियो के पीछे पीछे वेनिस[44] जाती हैं।

वेनिस की कचहरी में वेनिस का ड्यूक शाइलौक से एन्टोनियो के लिये उसके कर्जे के बदले मे एक पौंड मॉस की शर्त को माफ करने के लिये कहता है पर शाइलौक उसकी बात नहीं मानता। उसको तो अपने कर्जे के बदले में ऐन्टोनियो का एक पौंड मॉस ही चाहिये था।

इस पर बैसैनियो शाइलौक को ऐन्टोनियो ने जितना उधार लिया था उससे कहीं ज़्यादा पैसा देने को तैयार हो जाता है पर शाइलौक ने उसका वह ज़्यादा पैसा स्वीकार भी नहीं करता और उसका एक पौंड मॉस लेने पर ही अड़ा रहता है।

उसी समय नरीसा वकील के एक क्लर्क के वेष में वहॉ आयी और पोर्शिया को जो एक होशियार वकील बैलेरियो[45] के रूप में उसके साथ थी उसने ऐन्टोनियो की तरफ से उसका मुकदमा लड़ने के लिये कहा।

[43] Nerissa – a maidservant of Portia
[44] Venice is a historic city of Italy used as a port.
[45] Bellario – Portia in disguise of a lawyer

पहले तो पोर्शिया ने शाइलौक का दिल पिघलाने की कोशिश की कि वह एन्टोनियो से पैसा ले ले पर उसका मॉस न ले पर शाइलौक ऐन्टोनियो की तरफ कोई दया दिखाने के मूड में नहीं था।

उसने कहा कि मैं तो कानून के अनुसार ही काम करूँगा। क्योंकि शर्त के अनुसार उसने समय पर मेरा पैसा वापस नहीं दिया इसलिये अब वह अपना मॉस दे दे और मेरे कर्ज से छुटकारा पा जाये।

पोर्शिया उसको ऐन्टोनियो के उधार लिये हुए पैसे से भी तिगुना पैसा ज़्यादा देने को तैयार थी पर शाइलौक नहीं माना। उसको तो बस ऐन्टोनियो का एक पौंड मॉस चाहिये था।

आखिर पोर्शिया ऐन्टोनियो से बोली कि शाइलौक तो मानता नहीं और उसको अपना मॉस देने का दर्द सहना ही पड़ेगा तो सब लोग गुमसुम से और बहुत दुखी हो गये।

शाइलौक यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि अब तो उसको ऐन्टोनियो का एक पौंड मॉस मिल ही जायेगा सो उसने बैलेरियो यानी पोर्शिया की बहुत तारीफ की कि वह बहुत ही अच्छा वकील था।

अब बैलेरियो को अपनी होशियारी दिखाने का मौका मिला।

जब शाइलौक ऐन्टोनियो का मॉस काटने आया तो बैलेरियो बोला — "देखना, उसका केवल मॉस ही लेना, खून की एक बूँद भी

नहीं। क्योंकि उसके समझौते में केवल एक पौंड मॉस ही लिखा हुआ है और कुछ नहीं – खून भी नहीं।"

यह शाइलौक कर नहीं सका और इस तरह शाइलौक हार गया क्योंकि बिना खून के वह उसका मॉस काट नहीं सकता था सो वह मॉस छोड़ कर फिर पैसा लेने पर तैयार हो गया।

बैलेरियो बोला कि अब उसको एक डकैट भी नहीं मिलेगा। वह न केवल अपने उधार दिये पैसे ही खोयेगा बल्कि ऐन्टोनियो को मारने का जाल बिछाने के जुर्म में उसको अपनी आधी जायदाद भी देनी पड़ेगी।

इतना ही नहीं उसको ईसाई भी बनना पड़ेगा और उसके मर जाने के बाद उसकी सारी जायदाद के मालिक जैसिका और लौरेन्ज़ो बनेंगे।"

शाइलौक तो यह सब सुन कर सकते में आ गया और टूट गया। वह यह कह कर कचहरी के बाहर चला गया कि उसकी तबियत ठीक नहीं है।

बैसैनियो ने पोर्शिया को जो अभी भी वकील के रूप में थी एन्टोनियो को बचाने के लिये उसकी फीस देनी चाही पर पोर्शिया ने फीस लेने से मना कर दिया।

बैसैनियो ने जिद की कि अगर वह पूरी फीस नहीं लेना चाहता तो कम से कम यादगार के लिये ही कुछ ले ले। इस पर पोर्शिया ने

उससे उसकी शादी की अँगूठी ले ली जिसको उसने उसको किसी को भी देने से मना किया था।

मुकदमे के बाद सब लोग अपने अपने घर वापस चले गये। बाद में पोर्शिया ने ऐन्टोनियो, बैसैनियो और ग्रेटियानो[46] का बेलमौन्ट में स्वागत किया।

वहाँ ग्रेटियानो ने पोर्शिया को बताया कि बैसैनियो ने ऐन्टोनियो के वकील को अपनी वह अँगूठी दे दी जिसको उसने अपने से कभी अलग न करने को कहा था।

पोर्शिया ने बैसैनियो का उस अँगूठी को इस तरीके से इस्तेमाल करने के लिये डाँटने का नाटक किया और एक दूसरी अँगूठी ऐन्टोनियो को दी।

जब ऐन्टोनियो ने उस अँगूठी को देखा तो उसने उसको पहचान लिया कि यह तो वही अँगूठी थी जो उसने अपने वकील को दी थी। तब उसको पता चला कि पोर्शिया ने ही उसको बचाया था।

[46] Gratiano

लोक कथाओं में न्याय

कुछ लोक कथाऐं भी ऐसी हैं जिनमें न्याय किया गया है कुछ आदमियों की हैं और कुछ जानवरों की। आओ पढ़ते हैं ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं। फिर हमें बताना कि यह कैसा न्याय है?

यहॉ हम न्याय की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं इन्हें पढ़ो और देखो कि लोगों और जानवरों की दुनियॉ में न्याय कैसे होता है।

6 न्याय प्रिय राजा फ़िरदी[47]

यह अफ्रीका के इथियोपिया देश की एक ऐसी लोक कथा है जिसमें एक राजा अपने न्याय के लिये बहुत मशहूर है। आओ देखें वह अपनी प्रजा के साथ किस तरह से न्याय करता है।

इथियोपिया के पश्चिमी पर्वतीय प्रदेशों में एक बहुत बड़ा राजा रहता था जिसका नाम था फ़िरदी। वह अपने निष्पक्ष फैसलों के लिए बहुत दूर दूर तक मशहूर था। आज तक किसी का साहस नहीं पड़ा था कि कोई उसके फैसले को चुनौती दे सके।

ऐसा क्यों था? ऐसा इसलिये था कि राजा का यह हुक्म था कि जो कोई आदमी उसके फैसले के खिलाफ बोले उसको ज़िन्दा ही धीमी आग पर भून दिया जाये। अब इस हुक्म के साथ उसके न्याय को चुनौती देने की हिम्मत ही किस में थी?

एक रात की बात है कि एक चोर ने राजा के शहर में एक धनी व्यापारी के घर में दीवार तोड़ कर घुसने की कोशिश की। जैसे ही दीवार में छेद इतना बड़ा हुआ कि वह उसके अन्दर घुस सकता एक ईंट ऊपर से उसके सिर पर पड़ी जिससे उसको चोट लग गयी।

चोट ज़्यादा थी इसलिये वह चोर अपना फूटा सिर ले कर अपने घर चला गया। उस रात वह कुछ नहीं कर सका। उसको अपने

[47] King Firdi – a justice loving King – a Gala or Oromo folktale of Ethiopia, Eastern Africa. Read "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi, Delhi, Prabhat Prakashan. 2017.

ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था क्योंकि उस दिन उसकी रात बेकार गयी और वह कुछ नहीं कर सका।

अगले दिन वह राजा फ़िरदी के महल में पहुँचा और राजा से बोला "हुजूर, कल रात मैं एक व्यापारी के घर में घुसने के लिये दीवार तोड़ रहा था ताकि उसकी कोई छोटी मोटी चीज़ चुरा सकूँ परन्तु दीवार से एक ईंट गिरी और उसने मेरा सिर फोड़ दिया।

देखिये, मैं इतनी ज़्यादा चोट खा गया हूँ कि अपना काम ही नहीं कर सका। किसी को तो इसकी सजा मिलनी चाहिये।"

राजा फ़िरदी ने उसके सिर की चोट देखी तो वह गुस्से में भर कर कॉपती आवाज में बोला — "तुम ठीक कहते हो। ऐसे देश में भला कोई भी क्या कर सकता है जहॉ कोई चोर बिना किसी एक्सीडेंट के चोरी भी नहीं कर सकता।"

उसने फिर अपने नौकरों से कहा — "जाओ और जा कर उस व्यापारी को ले कर आओ जिसके घर में इस चोर को यह चोट लगी है।"

राजा के नौकर तुरन्त गये और व्यापारी को ले कर राजा के पास आ गये। व्यापारी डर के मारे कॉप रहा था। उस बेचारे की तो यही समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी गलती क्या थी जो राजा ने उसको बुलाया।

असल में तो हर आदमी राजा फ़िरदी के दरबार में कॉपा ही करता था पर यह व्यापारी कुछ ज़रा ज़्यादा ही कॉप रहा था क्योंकि यह बेचारा बेकुसूर था।

राजा बोला — "व्यापारी, यह भला सा चोर तुम्हारे घर में दीवार तोड़ते समय जख्मी हो गया। क्योंकि यह तुम्हारा घर तोड़ते समय जख्मी हुआ है इसलिये इसकी चोट के जिम्मेदार तुम हो।"

व्यापारी बेचारा लड़खड़ाती आवाज में बोला "हुजूर, यह सच है कि वह घर मेरा है परन्तु मैंने तो उसमें कुछ नहीं किया। गलती उस बढ़ई की है जिसने मेरे लिये वह घर बनाया। उसने वह घर मेरे लिये ठीक से नहीं बनाया, इसी लिये वह ईंट गिर गयी।"

राजा कुछ सोच कर बोला "शायद तुम ठीक कहते हो। बढ़ई को हाजिर किया जाये। मैं तो यह चाहता हूँ कि सजा केवल अपराधी को ही मिलनी चाहिये।"

राजा फ़िरदी के सामने अब उस मकान बनाने वाले बढ़ई को लाया गया। राजा बोला — "ओ नीच आदमी, क्या तुम जानते हो कि यह भला चोर इस व्यापारी के घर में चोरी करते समय जख्मी हो गया? और वह भी केवल तुम्हारी लापरवाही से किये गये काम की वजह से। जब वह दीवार तोड़ रहा था तो एक ईंट उस बेचारे के सिर पर गिर पड़ी। वह ईंट तुमने कैसे लगायी जो इस बेचारे के सिर पर गिर पड़ी?"

बढ़ई के तो होश हवास गुम हो रहे थे परन्तु किसी प्रकार वह हिम्मत बटोर कर बोला "हुजूर यह तो ठीक है कि व्यापारी का घर मैंने बनाया था पर ईंटें तो मजदूर ने रखी थी। उसी को इस बात की सजा मिलनी चाहिये कि उसने ईंट ऐसे कैसे रखी जो वह इस बेचारे चोर के सिर पर गिर गयी।"

राजा फ़िरदी बोला — "तुम ठीक कहते हो। मजदूर को बुलाया जाये और फिर मैं देखता हूँ कि चोर के साथ न्याय कैसे नहीं होता है।"

सो मजदूर को दरबार में लाया गया। जब राजा ने उसको इस घटना का जिम्मेदार ठहराया तो मजदूर तो डर से केवल फुसफुसा ही सका — "सरकार, मैं इस घटना का जिम्मेदार नहीं हूँ। मैंने ईंटों को चिपकाने वाले मसाला बनाने की ओखली एक ओखली बेचने वाले से खरीदी थी।

अब अगर वह ओखली ठीक रही होती तो मसाला भी अच्छा रहा होता और ईंट भी ठीक से चिपक जाती। इस ईंट के गिरने का तो वह ओखली वाला ही जिम्मेदार है जिसकी ओखली में वह ईंट बनाने वाला मसाला ठीक से नहीं बना।"

सो ओखली वाले को राजा के दरबार में पेश किया गया। राजा बोला — "सुन ओ नीच ओखली वाले, तुमने ऐसी खराब ओखली क्यों बनायी जिसमें ईंट चिपकाने वाला मसाला ही ठीक से नहीं बन पाया?

उस ओखली में बनाये गये मसाले से बढ़ई ईंट को ठीक से चिपका नहीं सका और इसी लिये कुछ छोटी मोटी चीज़ें चुराते समय यह भला चोर उन ईंटों में से एक ईंट गिरने की वजह से घायल हो गया। तुमको इस जुर्म की कड़ी सजा मिलेगी।"

बदकिस्मती से इस ओखली बनाने वाले का शरीर तो बड़ा था और वह ताकतवर भी बहुत था पर उसमें अक्ल कम थी। वह बेचारा अपने बचाव में कुछ भी न कह सका।

उधर राजा फ़िरदी को भी पक्का हो गया कि उसने असली अपराधी का पता लगा लिया सो उसने अपने आदमियों को तुरन्त ही हुक्म दिया कि इस ओखली बनाने वाले को जल्दी से जल्दी फॉसी पर चढ़ा दिया जाये।

राजा के हुक्म के अनुसार बढ़इयों ने अपराधी को फॉसी पर चढ़ाने के लिये फॉसी का खॉचा जल्दी जल्दी बनाया। जल्दी जल्दी बनाने की वजह से वह खॉचा पूरी ऊॅचाई का भी नहीं बन पाया क्योंकि यह ओखली वाला तो बहुत लम्बा आदमी था।

राजा के आदमी जब उसको फॉसी लगाने के लिये ले कर गये तो उन्होंने देखा कि फॉसी का फन्दा गले में डालने के बाद भी उस ओखली वाले के पैर तो जमीन से छू रहे थे।

उन्होंने यह समस्या जब जा कर राजा को बतायी तो राजा तो यह सुन कर आग बबूला हो उठा और बोला "इस भले चोर को छोड़ने में मुझे अभी कितनी देर और लगेगी?

फॉसी का खॉचा तैयार है तो किसी को तो इस जुर्म की सजा मिलनी ही चाहिए। जाओ और कोई भी ऐसा आदमी ढूँढो जो इस खॉचे पर फ़िट हो सके और उसको फॉसी चढ़ा दो।"

अब राजा के आदमी किसी ऐसे आदमी की तलाश में चल दिये जो उस फॉसी के खॉचे में फ़िट हो सके। पहला आदमी जो उनको दिखायी दिया वह था एक छोटा सा प्याज उगाने वाला किसान। वह अभी अभी गॉव से अपनी प्याज की फसल निकाल कर बेचने के लिए शहर जा रहा था।

इस किसान के बारे में यह मशहूर था कि इसने कभी किसी को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था पर क्योंकि वह साइज़ में छोटा था इसलिये वह फॉसी के खॉचे पर बिल्कुल ठीक बैठ रहा था। और राजा अपने महल में बैठा न्याय की दुहाई दे रहा था।

जब यह किसान राजा फ़िरदी के सामने लाया गया तो राजा चिल्लाया "मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। अगर यह आदमी उस खॉचे पर फ़िट बैठता है तो बस यही आदमी ठीक है।

वह भला चोर पहले ही काफी देर तक न्याय के लिए इन्तजार कर चुका है। अब तुम इसको जल्दी से ले जाओ और फॉसी पर चढ़ा दो।"

और वह बेचारा बेकुसूर किसान अपराधी चोर को न्याय देने के सिलसिले में फॉसी चढ़ा दिया गया। ऐसा था राजा फ़िरदी का न्याय।

7 नर मच्छर क्यों नहीं काटते[48]

न्याय की यह दूसरी लोक कथा एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि फिलीपीन्स देश में एक बहुत ही अक्लमन्द और बहुत ही बढ़िया आदमी रहता था। वह जानवरों के साथ रहता था और जब भी जानवरों में कोई झगड़ा होता या बहस होती तो वह जज बन कर उनके झगड़े सुलझाता था।

एक बार एक चिड़िया ने उस आदमी से शिकायत की — "जज साहब, जज साहब। मैं क्या करूँ, हर रात यह मेंढक इतना शोर मचाता है कि मैं सो ही नहीं सकती।"

जज बोला — "ठीक है। बुलाओ, मेंढक को बुलाओ। हम पता करेंगे कि वह तुमको परेशान क्यों करता है।"

जल्दी ही मेंढक जज के सामने हाजिर हो गया। जज ने पूछा — "ओ मेंढक, तुम रोज रात को चिड़िया की नींद क्यों खराब करते हो।

---

[48] Why Male Mosquitoes Do Not Bite? – a folktale from Philippines, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=90
Retold and written by Mike Lockett.
Mike adapted from "The Animals Go on Trial" in "Once in the First Times", 1949, stories retold by Elizabeth Hough Sechrist and attributed to "Filipino Popular Tales", by Dean S Fansler. 1921.

मेंढक इज़्ज़त से बोला — "जनाब, मैं रोज रात को कछुए से अपनी सुरक्षा के लिये चिल्लाता हूँ।

कछुआ अपना घर अपनी पीठ पर ले कर चलता है। जब भी वह मेरे पास से गुजरता है तो मुझे उससे डर लगता है कि कहीं वह मेरे ऊपर न गिर जाये और मुझे उससे कोई नुकसान न पहुँचे।"

जज बोला — "ओ, अब मैं समझा कि मेंढक रात को क्यों चिल्लाता है। यह सब कछुए की गलती है। क्योंकि वह अपना घर अपने ऊपर ले कर चलता है तो मेंढक डर जाता है और वह सारी रात चिल्लाता है और उसकी वजह से चिड़िया रात भर सो नहीं सकती। अच्छा तो कछुए को बुलाओ।"

कछुआ भी जल्दी ही जज के सामने आ गया। जज ने पूछा — "ओ कछुए, तुम अपने ऊपर अपना घर रख कर मेंढक को क्यों डराते हो?"

कछुआ इज़्ज़त से सिर झुका कर बोला — "योर औनर, मैं क्या करूँ, जुगनुओं[49] से बचने के लिये मुझे तो अपना घर अपने साथ रखना ही पड़ता है।

जुगनू हमेशा ही आग लिये घूमता रहता है और मुझे हमेशा ही यह डर लगा रहता ही कि मेरे पीछे वह मेरा घर बर्बाद कर देगा इसलिये मैं अपना घर अपने साथ ही रखता हूँ।"

[49] Translated for the Word "Firefly", commonly known as "Glowworm". See its picture above.

जज बोला — "अब मैं समझा कि कछुआ जुगनू से क्यों डरता है। वह जुगनू ही है जो कछुए को अपनी आग से डराता है और इसी लिये बेचारे कछुए को अपना घर अपने साथ में लिये घूमना पड़ता है।

और क्योंकि कछुआ अपना घर अपने साथ ले कर घूमता है मेंढक कछुए से डर जाता है और रात भर चिल्लाता है जिससे चिड़िया रात भर सो नहीं पाती। ठीक है जुगनू को बुलाओ।"

तुरन्त ही जुगनू को जज के सामने लाया गया। जज ने जुगनू से पूछा — "ए जुगनू, तुम अपनी आग से कछुए को क्यों डराते हो?"

जुगनू बहुत ही नर्मी से बोला — "जनाब, मैं यह आग मच्छर को दूर रखने के लिये जलाता हूँ ताकि वह अपने चाकू जैसे दाँत मेरे कोमल शरीर में न घुसा सके। वह हमेशा ही मुझे अपने चाकू जैसे पैने दाँतों से धमकाता रहता है।"

जज बोला — "ओह, अब मेरी समझ में आया कि जुगनू अपने साथ आग लिये क्यों घूमता है। वह मच्छर ही है जो जुगनू को अपने पैने दाँतों से धमकी देता है और उस धमकी की वजह से जुगनू को आग जला कर रखनी पड़ती है।

वह आग कछुए को डराती है तो उसको अपना घर अपने ऊपर ले कर घूमना पड़ता है। कछुए का हर समय घर को ले कर घूमना मेंढक को डराता है सो वह सारी रात चिल्लाता है और उसके

चिल्लाने की वजह से चिड़िया सारी रात सो नहीं पाती। ठीक है, मच्छर को मेरे पास भेजो।"

डरता डरता बेचारा मच्छर आया। जज ने मच्छर से पूछा — "तुम अपने चाकू जैसे तेज़ दॉतों से जुगनू को क्यों डराते हो?"

मच्छर बेचारे के पास इसका कोई जवाब नहीं था। वह नहीं जानता था कि वह जुगनू को क्यों डराता था। सो जज ने मच्छर को सजा सुना दी कि उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया जाये। सजा के अनुसार उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया गया।

तीन दिनों तक जेल में रहने से उन तीन दिनों के अन्दर मच्छर की आवाज जाती रही। उसके बाद मच्छर न तो कभी गा सका और न ही कभी भिनभिना ही सका जैसे उस मच्छर की बहिनें गातीं और भिनभिनातीं थीं।

और उसके बाद वह किसी जानवर या आदमी को काट भी नहीं सका।

8 शेर का बॅटवारा[50]

यह लोक कथा अफ्रीका के इथियोपिया देश की है जिसमें एक शेर हयीनाओं[51] के पकड़े शिकार का इन्साफ से बॅटवारा करता है। इसे पढ़ो और ज़रा बताओ तो कि उसका यह बॅटवारा न्यायपूर्ण था या नहीं।

एक समय की बात है कि एक पहाड़ की तलहटी में एक बूढ़ा हयीना अपने नौ बेटों के साथ रहता था। हालॉकि पिता हयीना की तन्दुरुस्ती ठीक थी पर फिर भी वह दिन रात अपनी गुफा में ही रहना ज़्यादा पसन्द करता था।

उसके बेटे खाना ढूँढने के लिये बाहर जाते रहते थे और उसके लिये खाना लाते रहते थे फिर भी वह अपने पिता होने के कर्त्तव्य को पूरी तरह निबाहता था क्योंकि वह अपने बेटों को सदा अपनी ताकत की और अपने साहस की कहानियॉ सुनाया करता था।

उसने अपने बेटों को यह भी साफ तरीके से बता दिया था कि वह अपने बेटों से भी ऐसी ही आशा करता था कि वे उसके कदमों पर चलें।

एक शाम वे नौ हयीना भाई अपने लिये खाने की तलाश में निकले। वे लोग अभी बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि रास्ते में उनको

[50] A Lion's Division – a folktale of Afar Tribe of Ethiopia, Africa. Read "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi, Delhi, Prabhat Prakashan. 2017.

[51] Hyena – a tiger-like animal. See his picture above.

एक शेर मिल गया। वह शेर उनके पड़ोस में ही रहता था। वे उस शेर से बच कर निकल जाना चाहते थे परन्तु शेर ने उनको बीच रास्ते ही में रोक लिया।

शेर बोला "दोस्तों, क्यों न हम लोग आज साथ साथ शिकार पर चलें। मैं दो घन्टे से इधर उधर घूम रहा हूँ पर आज मुझे कुछ मिला ही नहीं। तुम्हारी सूँघने की ताकत और मेरी शारीरिक ताकत दोनों मिल कर शायद कुछ पा सकें। फिर हम लोग उसे बॉट लेंगे।"

हालॉकि हयीना लोग अपना शिकार खुद ही करना पसन्द करते थे परन्तु यह बात शेर से कहे कौन? आज तो वे फॅस चुके थे सो वे सब शेर के साथ चल दिये।

पर शायद किस्मत उनके साथ थी इसलिए हयीनाओं की सूँघने की ताकत जल्दी ही उन सबको एक पेड़ के पीछे ले गयी जहॉ एक शिकारी ने अपनी शिकार की गई मुर्गियॉ एक थैले में रखी हुई थीं। शेर ने तुरन्त ही वह थैला फाड़ डाला और उसमें से सारी मुर्गियों को बाहर निकाल लिया। वे पूरी दस थीं।

शेर बोला — "देखो न हयीना, हम लोगों का साथ साथ शिकार पर निकलना कितना अच्छा रहा। हम लोगों को तुरन्त ही खाना मिल गया। आओ अब इसे बॉट लेते हैं।"

ऐसा कह कर उसने नौ सबसे अच्छी मोटी मोटी मुर्गियॉ अपने लिये चुन लीं और एक पतली सी छोटी सी मुर्गी उसने हयीनाओं की तरफ उछाल दी।

हालॉकि सब हयीनाओं ने धीरे से गुर्रा कर इस बॅटवारे पर अपना गुस्सा जाहिर किया परन्तु शेर की एक हल्की सी गुर्राहट पर ही सारे हयीना शान्त भी हो गये।

शेर ने हयीनाओं से पूछा — "क्या बात है? आप लोग मेरे इस बॅटवारे से कुछ अनमने से क्यों हैं? क्या मैंने बॅटवारा ठीक से नहीं किया?"

हयीना डर के मारे कोई जवाब नहीं दे पा रहे थे। कुछ देर तो शेर ने उनके जवाब का इन्तजार किया फिर जब उसको उनसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने अपनी नौ मुर्गियॉ उठायीं और अपने घर की तरफ चल दिया।

उधर वे दुखी उदास हयीना भी अपनी पतली सी छोटी सी मुर्गी उठा कर इसलिए जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये ताकि उनके पिता को उनके देर से घर आने की चिन्ता न हो। घर आ कर उन्होंने अपने पिता को अपने शिकार की कहानी सुनायी।

पिता हयीना ने जब अपने बेटों की कहानी सुनी तो उसने अपने बेटों को उनकी सुस्ती और डरपोक होने पर आधे घंटे का एक भाषण दिया और फिर आखीर में कहा "यह तो एक हयीना का एक कौर भी नहीं है। हम सब इसमें से कैसे खायेंगे?"

हयीना का एक बेटा बोला — "पिता जी, हमने तो आपके लिये बहुत ही बढ़िया खाना चुना था पर शेर का हिस्सा हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा निकला। हम क्या करते।"

इसके बाद उसने अपने पिता को सारी कहानी विस्तार से सुना दी कि किस प्रकार रास्ते में उनको शेर मिल गया था और फिर किस प्रकार मुर्गियों का बॅटवारा हुआ।

पिता हयीना सारी कहानी सुनने के बाद तो और भी ज़्यादा गुस्सा हुआ और इतना ज़्यादा गुस्सा हुआ कि उसके बेटों को लगा कि उनके पिता को दौरा पड़ गया है। उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

गुस्से में उसने वह दुबली सी पतली सी मुर्गी उठायी और अपने बेटों से बोला "आओ चलो, मेरे साथ चलो। मैं इस चिड़िया के बदले में अपनी मुर्गियों का हिस्सा शेर से ले कर आता हूॅ। न्याय तो होना ही चाहिये न।

तुमको तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारा पिता अभी भी इतना बहादुर और हिम्मत वाला है कि वह शेर का सामना कर सकता है।"

कह कर हयीना ने अपने सब बेटों को अपने साथ लिया और वे सब शेर की मॉद के पास जा पहुॅचे। पिता हयीना ने शेर को आवाज लगायी — "ए शेर, तुम ज़रा अपनी मॉद से बाहर तो निकलो, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूॅ।"

एक पल की खामोशी के बाद शेर सोता हुआ सा अपनी माँद में से बाहर आया और बाहर आ कर ज़ोर की एक गरज की। फिर बड़ी नम्रता से पिता हयीना से बोला — "दोस्त, तुम्हें कुछ चाहिये क्या?"

पिता हयीना ने अपने गले का थूक सटका, फिर अपना गला साफ किया और वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला — "मेरे दोस्त शेर, मेरे बच्चों ने मुझे बताया कि किस उदारता के साथ तुमने खाने का बँटवारा किया। उस उदारता के लिये धन्यवाद के तौर पर मैं तुम्हें यह दुबली सी और पतली सी मुर्गी भेंट करने आया हूँ।"

कह कर उसने वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी वहीं छोड़ी और अपने घर वापस आ गया।

इस कहानी से भी हमको यही शिक्षा मिलती है कि अपने से ताकतवर दुश्मन के साथ लड़ने झगड़ने और बहस करने से कोई फायदा नहीं।

9 नौ हयीना और एक शेर[52]

यह कहानी भी इथियोपिया देश की ही है और इससे पहले वाली कहानी से काफी मिलती जुलती है। इसे वहॉ की हादिया जनजाति में कहा सुना जाता है। इसमें और पहले वाली कहानी में बस थोड़ा सा ही अन्तर है।

तो इस कहानी को भी पढ़ो और ज़रा बताओ कि इस कहानी में हयीना[53] के साथ शेर के इन्साफ करने का यह तरीका क्या पहले वाली कहानी के इन्साफ करने से ज़्यादा अच्छा है?

एक बार नौ हयीना और एक शेर शिकार करने के लिये निकले और दस गायें ले कर घर आये।

जब वे उनका बॅटवारा करने लगे तो शेर ने उन नौ हयीना से कहा — "हयीना भाई देखो, हम दस लोग शिकार के लिये गये थे और वहॉ से दस गाय ले कर लौटे हैं इसलिये अब हम सब जब अलग अलग हों तो तभी भी हमको दस ही होना चाहिए। है न?

तुम लोग नौ हो तो अगर तुम एक गाय ले लोगे तो तुम लोग दस हो जाओगे और मैं क्योंकि अकेला हूॅ इसलिये दस होने के लिए

[52] Nine Hyena and a Lion – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa. Read "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi, Delhi, Prabhat Prakashan. 2017.

[53] Hyena is a Cheeta-like animal. See its picture above.

मुझे नौ गाय चाहिये सो अगर मैं नौ गाय ले लूँगा तो हम दोनों दस दस हो जायेंगे।"

अब हयीना और शेर का क्या मुकाबला। बेचारे हयीना यह जानते हुए भी कि यह बँटवारा गलत है चुपचाप शेर की बात मान गये और उसको यह जताते हुए कि यही बँटवारा ठीक है वे बेचारे एक गाय ले कर चले आये।

जब बेटे हयीना घर लौटे तो उनके पिता ने अपने उन नौ हयीना बेटों से पूछा — "अरे तुम क्या केवल एक ही गाय ले कर आये हो? यह एक गाय तुम कैसे लाये?"

हयीना बोले — "हम सब आज शेर भाई के साथ मिल कर शिकार करने गये थे। हम सबने मिल कर वहाँ दस गायें पकड़ीं और उनको ले आये।

जब हम उनको ला रहे थे तो शेर भाई बोले — "तुम नौ भाई एक गाय ले लो और मैं अकेला नौ गायें ले लूँ तो हम दोनों की गिनती दस दस हो जायेगी। उन्होंने हमसे जैसा कहा हमने वैसा ही किया और इस तरह हम यह एक गाय ले कर आ गये।"

यह सुन कर उनके पिता ने कहा — "उस शेर ने तो तुमको बेवकूफ बनाया है मेरे बच्चों, चलो तुम मुझे उस शेर के पास ले चलो जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया है। मेरा घोड़ा तैयार करो।"

नौ हयीना बेटों ने मिल कर अपने पिता के लिये घोड़ा तैयार किया और पिता हयीना उस शानदार घोड़े पर सवार हो कर अपने बच्चों के साथ उस शेर के पास चल दिये।

जब वे सब शेर की मॉद के पास पहुँचे तो पिता हयीना ने कहा "वह शेर कहॉ है जिसने तुम्हें बेवकूफ बनाया है? वह इस पहाड़ के किस तरफ रहता है?"

बच्चों ने कहा "पिताजी, वह जो पहाड़ आपको दिखायी दे रहा है वही तो शेर है।"

पिता फिर बोला — "तो उस पहाड़ के बराबर में वह लाल लाल आग क्या है?"

इस पर बच्चे बोले — "वे तो शेर की ऑखें हैं पिता जी।"

वे थोड़ा और आगे बढ़े तो पिता हयीना ने कहा — "शेर जी, नमस्कार।"

शेर ने जवाब दिया — "नमस्कार। कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

पिता हयीना बोला — "मैं इसलिए आया हूँ सरकार ताकि आपको वह गाय भी दे दूँ जो आपने मेरे बच्चों को दी थी और साथ में अपना यह घोड़ा भी।"

बड़ी मुश्किल से वह इतना ही कह सका और शेर की दी हुई गाय और अपना घोड़ा दोनों ही वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग लिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपने से ज़्यादा ताकतवर आदमी के साथ बहस करने से कोई फायदा नहीं।

10 न्याय में अन्तर[54]

न्याय की यह लोक कथा भी अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक शेर और एक हयीना[55] दोनों खाना ढूँढने निकले। शेर को एक बैल मिल गया और हयीना ने एक गाय पकड़ ली।

दोनों अपना अपना शिकार ले कर घर आये और दोनों ने उनको अपने अपने घर के सामने वाले पेड़ से बाँध दिया।

जब हयीना ने गाय पकड़ी तो कुछ ही दिनों में उस गाय के बच्चा होने वाला था। जब शेर ने देखा कि उसके पास तो केवल एक ही बैल है परन्तु हयीना के पास दो जानवर होने वाले हैं तो उसे एक चालाकी सूझी।

जब शेर ने देखा कि अब गाय के बच्चा होने वाला है तो उसने हयीना का ध्यान बँटाने के लिये हयीना से कहा — "ज़रा मेरे लिए थोड़ा सा पानी ला दो मुझे बहुत प्यास लगी है।" हयीना बेचारा उसके इरादों से बेखबर उसके लिए पानी लाने चला गया।

---

[54] Difference in Justice – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, Africa. Read "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi, Delhi, Prabhat Prakashan. 2017.

[55] Hyena is a Cheetah-like animal. See its picture above.

इत्तफाक से इसी बीच गाय ने एक बछड़े को जन्म दिया। शेर बछड़े को गाय के पास से उठा लाया और उसे अपने बैल के पास ला कर बिठा दिया।

थोड़ी देर बाद हयीना जब पानी ले कर वापस लौटा तो उसने शेर को पानी दिया और अपने घर की तरफ चला तो शेर बोला "देखो हयीना मेरे बैल ने एक बछड़े को जन्म दिया है।"

हयीना ने तो इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया था परन्तु शेर की यह बात सुन कर उसको बहुत गुस्सा आया। वह बोला — "शेर भाई, तुम मजाक कर रहे हो। बैल थोड़े ही बच्चों को जन्म देते हैं वह तो गाय देती है। यह मेरी गाय का बछड़ा है तुम्हारे बैल का नहीं।"

शेर बोला — "नहीं हयीना, यह मेरे बैल का बछड़ा है क्योंकि यह मेरे बैल के पास बैठा है।"

हयीना ने फिर नम्रतापूर्वक कहा — "शेर भाई, किसी के पास बैठने से कोई किसी का बच्चा नहीं हो जाता। यह मेरी गाय का बछड़ा है तुम्हारे बैल का नहीं।" पर शेर अपनी ही बात पर अड़ा रहा।

जब शेर नहीं माना तो हयीना ने फैसले के लिए जंगल के सारे जानवरों को इकट्ठा कर लिया क्योंकि उसको शेर की बात पर कतई विश्वास नहीं था कि एक बैल एक बछड़े को जन्म दे सकता है।

जंगल के सारे जानवर शेर और हयीना के घरों के पास आ कर इकट्ठा हो गये पर सभी जानवर शेर से डरते थे इसलिये उन सभी ने एक आवाज में कहा — "यह तो बैल का ही बछड़ा है कोई गाय भला बच्चा कैसे दे सकती है?"

तभी एक बन्दर जो जानवरों की भीड़ में सबसे पीछे खड़ा था आगे निकल आया। शेर ने उससे पूछा — "अरे तुम कहाँ से आ रहे हो?"

बन्दर सिर खुजलाते हुए बोला — "मुझे थोड़ी देर हो गयी सरकार। असल में धरती और आसमान में छेद हो गये थे सो मैं उनमें ज़रा पैबन्द लगा रहा था।"

शेर को उसकी यह बात सुन कर बहुत गुस्सा आया और वह बोला — "बन्दर, यह तुम क्या बेवकूफी की बात करते हो? धरती और आसमान में भला छेद होने का क्या काम? यह कैसे हो सकता है?"

इस पर बन्दर ने घुड़की मारते हुए कहा — "जैसे बैल के बछड़ा हो सकता है उसी तरह से धरती और आसमान में भी तो छेद हो सकते हैं सरकार।"

यह सुन कर तो शेर और भी ज़्यादा गुस्से में भर गया और बन्दर को पकड़ने दौड़ा पर बन्दर तो पहले ही एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ चुका था।

शेर तो गुस्से में था ही। बन्दर को पकड़ने के लिये दौड़ते समय वह एक गड्ढे में गिर गया और मर गया। यह सब देख कर हयीना तो मारे खुशी के वहीं मर गया।

अब बन्दर गाय का अकेला मालिक हो गया। एक हफ्ते तक उसने गाय का गाढ़ा गाढ़ा दूध इकट्ठा किया और आठवें दिन जंगल के सब जानवरों को उस दूध पीने की दावत दी। बड़े ज़ोर शोर से दूध की दावत का इन्तजाम किया गया।

दावत में सबके साथ बन्दर ने भी दूध पिया। वह दूध पीता गया और पीता गया और पीता गया। उसने इतना दूध पिया कि उसका पेट गले तक भर गया।

कुछ दूध उसके पेट पर भी गिर गया। जब बन्दर उस दूध को चाटने के लिये नीचे झुका तो उसका पेट फट गया और वह भी मर गया।

इस पर जंगल के सारे हयीनाओं ने मिल कर सोचा कि इस बन्दर ने हमको दावत पर बुलाया था इसलिए इसको मरने के बाद जमीन में नहीं बल्कि आसमान में दफ़नाना चाहिये।

ऐसा सोच कर वे सभी हयीना एक के ऊपर एक चढ़ते गये और आसमान तक पहुँच गये। तभी सबसे नीचे वाले हयीना के पॉव में एक चींटी ने काट लिया और सारे हयीना नीचे गिर गये।

इस तरह उनकी उस बन्दर को आसमान में दफ़नाने की योजना फेल हो गयी।

11 टर्की और खरगोश को न्याय मिला[56]

न्याय की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका के घाना देश की लोक कथाओं से ली है। इसमें देखो कि वहाँ का सरदार न्याय कैसे करता है।

अफ्रीका के घाना देश में कौंग पहाड़ों[57] और समुद्र के बीच में एक जगह एक टर्की[58] रहता था। वहाँ उसका एक खेत था। उसका वह खेत बहुत अच्छा था क्योंकि वह अपने खेत पर बड़ी मेहनत से काम करता था।

वह अपने खेत पर याम[59] और केला उगाता था। उसके खेत पर बीन्स, भिंडी, बाजरा और तम्बाकू[60] भी उगते थे। उसका खेत हमेशा भरा भरा और हरा भरा रहता था। शायद इसलिये कि वह टर्की अपने खेत पर बहुत मेहनत से काम करता था।

---

[56] Guinea Fowl and Rabbit Get Justice – a folktale from Ghana, Africa. Taken from the Book : The Cow-Tail Swich and Other West African Stories. By Harold Courlander and George Herzog. 1947. Available in Hindi from : hindifolktales@gmail.com

[57] Cong Mountains

[58] Translated for the word “Guinea Fowl”. It is native to Northern Africa. Its feminine is Guineahen. See its picture above.

[59] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries. See its picture above.

[60] Beans, Okra (Ladies Finger), Millet and Tobacco

उससे कुछ दूरी पर एक खरगोश भी रहता था। उसका भी वहॉ एक खेत था। पर वह खेत कुछ बहुत ज़्यादा अच्छा नहीं था क्योंकि वह उस पर ज़्यादा मेहनत से काम नहीं करता था।

जब पौधे बोने का मौसम आता तो वह वहॉ बीज तो लगा देता पर वह कभी अपनी फसल की गुड़ाई आदि कभी नहीं करता। जब फसल काटने का समय आता तो बस वह उसमें से अपनी फसल काटने पहुॅच जाता।

इसी लिये उसके खेत में कोई भी चीज़ जैसे बीन्स, भिंडी या बाजरा कुछ भी ज़्यादा और ज़्यादा अच्छा नहीं होता था।

एक दिन खरगोश बाहर घूमने निकला तो उसको टर्की का खेत दिखायी दे गया। वह तो उसके अपने खेत से कितना ज़्यादा अच्छा खेत था। उसको लगा कि उसका खेत भी ऐसा ही होना चाहिये था।

वह उस खेत के बारे में सोचता ही रहा और फिर कुछ नाराज सा होता हुआ बोला — "ऐसा क्यों होता है कि बारिश केवल इस टर्की के खेत पर ही पड़ती है मेरे खेत पर नहीं और इसी लिये उसकी फसल ज़्यादा अच्छी उगती है मेरी नहीं। यह तो न्याय नहीं है।"

वह इस बारे में सारे दिन सोचता रहा तो एक बहुत ही बढ़िया विचार उसके दिमाग में आया।

उस रात वह अपनी पत्नी और बच्चों को बाहर ले कर आया और उनको टर्की के खेत पर ले गया और वहॉ से फिर उनको वापस भी ले आया। वह उनको दोबारा वहॉ तक ले गया और फिर वापस ले आया।

ऐसा वह सारी रात करता रहा जिससे उसके घर से टर्की के खेत तक एक रास्ता बन गया। बस इसके बाद में उन सबने टर्की के खेत से सब्जियॉ तोड़नी शुरू कर दीं। उन्होंने उनको टोकरी में रखा और घर ले आये। अगले दिन सुबह वे लोग फिर सब्जियॉ तोड़ने चले गये।

जब सुबह को टर्की अपने खेत पर काम करने आया तो उसने देखा कि वहॉ तो खरगोश अपने परिवार के साथ उसकी इतनी बढ़िया फसल तोड़ कर ले जा रहा है जो उसने कितना समय लगा कर उगायी थी।

टर्की बोला — "यह तुम मेरे याम और भिंडी का क्या कर रहे हो? और वैसे भी तुम मेरे खेत पर यहॉ कर क्या रहे हो?"

खरगोश बोला — "तुम्हारा खेत? मुझे लगता है कि तुमसे कहीं गलती हुई है। यह तो मेरा खेत है।"

"हॉ मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है कि कहीं तो कुछ गलती हुई है क्योंकि यह तो मेरा खेत है। मैंने इसमें बीज बोया, मैंने इसकी घास निकाली, मैंने इसमें हल चलाया, इसलिये यह तुम्हारा खेत हो भी कैसे सकता है?"

खरगोश बोला — "तुम इस खेत में कैसे बीज बो सकते थे या कैसे इसकी घास काट सकते थे या कैसे इसमें हल चला सकते थे जबकि इसमें यह सारा काम तो मैंने किया।"

यह सुन कर टर्की बहुत नाराज हुआ। वह खरगोश से ज़ोर से बोला — "अच्छा हो कि तुम मेरे खेत से चले जाओ।"

खरगोश भी ज़ोर से बोला — "मैं कहता हूँ कि तुम मेरे खेत से चले जाओ।"

टर्की बोला — "यह तो तुम बेकार की बात कर रहे हो।"

खरगोश बोला — "वह तो है ही। जब कोई बूढ़ा टर्की आ कर किसी दूसरे के खेत को अपना खेत कहे तो वह बेकार की बात तो होती ही है।"

टर्की फिर बोला — "खरगोश, देखो मैं फिर कह रहा हूँ कि यह खेत मेरा है तुम यहाँ से चले जाओ।"

खरगोश बोला — "नहीं, यह खेत मेरा है मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।"

टर्की बोला — "मैं इस मामले को सरदार के पास ले जाऊँगा।

खरगोश बोला — "ठीक है। चलो सरदार के पास चलते हैं।"

सो दोनों ने अपने अपने हल उठाये और गाँव के सरदार के घर जा पहुँचे।

वहाँ पहुँच कर टर्की बोला — "यह मेरी सब्जियाँ तोड़ रहा था और मेरे खेत पर से हट ही नहीं रहा था।"

खरगोश बोला — "यह मेरा फायदा उठाना चाहता है। मैंने इतनी मेहनत कर के उसमें इतने बढ़िया याम उगाये और यह वहॉ आ कर उनको अपना कह रहा है।"

वे दोनों सरदार को अपनी अपनी दलीलें देते रहे और सरदार उनको सुनता रहा। आखीर में वे तीनों टर्की के खेत पर वहॉ के हालात देखने गये।

सरदार ने खरगोश से पूछा — "तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहॉ है?"

खरगोश ने हाल की बनी हुई सड़क की तरफ इशारा करते हुए कहा — "वह रहा।"

फिर सरदार ने टर्की से पूछा — "और तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहॉ है?"

टर्की बोला — "रास्ता? मेरा तो कोई रास्ता नहीं है।"

सरदार बोला — "पर जब किसी का खेत होता है तो उसका उसके घर से उस खेत तक पहुॅचने का रास्ता तो होता ही है न?"

टर्की कुछ परेशान होता हुआ बोला — "हॉ होता तो है पर मैं तो जब भी अपने खेत पर काम करने आता हूॅ तो बस उड़ कर आ जाता हूॅ। मुझे तो रास्ते की जरूरत ही नहीं है।"

सरदार ने कुछ सोचा और अपना सिर ना में हिलाया और बोला — "जब कोई आदमी अपना खेत बनाता है तो उसको अपने घर से उस खेत तक जाने का रास्ता तो बनाना ही पड़ता है न?

अब क्योंकि इस खेत का रास्ता खरगोश के घर से आता है इस लिये यह खेत तो खरगोश का ही हुआ न।" और वह चला गया।

खरगोश और उसके परिवार ने फिर से उस खेत में से याम उखाड़ने शुरू कर दिये। टर्की इस फैसले से बहुत गुस्सा हुआ और गुस्सा हो कर अपने घर चला गया।

जब खरगोश की बड़ी सी टोकरी सब्जियों से भर गयी तो वह उसको ले कर बाजार चला। टोकरी भारी थी और वह बहुत भारी काम करने का आदी नहीं था क्योंकि वह बहुत आलसी था।

जब वह अपना भारी बोझ ले कर सड़क पर जा रहा था तो वह बीच में थक गया सो उसने अपना वह बोझ जमीन पर रख दिया और सुस्ताने के लिये वहीं सड़क के किनारे बैठ गया।

तभी वहॉ टर्की आ गया और खरगोश से बोला — "आह, दोस्त खरगोश, तुम्हारा बोझ तो बहुत भारी है। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

यह सुन कर खरगोश को बहुत अच्छा लगा। उसको लगा कि टर्की अब उससे गुस्सा नहीं था। वह उससे दोस्ती का बरताव कर रहा था।

वह बोला — "ओह टर्की, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। तुम तो मेरी सब्जियों को ले जाने में एक सच्चे दोस्त की तरह से मेरी सहायता कर रहे हो।"

यह सुन कर टर्की ने वह बोझा अपने सिर पर रखा, खरगोश की तरफ देख कर मुस्कुराया, अपने पंख फड़फड़ाये और वह बोझ ले कर उड़ गया – बाजार की तरफ नहीं बल्कि अपने घर की तरफ।

खरगोश चिल्लाता हुआ टर्की के पीछे भागा पर वह उसको पकड़ नहीं सका। क्योंकि टर्की तो मैदानों के ऊपर से तेज़ी से उड़ कर वहॉ से चला गया था।

इससे खरगोश बहुत नाराज हो गया और सरदार के पास वापस गॉव गया। वहॉ जा कर वह सरदार से बोला — "सरदार, टर्की ने मुझे लूट लिया। वह मेरी सब्जी की टोकरी ले कर उड़ गया।"

सरदार ने टर्की को बुलाया और उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो टर्की बोला — "वह मेरी सब्जियॉ थीं मैं ले गया।"

खरगोश चिल्ला कर बोला — "वे मेरी थीं। मैंने उनको अपने हाथ से तोड़ा था।"

वे फिर आपस में बहस करने लगे और सरदार फिर से सोचने लगा। सोच कर वह बोला — "जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं।"

वहॉ बैठे गॉव के लोग बोले — "हॉ यह तो है।"

सरदार ने फिर खरगोश को बुलाया और कहा — "यहॉ तो आओ खरगोश में तुम्हारा सिर देखूॅ।"

खरगोश सरदार के पास गया तो सरदार ने उसके सिर पर हाथ फेरा और मुँह से ना की आवाज निकालते हुए कहा — "नहीं नहीं। तुम्हारे बाल तो काफी मोटे और लम्बे हैं यह तुम्हारा बोझ नहीं हो सकता।"

फिर सरदार ने टर्की को बुलाया और कहा — "आओ टर्की अब मैं तुम्हारा सिर देखता हूँ।"

टर्की ने अपना सिर सरदार को दिखाया। सरदार ने उसके सिर पर भी हाथ फेरा तो उसके सिर पर तो ज़रा से भी बाल नहीं थे।

सरदार बोला — "यह बोझ तुम्हारा है क्योंकि तुम्हारा सिर तो बिल्कुल ही गंजा है।"

खरगोश ने शिकायत की — "पर टर्की के सिर पर तो पहले से ही कोई बाल नहीं हैं। वह तो हमेशा से ही गंजा है।"

सरदार बोला — "जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं इसी लिये टर्की का सिर गंजा है। और इसी लिये सब्जी की यह टोकरी भी टर्की की ही है।"

यह फैसला सुन कर वे दोनों वहाँ से चले गये।

खरगोश ने खेत पर जा कर सब्जी की दूसरी टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर से बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। टर्की फिर ऊपर से कूद लगा कर नीचे आया और उस टोकरी को ले कर उड़ गया।

खरगोश ने फिर दूसरी टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। फिर वैसा ही हुआ। टर्की फिर से आया और फिर से अपनी सब्जी ले कर उड़ गया।

खरगोश ने सोचा कि अब सरदार के पास जाने से कोई फायदा नहीं था क्योंकि टर्की का सिर तो बिल्कुल ही गंजा था और वह अपना फैसला सुना ही चुका था कि रोज रोज भारी बोझा ढोने से सिर के बाल बहुत पतले हो जाते हैं और उसके बाल तो बहुत मोटे और लम्बे थे सो वह टोकरी तो किसी भी हालत में उसकी हो ही नहीं सकती थी।

आखिर खरगोश टर्की की सब्जियॉ तोड़ते तोड़ते थक गया और वह अपने ही खेत पर काम करने चला गया।

इसी लिये कभी कभी लोग कहते हैं कि "सबसे छोटा रास्ता कहीं नहीं जाता।"

12 बतखों का बॅटवारा[61]

यह लोक कथा एशिया के रूस देश में कही सुनी जाती है। रूस की यह लोक कथा एक बहुत ही अक्लमन्दी की और बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

यह कथा केवल बतख के बॅटवारे की ही नहीं है बल्कि इस बात की भी है कि उसका बॅटवारा कितने न्यायपूर्वक और होशियारी से किया गया है।

यह तुम जब इस कहानी को पूरा पढ़ लोगे तब सोचोगे "क्या मैं इस एक बतख का बॅटवारा इस तरह कर सकता था या कर सकती थी?" नहीं कभी नहीं।

यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है जब एक अमीर रूसी भला आदमी दो किसानों के मकानों के बीच वाले मकान में रहता था।

उनमें से एक किसान के पास इतने सारे रूबल[62] थे कि वह बहुत अच्छी तरह से रह सकता था जबकि दूसरे किसान के पास इतने कम रूबल थे कि वह अपने परिवार का गुजारा भी बहुत मुश्किल से चला पाता था।

---

[61] Creative Division: the Peasant and the Geese – a folktale from Russia, Asia.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=57
Adopted, retold and written by Mike Lockett. Read many more Russian stories in books in Hindi by Sushma Gupta available from hindifolktales@gmail.com . Ask for the catalog.

[62] Ruble or Rouble – name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA…

गरीब किसान का परिवार भी बहुत बड़ा था और उसका खेत छोटा था। इसके बाद भी उसको जो कुछ भी काम अपने खेत पर करना चाहिये था उसको करने में उसको बहुत देर लग जाती थी।

उसके बच्चे उसकी कोई भी सहायता कराने के लिये बहुत छोटे थे और उसकी पत्नी का सारा दिन उन बच्चों की देखभाल में ही निकल जाता था।

उसके पास इतना पैसा भी नहीं था कि वह किसी को अपने साथ काम करने के लिये नौकर रख लेता। इसलिये उसको सुबह से ले कर शाम तक काम करना पड़ता। बल्कि कभी कभी तो रात को भी काम करना पड़ता।

हर रोज रात को जब अँधेरा हो जाता तो दोनों पति पत्नी अपनी परेशानियों पर बात करते और उनका हल निकालने की कोशिश करते पर कुछ सोच न पाते।

एक रात पति ने पत्नी से कहा — "अब हमारे पास केवल इतना ही अनाज है कि हम बच्चों को सुबह को उसका दलिया बना कर खिला सकें। बतख को खिलाने के लिये तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

हर हालत में खुश रहने वाली पत्नी बोली — "यह अच्छा है। क्योंकि हमारे पास बतख में डालने के लिये नमक भी नहीं है और न ही उसमें भरने के लिये रोटी है इसलिये हमारे बच्चे अपनी सुबह भरे

पेट शुरू करेंगे और हमको कल सुबह तक बतख की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

सुबह किसान की पत्नी को एक विचार आया तो वह किसान से बोली — "क्योंकि हमारे पास बतख के लिये खाना नहीं है, नमक और रोटी भी नहीं है तो क्यों न हम उसको अपने पड़ोसी को दे दें। हो सकता है कि वह हमको उसके बदले में ही कुछ दे दे।"

किसान अपनी पत्नी से बोला — "तुम हमेशा की तरह से बहुत ही चतुर हो।" कह कर वह बतख को अपनी बगल में दबा कर अपने अमीर पड़ोसी के पास ले चला।

उसका अमीर पड़ोसी अपने बहुत बड़े घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। उस किसान को आते देख कर बोला — "आओ आओ। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

उसने सोचा कि उसका गरीब पड़ोसी शायद कुछ पैसे या खाना माँगने आया होगा और उसके लिये वह उसको मना करने वाला था क्योंकि कोई आदमी किसी से पैसे ले कर अमीर नहीं होता।

किसान बोला — "जनाब, मैं आपके लिये एक भेंट ले कर आया हूँ।"

"भेंट? और मेरे लिये? पर तुम तो बहुत गरीब हो। एक गरीब आदमी एक अमीर आदमी को भेंट दे यह ठीक नहीं है।" फिर उसको शर्म आयी कि उसने उस गरीब के बारे में यह सोचा कि वह उससे खाना या पैसा माँगने आया होगा।

अपनी इस शर्म को छिपाने के लिये उसने उस गरीब की भेंट वापस करने की कोशिश करते हुए कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बतख है और मेरा परिवार बहुत बड़ा है हम इसका क्या करेंगे।

खाने के लिये मैं हूँ, मेरी एक पत्नी है, दो बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं। यह बतख तो हमारे एक बार के खाने के लिये भी काफी नहीं होगी इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम इसको वापस ले जाओ।"

गरीब किसान मुस्कुरा कर बोला — "जनाब, अगर आप इस बतख को आज रात को ही पकाने का सोचते हों तो मैं आपको बताता हूँ कि इस बतख को सब लोगों में ठीक से कैसे बाँटा जाये ताकि हर एक को इसका काफी माँस मिल सके। मैं शाम को आ कर आपको यह बताऊँगा कि इस बतख को कैसे बाँटना है।"

वह अमीर आदमी यह सुन कर यह जानने के लिये बहुत ही उत्सुक हो गया कि देखा जाये वह किसान उस एक बतख को उन छह लोगों में कैसे बाँटेगा। सो वह उस बतख को अन्दर ले गया और अपने रसोइये को उसको पकाने के लिये दे दी।

वह वापस लौट कर किसान के पास आया और बोला — "तुम्हारी भेंट के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। आज शाम को हम तुम्हारी बतख खायेंगे। मैं बतख को हम सबमें बाँटने की होशियारी देखने के लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगा।"

सो किसान उस बतख को उस अमीर आदमी को दे कर घर चला गया। वह और उसकी पत्नी सारा दिन अपने खेत और बच्चों

के काम में लगे रहे और उस बतख को कैसे उस परिवार में बॉटा जाये इसी बात पर विचार करते रहे।

शाम को खेत से आ कर वह किसान दोबारा नहाया और अपनी सबसे साफ कमीज पहनी और ठीक से कपड़े पहन कर उस अमीर आदमी के घर बतख बॉटने के लिये चल दिया।

उस भले आदमी ने किसान के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि वह अपने हाथ में एक खाली प्लेट और एक तेज़ चाकू लिये खड़ा था।

रसोइये ने बतख को रोटी, अंडे, मसाले और मुशरूम से भर रखा था सो जितनी बड़ी बतख उस किसान ने उस आदमी को दी थी इस समय वह उससे साइज में दोगुनी लग रही थी।

मेज पर उस बतख के साथ साथ बहुत सारी सब्जियॉ, सूप और भी बहुत सारा खाने का सामान रखा हुआ था सो अगर वह बतख उस मेज पर न भी होती तो भी वहॉ खाने की कोई कमी नहीं थी।

सच तो यह था कि वहॉ वह खाना देख कर उस किसान के मुँह में पानी भर आया। वहॉ बैठे सभी लोग उस गरीब आदमी के खरचे पर मजा लूटने के लिये बैठे थे।

उस किसान ने अपना चाकू उठा लिया और उस आदमी से कहा — "आप इस परिवार के सरदार हैं इसलिये आपको इसका सिर

मिलना चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख का सिर काट कर आदमी की प्लेट में रख दिया।

फिर उसने उसकी पत्नी से कहा — "आप अपने पति के सामने बैठती हैं इसलिये आपको इसकी पूँछ मिलनी चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख की पूँछ काटी और उसकी पत्नी की प्लेट में रख दी।

फिर उसने उसके दोनों बेटों से कहा — "तुम दोनों चारों तरफ भागते रहते हो इससे तुम्हारे पैर घिसते हैं इसलिये तुमको बतख के पैरों की जरूरत है।"

इतना कह कर उसने बतख के दोनों पैर काटे और उसके दोनों बेटों को दे दिये।

फिर उसने बतख के दोनों पंख काटे और उनको उस आदमी की दोनों बेटियों की प्लेटों में रखते हुए बोला — "तुम दोनों बिल्कुल देवदूत[63] की तरह लगती हो पर तुम्हारे पास पंख नहीं हैं।

साथ में मुझे यह भी पता है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दोनों उड़ जाओगी और शादी कर लोगी। उस समय के लिये मैं तुमको ये पंख देता हूँ।"

उसके बाद किसान ने तुरन्त खाने के वे कटोरे उठाये जो रसोइये ने वहाँ ला कर रखे थे और उनका खाना बराबर बराबर सबकी प्लेटों में बाँट दिया।

[63] Translated for the word "Angel"

फिर बोला — "अब आप सब देखें कि आप सब लोगों के पास बतख का बराबर का हिस्सा है और प्लेट भर कर खूब खाना है।

और क्योंकि मैं केवल एक गरीब किसान हूँ इसलिये मैं वह ले लेता हूँ जो बच गया है ताकि आप लोगों में इस बात पर झगड़ा न हो कि बचा हुआ कौन लेगा।"

कह कर उसने वहाँ से बतख का सबसे बड़ा हिस्सा, आलू, सब्जियाँ, रोटी आदि उठायीं और दरवाजे की तरफ चल दिया।

एक बतख का इस तरह बँटवारा देख कर वह भला आदमी और उसका परिवार ज़ोर से ठहाका मार कर हँसे बिना न रह सके।

आदमी उस किसान से बोला — "यह तो हमारा सबसे अच्छा मनोरंजन था जो हमने बरसों में नहीं किया। मैं तुमको तुम्हारी इस बतख के बदले में जरूर ही कुछ दूँगा।"

कह कर उसने रूबल भरा एक छोटा सा थैला निकाल कर उस किसान को दे दिया जो उस किसान ने खुशी से ले लिया।

इस तरह वह किसान अपने परिवार के लिये खाना और पैसा दोनों ले कर घर लौटा। इस पैसे से उसने बच्चों के दूध पीने के लिये एक गाय खरीदी और अपना हल चलाने और मशीन घुमाने और गाड़ी खींचने के लिये एक बैल खरीदा।

इन जानवरों की सहायता से अब वह ज़्यादा पैसा कमा सकता था और अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय खर्च कर सकता था।

यह कहानी यहीं खत्म हो सकती थी जैसा कि दूसरी कहानियों में होता है जब तक कि एक आदमी की अच्छी किस्मत देख कर दूसरा कोई आदमी जलने वाला न हो।

सो इस कहानी में यह जलने वाला वह दूसरा अमीर किसान था जो उस भले आदमी के दूसरी तरफ रहता था इसलिये अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

उस अमीर किसान ने उस गरीब किसान की नयी गाय और बैल देखे। उसने यह भी देखा कि उसके खेत भी बहुत अच्छे हो रहे हैं और उसका पड़ोसी हमेशा काम करने की बजाय अब अपने बच्चों के साथ खेल भी रहा है तो एक दिन वह इसका राज़ जानने के लिये उसके पास जा पहुँचा।

उसने उस किसान की पत्नी से बहुत ही बुरे ढंग से पूछा — "तुमको गाय और बैल खरीदने के लिये अचानक ये रूबल कहाँ से मिल गये? क्या तुम्हारे परिवार में कोई मर गया है जो तुमको यह सब पैसे दे गया?"

पत्नी बोली — "हे भगवान नहीं नहीं। आप ऐसा न कहें। हमारे परिवार में कोई नहीं मरा।

मेरे पति ने अपने पड़ोसी भले आदमी को खाने के लिये एक बतख दी थी। वह भला आदमी उस बतख को ले कर इतना खुश हुआ कि उसने हमको एक थैला भर कर रूबल दे दिये। हमने वही पैसा तरीके से खर्च कर के अपनी ज़िन्दगी सुधारी हैं।"

यह सुन कर वह अमीर किसान बहुत परेशान हुआ। वह जल्दी जल्दी घर आया और अपनी पत्नी को अपने पड़ोसी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

वे दोनों ही उससे जल रहे थे सो दोनों ही किसी ऐसी अच्छी भेंट के बारे में सोचने लगे जिसको वे उस भले आदमी को दे सकें ताकि वह उनको भी सिक्कों का एक थैला दे सके।

उस अमीर किसान ने कहा — "अगर वह अपनी एक पतली सी बतख दे कर उससे एक थैला सिक्के ले सकता है तो हम अपनी पॉचों मोटी बतखें उसको भेंट में दे देंगे। उन बतखों के हमें उससे भी ज़्यादा पैसे मिलेंगे।"

सो उस प्लान के अनुसार उसके अगले दिन ही उस अमीर किसान ने अपने हाथ में एक डंडी ली और वह घर खोला जिनमें वह अपनी बतखें रखता था।

उसने अपनी बतखों के पीछे वह डंडी हिलायी, उनको उस घर में से बाहर निकाला और उन सबको वह उस भले आदमी के घर के दरवाजे पर ले गया।

पहले की तरह से उस भले आदमी ने अपने घर का दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

अमीर किसान बोला — "मैं आपके लिये ये बतखें भेंट ले कर आया हूँ।"

भला आदमी बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको मुझे भेंट देनी चाहिये क्योंकि तुम मुझसे गरीब हो।"

अमीर किसान जल्दी से बोला — "पर आपने मेरे पड़ोसी से तो उसकी दी हुई भेंट ले ली है।"

भला आदमी समझ गया कि मामला क्या है। वह जान गया कि यह आदमी उस गरीब आदमी को दिये गये रूबल के थैले से जल रहा है।

सो वह बोला — "ठीक है मैं तुम्हारी भेंट ले तो लेता हूँ और तुमको इसका इनाम भी दे दूँगा पर तुमको इन पॉच बतखों को मेरी छह लोगों के परिवार में न्यायपूर्वक बॉटना पड़ेगा।"

अमीर किसान कुछ सोच कर बोला — "जनाब, मुझे नहीं लगता कि आप इन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक बॉट सकते हैं।"

भला आदमी बोला — "ठीक है तब हम तुम्हारे उस होशियार दोस्त को बुलवाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वह यह काम अवश्य ही ठीक से करेगा।"

यह कह कर उसने अपना एक नौकर उस गरीब किसान के घर उसको लाने के लिये भेज दिया। नौकर किसान को ले कर जल्दी ही आ गया।

अमीर किसान को अभी भी शर्म आ रही थी कि वह उन बतखों को जैसा कि उस भले आदमी ने उससे कहा था बॉट नहीं पा रहा

था। पर उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पड़ोसी भी उन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक नहीं बॉट सकेगा।

भले आदमी ने उस गरीब किसान से कहा — "पिछली बार तुम ने एक बतख को बहुत ही होशियारी से हम छह लोगों में बॉट दिया था। शायद आज तुम ये पॉच बतखें हम छह लोगों में बॉट सको।"

इस पर उस गरीब किसान ने एक बतख उठायी और उस भले आदमी को दे दी और बोला — "आप और आपकी पत्नी का एक जोड़ा है। इस एक बतख को मिला कर आप अब तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसके दोनों बेटों को दे दी और बोला — "तुम दोनों भाई भी एक जोड़ा हो सो इस बतख को मिला कर तुम लोग भी तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसकी दोनों बेटियों को दे दी और बोला — "तुम दोनों प्यारी बेटियॉ भी एक जोड़ा हो। तुमको भी मैं एक बतख देता हूॅ जिसको मिला कर अब तुम भी तीन हो गयी हो।"

अब उसने बची हुई दो बतखें पकड़ कर ऊपर उठा लीं और बोला — "ये दोनों बतखें भी एक जोड़ा हैं। ये बतखें मैं रख लेता हूॅ जिनको मिला कर मैं भी तीन हो जाऊॅगा।

जनाब, आपने देखा कि अब हर एक तीन तीन का एक सैट हो गया। आपकी पॉच बतखें सबमें बराबर बराबर बॅट गयी हैं।"

उसके बॅटवारे का ढंग देख कर वहॉ बैठे सब लोग फिर ज़ोर से हॅस पड़े – सिवाय उस अमीर किसान के जिसके पास अब पॉच बतखें उन बतखों से कम थीं जितनी कि उसके पास पहले थीं।

भले आदमी ने उस गरीब किसान को रूबल का पहले जैसा एक और थैला दिया। पर वह उस अमीर किसान की तरफ पलटा और उसको भी उसकी बतखों के लिये पैसे दिये ताकि वे तीनों अच्छे दोस्त रह सकें।

13 शैम्याक का न्याय[64]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में आस पास में दो भाई रहते थे। उनमें से एक भाई अमीर था और एक भाई गरीब था।

एक दिन गरीब भाई अपने अमीर भाई से एक घोड़ा मॉगने गया ताकि वह उसके ऊपर जंगल से कुछ लकड़ी काट कर रख कर ला सके। उसके भाई ने घोड़ा दे दिया पर गरीब भाई ने उससे घोड़े का कालर भी मॉगा। इस पर अमीर भाई नाराज हो गया और उसको घोड़े का कालर नहीं दिया।

इस पर गरीब भाई ने उस घोड़े के पीछे स्ले[65] लगायी और उसको जंगल ले चला। वहॉ जा कर उसने इतनी सारी लकड़ी काटी कि घोड़ा उसको मुश्किल से खींच पा रहा था।

---

[64] The Judgment of Shemyak – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_14.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.
This tale is given in the book "Russian Popular Tales" also, by Anton Dietrich. It is availabale at https://www.google.com/search?tbm=bks&q=russian+popular+tales
["Tale of Shemyaka's Trial" is one of the best-known 17th century Russian novels.]
Read many more Russian stories in books in Hindi by Sushma Gupta available from hindifolktales@gmail.com . Ask for the catalog.

[65] Sleigh is a wheelless vehicle which is used in icy regions and is drawn by horses or powerful dogs. See its picture above.

जब वह घर आया तो उसने अपने घर का फाटक खोला पर उसका नीचे वाला तख्ता हटाना भूल गया जो उसके इधर उधर के खम्भों में बरफ अन्दर आने से बचाने के लिये लगे हुए थे। घोड़ा उस तख्ते से टकराया तो उसकी पूँछ कट गयी।

अपना काम खत्म होने के बाद गरीब आदमी अपने भाई का घोड़ा वापस करने गया। पर जब उसके भाई ने अपना घोड़ा बिना पूँछ के देखा तो उसने उसको लेने से मना कर दिया और जज शैम्याक के पास जा कर इस बात की शिकायत करने का फैसला किया।

गरीब आदमी को लगा कि अब जज उसको बुला भेजेगा और वह तो अब मुसीबत में पड़ जायेगा। वह बहुत देर तक सोचता रहा। उसके पास देने के लिये कुछ नहीं था सो उसने अपने भाई के साथ पैदल जाने का ही फैसला किया।

जब वे लोग जा रहे थे तो रात हो गयी सो वे एक सौदागर के घर रुके। अमीर भाई रात के खाने के लिये ले जाया गया और उसका ठीक से स्वागत हुआ। पर गरीब भाई को खाने को कुछ भी नहीं मिला और उसको रात को अँगीठी के ऊपर सोने को मिला।

सारी रात वह भूख से करवटें बदलता रहा। और आखिर वह अँगीठी पर से नीचे एक पालने में गिर पड़ा जो उसके बराबर में ही रखा हुआ था। उस पालने में सौदागर का बच्चा था। उसके गिरने

से वह बच्चा मर गया। जब सौदागर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

अगली सुबह उनके साथ गरीब भाई को सजा दिलवाने के लिये वह भी जज शैम्याक के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

अब ऐसा हुआ कि शहर जाने के रास्ते में तीनों को एक पुल पर से गुजरना था। गरीब भाई इस सबसे इतना ज़्यादा डरा हुआ था कि यह सोचते ही कि शैम्याक उसके साथ जाने क्या करेगा वह अपनी ज़िन्दगी खत्म करने के लिये पुल से नीचे कूद गया।

पर उसी समय एक नौजवान अपने बीमार पिता को नहलाने के लिये नहाने के घर ले जा रहा था। पुल से नीचे कूदते ही वह गरीब भाई उसकी स्ले में जा पड़ा और उसके गिरने से उस नौजवान का बीमार पिता कुचल गया और मर गया।

सो यह नौजवान बेटा भी सौदागर और अमीर भाई के साथ साथ यह शिकायत करने के लिये शैम्याक के पास चल दिया कि इस आदमी ने उसके पिता को मार डाला।

अमीर आदमी जज शैम्याक के सामने पहले आया और उसने शिकायत की कि उसके भाई ने उसके घोड़े की पूँछ खींच ली है।

गरीब भाई ने एक पत्थर लिया उसको एक तौलिये में बाँधा और अपने भाई के पीछे खड़े हो कर उसको अपने हाथ में जज को मारने इरादे से जज के सामने ऊपर उठाया कि अगर उसने उसकी तरफ अपना फैसला न सुनाया तो वह जज को उससे मार देगा।

जज को लगा कि वह पोटली रूबल[66] से भरी हुई थी और अगर उसने उस गरीब भाई की तरफ अपना फैसला सुनाया तो वह उसको वह रूबल से भरा तौलिया दे देगा।

सो उसने अमीर भाई से कहा कि वह अपना घोड़ा अपने भाई के पास ही रहने दे जब तक उसकी पूँछ फिर से बढ़ती है।

इसके बाद सौदागर अपने बच्चे के मरने की शिकायत करने के लिये आया तो गरीब भाई ने फिर से उसी तौलिये को ऊपर उठाया तो जज शैम्याक को फिर से यही लगा कि यह इस मामले के लिये भी मुझे कुछ पैसे देगा।

सो उसने फैसला सुनाया — "ओ सौदागर, तुमको अपनी पत्नी को इस गरीब भाई के घर भेज देना चाहिये जब तक इसके वहाँ बच्चा होता है। जब इसके बच्चा हो जायेगा तो फिर तुम पहले की ही तरह हो जाओगे।"

इसके बाद वह बेटा आया जिसके पिता के ऊपर यह गरीब भाई पुल पर से गिर पड़ा था और इस गिरने की वजह से वह मर गया था। उसने शिकायत की कि इस आदमी ने उसके पिता को कुचल कर मार डाला था।

गरीब भाई ने अपनी पत्थर बँधी पोटली वाला हाथ फिर जज के सामने उठाया तो जज को लगा कि यह आदमी इस मामले के लिये भी मुझे सौ रूबल देगा।

[66] Rouble is the currency of Russia.

सो उसने फैसला सुनाया कि वह बेटा उसी पुल पर खड़ा हो जाये और जब वह गरीब आदमी उस पुल के नीचे से गुजरे तो वह भी उसी तरीके से उस गरीब आदमी के ऊपर कूद कर उसको मार दे।

जज की सुनायी सजा के अनुसार गरीब भाई अमीर भाई के पास बिना उसका बिना पूँछ का घोड़ा लेने के लिये आया ताकि वह उसको तब तक रख सके जब तक उसकी पूँछ बढ़ती है।

पर अमीर भाई अपना घोड़ा देने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था सो बजाय अपना घोड़ा देने के उसने अपने भाई को पॉच रूबल, तीन बुशैल[67] मक्का और एक दूध देती हुई बकरी दे कर मामला सिलटाया।

फिर वह गरीब भाई सौदागर की पत्नी लेने के लिये सौदागर के पास गया तो सौदागर भी किसी भी हालत में अपनी पत्नी उसे देने को तैयार नहीं था सो उसने उसको पचास रूबल, एक गाय उसके बछड़े सहित और एक घोड़ी उसके बच्चे के साथ दे कर अपना मामला सिलटाया।

अब वह गरीब भाई उस बेटे के पास गया जिसका पिता उससे मर गया था और बोला — "आओ, जज ने कहा है कि तुम उसी

[67] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See its picture above.

जगह पर खड़े हो जाओ जहॉ मैं खड़ा हुआ था और मैं उसके नीचे खड़ा होता हूॅ। फिर तुम मेरे ऊपर कूदो और मुझे मार दो।"

बेटे ने सोचा "कौन जानता है कि जब मैं पुल से नीचे कूदूॅ तो मै इसके ऊपर ही गिरूॅ। मैं इसके ऊपर गिरने की जगह नीचे जमीन पर भी तो गिर सकता हूॅ और खुद भी तो मर सकता हूॅ।"

सो उसने उस गरीब भाई से शान्ति से समझौता कर लिया। उसने उसको दो सौ रूबल, एक घोड़ा और पॉच माप मक्का दी और उससे छुटकारा पाया।

14 लोकी और बौने[68]

यह कथा नौर्स या नौरडिक या स्कैन्डिनेवियन देशों की दंत कथाओं से ली गयी है। नौर्स देशों में यूरोप के उत्तरी तरफ के पॉच देश आते हैं – आइसलैंड, फ़िनलैंड, स्वीडन, डेनमार्क और नौर्वे। लोकी इन्हीं नौरडिक देशों का एक शरारती देवता है।

यह दंत कथा बहुत कुछ शेक्सपीयर की कहानी "वेनिस का सौदागर" से मिलती जुलती है जो इसी किताब में इससे पहले दी हुई है।

एक बार लोकी देवताओं के लिये कुछ हथियार और सवारियॉ बनवाना चाहता था। उसने अपनी शरारती आदत के अनुसार दो जुड़वॉ बौने भाई पकड़े, ब्रौक और ईट्री[69]।

इन दोनों भाइयों से पहले इवैल्डी के बच्चों ने जो सारे बौने ही कहलाते थे फ्रे के लिये स्किडब्लैडनीर नाम का एक जहाज, गंगनीर नाम का भाला ओडिन के लिये और सुनहरी नकली बाल[70] सिफ़ के लिये बनाये थे।

लोकी को शैतानी सूझी। उसने दो बौने भाइयों – ब्रौक और ईट्री को इवैल्डी के बौने बच्चों से लड़ाने के लिये उनके साथ चाल

---

[68] Loki and Dwarves. Read many more myths of Norse countries in the book : "Norse: Dant Kathayen", by Sushma Gupta written in Hindi language. Available from : hindifolktales@gmail.com

[69] Brokk and Eitri – two dwarves

[70] Skidbladnir is a ship for Frey; Gungnir is spear of the god Odin; Sif, the wife od Odin, had beautiful golden hair

खेली। वह चाहता था कि दोनों बौने देवताओं के लिये एक दूसरे के मुकाबले में हथियार और सवारियॉ बनायें।

इस बारे में उसने अपना सिर दॉव पर लगाया और ब्रौक और ईट्री को चुनौती दी कि वे इवैल्डी के बौने बच्चों से अच्छी भेंटें नहीं बना सकते थे, जैसे स्किडब्लैडनिर जहाज, गंगनिर भाला और सिफ़ के सुनहरी बाल।

लोकी ने शरारत करने के लिये सिफ़ के सुनहरी बाल चोरी कर लिये थे इसलिये उसको उसके बाल लौटाने के लिये नकली बाल तो चाहिये ही थे न।

दोनों भाइयों ने उसकी यह चुनौती स्वीकार कर ली और दोनों भाई अपने काम पर लग गये।

ईट्री ने अपनी वर्कशाप की भट्टी में एक सूअर की खाल ला कर रखी और अपने भाई ब्रौक से कहा कि वह अपनी धौंकनी चलाना रोके नहीं, लगतार उसको चलाता ही रहे जब तक कि वह आ कर उसमें से उस खाल को निकाल न ले।

जब ब्रौक अपनी धौंकनी चला रहा था तो उसका काम बिगाड़ने के लिये लोकी एक मक्खी का रूप रख कर आया और ब्रौक की बॉह पर काट लिया।

ब्रौक ने उसको महसूस तो किया पर फिर भी ब्रौक रुका नहीं और अपनी धौंकनी चलाता ही रहा। जब ईट्री का वह सूअर की

खाल को भट्टी में रखने का समय खत्म हो गया तो उसने आ कर फ्रे का चमकीले बालों वाला सूअर गुलिनबर्सटी[71] निकाला।

उसके बाद ईट्री ने उस भट्टी में कुछ सोना रखा और ब्रौक को वही करने के लिये कहा कि वह अपना काम रोके नहीं और जब तक वह धौंकनी चलाता रहे जब तक वह आ कर उस सोने को वहॉ से निकाल न ले।

पर इस बार भी लोकी एक मक्खी बन कर वहॉ आया और ईट्री की गर्दन में उसने उसकी बॉह के मुकाबले में दोगुनी ज़ोर से दो बार काटा।

इस बार ब्रौक को बहुत दर्द हुआ पर ब्रौक उस दर्द को सहते हुए भी अपनी धौंकनी चलाता ही रहा। जब समय हो गया तो ईट्री ने आ कर उसमें से ओडिन के लिये बनायी हुई ड्रौपनीर[72] नाम की ऑगूठी निकाली। यह ऑगूठी हर नवीं रात[73] को अपनी तरह की आठ ऑगूठियॉ बनाती है।

सबसे आखीर में ईट्री ने अपनी भट्टी में लोहा रखा और फिर ब्रौक से वही बोला कि वह अपनी धौंकनी चलाना बन्द न करे जब तक वह वहॉ आ कर अपना लोहा न निकाल ले।

---

[71] Mjolnir named hammer and Gullinbursti named boar for Frey. Frey is the brother of Freya.

[72] Draupnir named ring for Odin

[73] Ninth night - The numbers 3 and 9 are significant numbers in Norse mythology and paganism. Both numbers (and their multiples) appear throughout surviving attestations of Norse paganism, in both mythology and cultic practice. While the number 3 appears significant in many cultures, Norse mythology appears to put special emphasis on the number 9.

पर लोकी तीसरी बार फिर से मक्खी के रूप में आया और ईट्री की पलक पर इतनी ज़ोर से काटा कि उसके खून निकल आया। इससे ब्रौक बस इतनी ही देर के लिये अपनी धौंकनी रोकने पर मजबूर हो गया जितनी देर में वह अपना बहता हुआ खून पोंछे।

इस बार ईट्री जब भट्टी में से अपना सामान निकालने के लिये लौटा तो उस भट्टी में से उसने जौलनीर नाम का हथौड़ा[74] निकाला।

उसने देखा कि उसका हैन्डिल जितना लम्बा उसने बनाने का सोचा था उससे तो वह बहुत छोटा है। इस छोटे हैन्डिल की वजह से अब उसको केवल एक ही हाथ से इस्तेमाल किया जा सकता था।

हथौड़े की इस कमी के बावजूद दोनों बौने भाइयों, ईट्री और ब्रौक, ने लोकी से शर्त जीत ली और लोकी अपनी शर्त हार गया सो वे अपनी शर्त के अनुसार लोकी का सिर लेने के लिये पहुँच गये।

अब लोकी की अपने सिर को बचाने की बारी थी। सो जब वे उसका सिर लेने के लिये उसके पास आये तो वह बोला — "तुम लोगों को मेरा सिर लेने के लिये मेरी गर्दन काटनी पड़ेगी। और मेरी गर्दन काटना तो शर्त में शामिल नहीं था।

और क्योंकि मेरा सिर काटने से मेरी गर्दन को भारी नुकसान पहुँच सकता है इसलिये भी तुम लोगों को मेरा सिर काटने से पहले यह सब अच्छी तरह से सोच लेना चाहिये।"

[74] Mjollnir hammer for Thor

यह सुन कर लोकी का सिर काटने की बजाय ब्रौक ने उसको सजा देने के लिये कुछ समय के लिये उसके होठ सिल दिये थे। इस तरह से एक छोटी सी बात ने लोकी की जान बचायी।

15 सूप की चुरायी हुई खुशबू[75]

न्याय की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है। इसका न्याय तो बहुत ही बढ़िया है। हमें यकीन है कि ऐसा न्याय तो तुम सोच भी नहीं सकते।

एक बार इपेटुमोडु गॉव[76] में एक स्त्री रहती थी। वह इतनी ज़्यादा गरीब थी कि उसके पास अपना ऐब्बा[77] खाने के लिये कोई सूप नहीं था।

ऐब्बा खाना नाइजीरिया का एक ऐसा चिकना खाना होता है जो कसावा के आटे से बनाया जाता है। यह थोड़ा सा बेस्वाद होता है और बिना सूप के नहीं खाया जा सकता। इस स्त्री के घर के सामने ही सड़क के उस पार एक और स्त्री रहती थी जो अपने खाने के लिये इगूसी सूप[78] रोज बनाती थी।

गरीब होने की वजह से यह स्त्री दिन में केवल एक बार ही खाना खा पाती थी। एक दिन जब यह गरीब स्त्री अपना खाना खाने बैठी जो एक छोटा सा कटोरा ऐब्बा था तो इसके नथुनों में पड़ोसन के इगूसी सूप की खुशबू पहुॅची।

---

[75] The Stolen Soup Aroma – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Seb Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[76] Ipetumodu village

[77] Ebba – a Nigerian food to be eaten with soup. Ebba is a starchy food made from Cassava flour and it is unappetizing to eat all by itself.

[78] Igussi soup is made from meat and is thickened by melon seeds paste. Pounded yam and this Ebba food is a very common combination of foods in Nigeria.

उसने सोचा शायद यह मुझे अपना थोड़ा सा सूप मेरा ऐब्बा खाने के लिये दे दे। सो उसने अपना ऐब्बा का कटोरा उठाया और पड़ोसन के घर चल दी जो एक बड़े से बर्तन में काफी सारा इगूसी सूप चला रही थी।

उस गरीब स्त्री ने उससे कहा — "क्या मुझे ऐब्बा खाने के लिये थोड़ा सा सूप दोगी?"

सूप के बर्तन में चमचा घुमाती हुई उस स्त्री ने अपनी फटे कपड़े पहने पड़ोसन की तरफ देखा और बोली — "अगर तुम अपना इगूसी सूप नहीं बना सकतीं तो तुम्हें कोई इगूसी सूप नहीं मिलेगा।"

वह गरीब स्त्री बेचारी अपना सा मुँह ले कर अपनी झोंपड़ी में लौट गयी और अपनी झोंपड़ी के बाहर ही बैठ गयी। वहाँ उसकी पड़ोसन के इगूसी सूप की खुशबू बहुत तेज़ आ रही थी।

वह वहाँ बैठ कर वह थोड़ा सा ऐब्बा अपने हाथों से उस कटोरे में से निकालती, एक बड़ी सी साँस ले कर पड़ोसन के ऐब्बा के सूप की खुशबू सूँघती और फिर ऐब्बा का वह टुकड़ा खा जाती।

पड़ोसन उस गरीब स्त्री को अपने इगूसी सूप की खुशबू के साथ ऐब्बा खाते देख कर बहुत गुस्सा हुई। वह बाहर की तरफ भागी और उस गरीब स्त्री पर चिल्लायी — "मेरे सूप की खुशबू खाना बन्द करो।"

पर उस गरीब स्त्री ने उसके सूप की खुशबू खाना बन्द नहीं किया। वह उसके सूप की खुशबू सूँघती रही और उसके साथ

अपना ऐब्बा खाती रही। उसको उस सूप की खुशबू के साथ ऐब्बा खाना बहुत अच्छा लग रहा था।

अब तो जब भी उस पड़ोसन कोई बढ़िया सूप बनाती और उसके सूप की खुशबू उस गरीब स्त्री के घर तक आती वह तुरन्त ही एक छोटा कटोरा भर कर ऐब्बा बनाती और घर के बाहर आ कर उसे उस सूप की खुशबू के साथ खाने बैठ जाती।

पड़ोसन उसकी इस बात से बहुत तंग थी सो उसने इस मामले को उस गॉव के राजा ओबा[79] के पास ले जाने का फैसला किया।

उसने जा कर ओबा से कहा — "यह स्त्री मेरे इगूसी सूप की खुशबू अपना ऐब्बा खाने के लिये इस्तेमाल करती है। इसको इस बात की सजा मिलनी चाहिये।"

ओबा ने जब यह मामला सुना तो मान गया कि उस गरीब स्त्री को पड़ोसन के सूप की खुशबू चुराने की सजा मिलनी ही चाहिये। सो उसने पड़ोसन को कहा कि वह खुद ही उसको सजा दे दे।

ओबा बड़ी अक्लमन्दी से बोला — "अगर उसने तुम्हारे सूप की खुशबू चुरायी है तो तुम उसकी परछाईं को मारो। तुम उसकी परछाईं को चालीस बार मारो।"

यह कह कर उसने पड़ोसन को एक बड़ी सी डंडी थमा दी जिससे वह अपना न्याय करेगी।

[79] Oba is a Yoruba language word for the King.

पड़ोसन को डंडी से उस स्त्री की परछाईं को मारना बहुत ही बेवकूफी लगी। उसने उस गरीब स्त्री से माफी मॉगी और उस दिन से रोज उसको इगूसी सूप देने का वायदा किया।

दोनों स्त्रियॉ घर चलीं गयीं और अब वह पड़ोसन उस गरीब स्त्री को रोज इगूसी सूप देने लगी और उस दिन से वह गरीब स्त्री भी स्वाददार खाना खाने लगी।

यह था न्याय का फल।

16 पैसे किसके लिये[80]

खुशबू की कहनी पढ़ कर हमें खुशबू की एक और कथा याद आ गयी। यह कथा जैसी यहॉ लिखी गयी है वैसी तो यह नहीं कही सुनी जाती क्योंकि यह छोटी सी कहानी एक बहुत बड़ी कहानी का हिस्सा है पर क्योंकि यह कहानी भी वैसी ही कुछ कहानी है इसलिये इसको हम यहॉ तुम्हारे पढ़ने के लिये लिख रहे हैं।

यह कहानी एशिया महाद्वीप के भारत देश के तमिल नाडु प्रान्त की है और इसकी पूरी कहानी हिन्दी में लिखी हुई पुस्तक में पढ़ी जा सकती है।[81] तो आओ शुरू करते हैं यह कहानी...

इस कहानी में एक गुरू जी के चार शिष्य हैं। वे अपने गुरू जी के आने जाने के लिये तीन सोने के सिक्के रोज के भाड़े पर एक बैल किराये पर लाते हैं। गुरू जी उस पर बैठ कर चलते हैं।

वह दिन बहुत गर्म था। एक बार चलते चलते गुरू जी गर्मी की वजह से बेहोश से हो जाते हैं तो उनके शिष्य उनको बैल के नीचे एक चादर बिछा कर उसकी छॉह में लिटा देते हैं। एकाध बार उन्हें गुरू जी को बैल की छॉह में और लिटाना पड़ता है।

अगले दिन सुबह शिष्य लोग बैल के मालिक को तीन सोने के सिक्कों के साथ बैल लौटाने जाते हैं। बैल का मालिक कहता है कि

[80] Money for What – This story is a part of a long story “Bharat Ki Lok Kathayen-Tamil Nadu”, by Sushma Gupta in Hindi language.

[81] “Bharat Ki Lok Kathayen-2” by Sushma Gupta. Available from : hindifolktales@gmail.com

तीन सोने के सिक्के तो कम हैं मुझे और ज़्यादा पैसे चाहिये। पूछने पर कि वह ज़्यादा पैसा क्यों माँग रहा है वह कहता है कि ये तीन सिक्के तो बैल की केवल सवारी करने भर के लिये थे उसके नीचे आराम करने के लिये उनको और पैसे देने होंगे।

शिष्य इस बात पर गुस्सा हो जाता है। दोनों में बहस छिड़ जाती है। बहस की गर्मागर्मी से कुछ लोग इकट्ठे हो जाते हैं।

तब एक बड़ी उम्र का आदमी आगे बढ़ता है और मामला सिलटाने के ख्याल से सारा हाल पूछता है। हाल जानने पर वह उसको अपने साथ हुई एक घटना सुनाता है जिसमें उनकी इस समस्या का हल है। तो लो तुम भी सुनो कि उनकी समस्या का हल कि उसने क्या बताया।

उनकी कहानी सुनने के बाद वह आदमी बोला — "तुम्हारा मामला सिलटाने से पहले मैं तुम सबको अपनी ज़िन्दगी की एक घटना बताना चाहूँगा। उसके बाद उस आदमी ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

"यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार मैं भी तुम दोनों नौजवानों की तरह से यात्रा कर रहा था। मेरे पास अपना खाना था और मैं बस उसको बैठ कर खाने के लिये और थोड़ा आराम करने के लिये जगह ढूँढ रहा था।

मुझे सड़क के किनारे एक होटल दिखायी दे गया तो मैं उस होटल के मालिक के पास पहुँचा और उससे पूछा — "जनाब क्या मैं

आपके होटल में बैठ कर अपना खाना खा सकता हूँ और थोड़ा सा आराम कर सकता हूँ?"

वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें। पर ध्यान रहे कि अगर आप हमारे होटल से कुछ खरीदेंगे तब आपको उसकी कीमत चुकानी होगी।"

मैंने हाँ में सिर हिलाया, हाथ धोये और अपना खाना खाने बैठ गया। मैं अपना खाना खा रहा था कि हवा वहाँ के ताजा बने हुए पकौड़ों की खुशबू उड़ा कर ले आयी।

उस होटल का एक रसोइया पकौड़े बना रहा था। उसके पकौड़े की खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी। मैं तो बहुत गरीब था सो मैं तो उनको खरीद नहीं सकता था सो मैं वहीं बैठा रहा और उनकी खुशबू सूँघता रहा और अपने चावल खाता रहा।

जब मैंने अपना खाना खत्म कर लिया तो मैं उस होटल के मालिक को वहाँ खाना खाने देने के लिये धन्यवाद दिया तो वह बोला — "पकौड़ों के पैसे देना मत भूलना।"

मैंने आश्चर्य से पूछा — "पकौड़े? पर पकौड़े तो मैंने खरीदे ही नहीं। तुमने कहा था कि जो कुछ तुम यहाँ से खरीदोगे तुम्हें उसके पैसे देने पड़ेंगे।"

"देखो मैं तुमको बड़े गौर से देख रहा था। मैंने देखा कि तुम अपने वह पुराने चावल केवल हमारे पकौड़ों की खुशबू सूँघ कर ही खा सके।"

मेरी तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ क्योंकि मैंने तो पकौड़े खरीदे ही नहीं थे। तभी होटल में काम कर रहे लोगों में से एक आदमी मेरे पास आया जो अपने मालिक की तरफदारी में बोलने आया था।

वह भी यही बोला — "हमारे होटल में बने पकौड़ों की खुशबू की वजह से ही तुम अपना चावल खा सके। इसके लिये तुम्हें कुछ तो फीस देनी पड़ेगी।

लोग जब हमारा पकौड़ा खाते हैं तो उसकी कीमत अक्सर सिक्कों में देते हैं। क्योंकि तुमने केवल उनको सूँघा है तो तुम उसकी कीमत केवल हमको पैसे सुँघा कर ही दे दो।"

मुझे यह सब बड़ा अजीब सा लग रहा था सो मैंने पूछा — "यह मैं कैसे करूँ?"

वह बोला — "तुम मुझे अपना बटुआ दो।"

मैंने उसको अपना बटुआ दिया तो उसने उसको अपनी नाक से लगा कर सूँघा।

उसने उसको कुछ देर तक सूँघा फिर रुक कर बोला — "तुम्हारे इस बटुए में पकौड़ों की खुशबू के बदले में लिये काफी कुछ देने के लिये है। मैं अपनी नाक खोना नहीं चाहता।"

फिर वह आदमी और होटल का मालिक दोनों होटल में अन्दर गये और उन्होंने देखा कि उन पकौड़ों की खुशबू के पैसे दे दिये गये

हैं। उसके बाद ही मुझे वहॉ से जाने की इजाज़त मिल सकी। इस तरह से मुझे पकौड़ों को केवल सूँघने के ही पैसे देने पड़े।

सो जैसे मैंने पकौड़ों के सूँघने के लिये पैसे उनको पैसे सुँघा कर दिये ऐसे ही तुम भी बैल की छाया को इस्तेमाल करने के पैसे दे सकते हो। तुम आवाज से दे सकते हो। बस अपने बटुए को बैल के कान के पास थोड़ी देर के लिये हिलाओ और तुम्हारा उधार चुकता हो जायेगा।"

इस बड़े आदमी की बात सुन कर खरदिमाग को बहुत आश्चर्य हुआ और वह खुश भी बहुत हुआ। उसने तुरन्त अपना बटुआ निकाला और बैल के कान के पास ले जा कर बजा दिया।

वह किसान बोला — "बस बस, काफी है। बैल ने तुम्हारे सिक्कों की आवाज सुन ली है और तुमने बैल की छाया को इस्तेमाल करने के लिये पैसा दे दिया है।"

खरदिमाग और गधा दोनों ने ही उस किसान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने गुरू जी की तरफ चले। सारी शाम वे लोग अपनी इसी घटना के बारे में बात करते रहे।"

अब बताओ क्या तुम यह तरकीब सुझा सकते थे, नहीं न?

17 कौवी और बाज[82]

अमेरिकन इन्डियन्स की सबसे प्रिय कहानियों में हैं जानवरों की कहानियॉ। उनमें जानवरों की कुछ ऐसी कहानियॉ भी हैं जिनमें कमजोर जानवर अपने से अधिक ताकतवर और चालाक जानवर को बेवकूफ बना देता है।

कुछ तो उनमें हॅसी की कहानियॉ हैं जिनमें मुकाबला है और कुछ में मेहनत और न्याय का इनाम दिखाया गया है जैसे यह कोचिटी कौवी और बाज़ की कहानी। तो लो पढ़ो यह कोचिटी कौवी और बाज़ की कहानी।

एक बार कोचिटी कौवी[83] ने अपने घोंसले में दो अंडे दिये। एक दो दिन तो वह कौवी अपने अंडों पर बैठी पर फिर वह थक गयी तो वह अपने लिये खाना ढूॅढने चली गयी। दिन पर दिन गुजरते चले गये पर कौवी नहीं लौटी।

इधर एक दिन एक मादा बाज़[84] ने देखा कि एक घोंसले में दो अंडे लावारिस से पड़े हैं उनको कोई भी नहीं से रहा है।

तो एक दिन उस मादा बाज ने सोचा कि जिस कौवी का यह घोंसला है उसे तो इन अंडों की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है पर इन

[82] Crow and Hawk – a folktale from Native Americans, America, North America

[83] Kochiti female crow

[84] Translated for the word “Hawk”. See its picture above.

अंडों को किसी को तो सेना ही चाहिये तो चलो मैं ही इन अंडों पर बैठती हूँ। जब इनमें से बच्चे निकलेंगे तो ये बच्चे मेरे हो जायेंगे।

सो वह मादा बाज़ बहुत दिनों तक उन अंडों पर बैठती रही पर कौवी का अभी भी कहीं पता नहीं था। अंडों में से बच्चे भी निकल आये पर कौवी फिर भी नहीं लौटी।

मादा बाज उन बच्चों को खाना खिलाती रही, पालती रही, उड़ना सिखाती रही पर कौवी फिर भी नहीं लौटी।

जब कौवी को अपने बच्चों का ध्यान आया तो वह वापस अपने घोंसले में आयी। उसने देखा कि उसके अंडों में से बच्चे निकल आये हैं और एक मादा बाज़ उनकी देखभाल कर रही है।

जब कौवी ने अपने बच्चों को देखा तो उस समय वह मादा बाज़ उनको खाना खिला रही थी। कौवी आ कर ज़ोर से बोली — "तुम क्या समझती हो कि तुम यह क्या कर रही हो?"

मादा बाज़ बोली — "मैं इसमें कोई गलत काम तो नहीं कर रही हूँ।"

कौवी बोली — "तुमको मेरे ये बच्चे मुझे वापस कर देने चाहिये।"

मादा बाज ने पूछा — "क्यों?"

तो कौवी बोली — "क्योंकि ये बच्चे मेरे हैं इसलिये।"

मादा बाज़ ने कहा — "तुमने तो केवल अंडे दिये हैं पर तुमने उनको सेया कभी भी नहीं। तुम तो उनको छोड़ कर चली गयीं। उनको सेने वाला तो यहॉ कोई था ही नहीं।

मैं आयी और मैंने उनको सेया, मैंने उनको खाना खिलाया, मैंने उनको उड़ना सिखाया। अब वे बच्चे मेरे हैं मैं उनको तुम्हें वापस नहीं करूॅगी।"

कौवी गुस्से में बोली — "मैं उनको वापस ले कर रहूॅगी।"

मादा बाज बोली — "मैंने उनके साथ बहुत मेहनत की है। तुम तो अंडे देने के बाद ही उनको छोड़ कर चली गयी थीं। आज जब मैंने उनको पाल पोस कर बड़ा कर दिया है तो तुम इनको मुझसे क्यों वापस लेना चाहती हो?"

इस पर कौवी ने बच्चों की तरफ देखते हुए कहा — "मेरे बच्चों, आओ मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारी मॉ हूॅ।"

बच्चे बोले — "हम तुम्हें नहीं जानते। यह मादा बाज़ ही हमारी मॉ है। हम तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे।"

कौवी ने जब देखा कि वह अपने बच्चों को अपने साथ नहीं ले जा पा रही है तो बोली — "कोई बात नहीं है मैं यह मामला गरुड़[85] के पास ले कर जाती हूॅ। वही चिड़ियों का राजा है वही इस मामले का फैसला करेगा।"

[85] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

मादा बाज़ बोली — "मुझे कोई ऐतराज नहीं है। तुम जिसके पास भी जाना चाहो जा सकती हो।"

सो दोनों चिड़ियें गरुड़ के पास गयीं।

कौवी पहले बोली — "मैं जब अपने घोंसले में वापस आयी तो मैंने देखा कि मेरे अंडों में से बच्चे निकल चुके हैं और यह मादा बाज़ मेरे बच्चों की देखभाल कर रही है। ओ गरुड़, मैं आपके पास यह कहने आयी हूँ कि यह मादा बाज़ मेरे बच्चों को वापस कर दे।"

गरुड़ ने कौवी से पूछा — "पर तुमने अपना घोंसला छोड़ा ही क्यों था?"

इस बात का कौवी के पास कोई जवाब नहीं था सो वह चुप रही और उसका सिर झुक गया।

गरुड़ बोला — "कोई बात नहीं। हाँ मादा बाज़, अब तुम बताओ कि तुमको यह घोंसला मिला कैसे?"

मादा बाज़ बोली — "मैं कौवी के घोंसले की तरफ से रोज गुजरती थी पर मैंने उस घोंसले में कभी किसी को नहीं देखा। बस केवल दो अंडे रखे थे उसमें।

कई दिनों तक कोई आया भी नहीं तो मैंने सोचा कि जिस माँ ने इस घोंसले को बनाया उसको शायद इन अंडों की चिन्ता नहीं है। मैं ही इन अंडों को से देती हूँ सो मैंने उन अंडों को सेया और बच्चों के पैदा होने पर उनकी देखभाल की।"

कौवी बीच में ही बोली — "पर वे बच्चे मेरे हैं।"

गरुड़ ने कौवी को घूरा और बोला — "बीच में नहीं बोलो कौवी, जब तुम्हारी बारी आये तब बोलना।"

फिर वह मादा बाज़ से बोला — "और कुछ कहना है तुमको, मादा बाज़?"

मादा बाज बोली — "अब जब ये बच्चे बड़े हो गये हैं तब यह कौवी कह रही है कि ये बच्चे उसके हैं। मैंने उन अंडों को सेया, मैंने उन बच्चों को खाना खिलाया, मैंने उनका घोंसला गर्म रखा, उनको उड़ना सिखाया। मैं अब इन बच्चों को नहीं छोड़ सकती।"

गरुड़ मुँह ही मुँह में बोला — "ऐसा लगता है कि यह मादा बाज इन बच्चों को छोड़ने वाली नहीं है। अगर ये बच्चे कौवी के हैं तो उसने अपना घोंसला छोड़ा ही क्यों और अगर छोड़ा भी तो फिर वह इतने दिनों तक वापस क्यों नहीं आयी।

इस सबसे ऐसा लगता है कि यह मादा बाज़ ही इन बच्चों की सच्ची माँ है इसलिये ये बच्चे उसी को मिलने चाहिये।"

कौवी ने जब यह सुना तो वह गरुड़ से बोली — "आप ऐसा कैसे सोच सकते हैं कि ये बच्चे मादा बाज़ के हैं? आप बच्चों से क्यों नहीं पूछते कि वे किसके पास रहना चाहते हैं? अब वे इतने बड़े हैं कि वे जानते हैं कि वे कौए हैं बाज़ नहीं।"

गरुड़ ने हॉ में अपना सिर हिलाया "यह तो तुम ठीक कहती हो।"

और फिर बच्चों से पूछा — "तुम लोग किस मॉ के साथ रहना चाहोगे, कौवी के साथ या मादा बाज़ के साथ?"

दोनों छोटे कौए बोले — "हम तो मादा बाज़ को ही अपनी मॉ जानते हैं और किसी को नहीं।"

कौवी चिल्लायी — "नहीं, तुम मेरे बच्चे हो।"

बच्चे बोले — "तुमने तो हमें जन्म लेने से पहले ही छोड़ दिया था। मादा बाज़ ने हमारी सारी देखभाल की, अब वही हमारी मॉ है।"

गरुड़ बोला — "बस अब यह मामला तय हो गया। बच्चों ने अपनी मॉ चुन ली है।"

कौवी रोने लगी तो मादा बाज़ बोली — "अब रोने से क्या फायदा। तुमने तो कभी अपने बच्चों को देखा ही नहीं। अब ये बच्चे तुम्हारे कैसे हो गये।"

और बच्चे मादा बाज के साथ चले गये।

18 आधा आधा[86]

न्याय की यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में एक आदमी दूसरे आदमी को न्याय पाने का ढंग बताता है।

यह लोक कथा दो ऐसे लोगों की है जो एक ही गॉव में रहते थे और दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। एक का नाम था बन्ता सिंह और दूसरे का नाम था घंटा सिंह। ये आपस में एक दूसरे को पसन्द भी बहुत करते थे और एक दूसरे के साथ साथ ही रहते थे।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर था। घंटा सिंह एक चालाक और मौके का फायदा उठाने वाला आदमी था जबकि बन्ता सिंह एक बहुत ही ईमानदार और सीधा सादा आदमी था।

बन्ता सिंह हमेशा उन बातों को मान लेता था जो घंटा सिंह उससे कहता। वह घंटा सिंह के प्लान में कभी फायदे या नुकसान के बारे में नहीं सोचता।

न तो बन्ता सिंह के पास ही ज़्यादा पैसा था और न घंटा सिंह के पास ही बहुत पैसा था। जाहिर है जब उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था तो उनके पास बहुत ज़्यादा सामान भी नहीं था।

[86] Fifty-Fifty – a folktale from India, Asia – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/fiftyfifty_indian_folktale.htm

एक दिन घंटा सिंह के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया प्लान आया सो उसने बन्ता सिंह से पूछा कि क्या वह उसके इस प्लान में उसका साथी बनेगा। जैसा कि हमेशा होता था बन्ता सिंह तुरन्त ही राजी हो गया।

घंटा सिंह ने कहा कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा सामान तो हे नहीं तो क्यों न वे अपने सामान को बॉट कर इस्तेमाल करें। वे आपस में अपना अपना सामान बराबर बराबर बॉट लेते हैं।

बन्ता सिंह ने इस विचार से खुश हो कर घंटा सिंह का हाथ इतने ज़ोर से पकड़ कर हिलाया कि उसका हाथ चटक गया।

घंटा सिंह ने एक पल सोचा और फिर बन्ता सिंह से कहा कि उनके पास तीन चीज़ें एक सी थीं। घंटा सिंह के पास एक गाय थी और बन्ता सिंह के पास एक अच्छा गर्म कम्बल था और उसके घर के पीछे बेर[87] का एक पेड़ था। सो वे इन तीनों चीज़ों को आपस में बराबर बराबर बॉट लेंगे।

सीधा सादा बन्ता सिंह घंटा सिंह की चालाकी को भॉप भी नहीं सका और इस बॅटवारे पर राजी हो गया।

घंटा सिंह ने पहले ही सब बॅटवारा कर रखा था। उसने बन्ता सिंह से कहा कि गाय का आगे का हिस्सा बन्ता सिंह का होगा और उसके पीछे का हिस्सा वह खुद ले लेगा।

[87] Ber is called wood apple.

बेर के पेड़ का तना और जड़ बन्ता सिंह ले लेगा और वह अपना काम केवल उसके पत्ते और टहनियों से ही चला लेगा।

और जहॉ तक कम्बल का सवाल है बन्ता सिंह उसको दिन भर अपने पास रख सकता है क्योंकि दिन में घंटा सिंह को उसकी जरूरत नहीं थी।

यह सुन कर बन्ता सिंह ने उसके इस बॅटवारे का विरोध किया कि कम्बल तो वह भी इस्तेमाल करना चाहता था। इस पर चालाक घंटा सिंह बोला कि वह कम्बल केवल रात में ही इस्तेमाल करेगा।

इस तरह से इस बॅटवारे के साथ पहले एक हफ्ता गुजरा। फिर दो हफ्ते गुजरे। और फिर धीरे धीरे एक महीना गुजर गया।

अब बन्ता सिंह को लगने लगा कि घंटा सिंह के बॅटवारे में कहीं कुछ गड़बड़ है।

क्योंकि गाय का अगला हिस्सा उसके पास था तो यह उसका काम था कि वह सुबह सुबह उठे और उसको खाना खिलाये। उसके लिये कुॅए से बालटी भर कर पानी भी लाये ताकि वह उसको दो बार ताजा पानी पिला सके।

अब क्योंकि गाय के पीछे का हिस्सा घंटा सिंह का था तो उसका काम केवल उसको दुहने का था। वह रोज सुबह सुबह उसका एक बड़ा गिलास भर कर मखनी दूध पी जाता था। जबकि बन्ता सिंह को चाय का केवल एक छोटा सा गिलास ही मिल पाता।

जहॉ तक कम्बल का सवाल था वह बन्ता सिंह के बिस्तर पर सारा दिन ऐसे ही रखा रहता। वह दिन में तो उसको इस्तेमाल ही नहीं करता था क्योंकि वह सुबह सुबह ही उठ जाता और फिर सारे दिन अपने काम में लगा रहता। वह उसको कब इस्तेमाल करता।

जब रात होती तो घंटा सिंह उसको उसके पास से ले जाता और उसमें दुबक कर उसकी गर्मी में सो जाता। जबकि बन्ता सिंह को अपने आपको गर्म रखने के लिये रात घुटने पेट में घुसा कर गोला बन कर गुजारनी पड़ती।

बन्ता सिंह अपने पेड़ के बेर खाना चाहता था। महीनों तक उसने अपने पेड़ की सेवा की थी। उसके आस पास की बेकार की घास साफ की थी। उसकी जमीन जोती थी। जब भी उसको जरूरत थी उसको खाद दी थी पानी दिया था। उसके फल उसकी ऑखों के सामने आ रहे थे।

पर जब पहले पहले बेर आये तो घंटा सिंह ने उनको तोड़ कर खा लिया। उसने बन्ता सिंह को एक बेर देना तो दूर उससे एक बार पूछा भी नहीं कि क्या वह बेर खायेगा।

इन सब घटनाओं से परेशान हो कर बन्ता सिंह घंटा सिंह से बहुत लड़ा। इस पर बेशर्म घंटा सिंह बोला कि ऐसा ही तय हुआ था कि बेर के पेड़ की टहनियॉ और पत्ते घंटा सिंह के थे। अब बेर तो टहनियों पर ही लगते हैं इसलिये फल उसी के थे।

बन्ता सिंह इस बात पर नाराज तो बहुत हुआ पर कर कुछ नहीं सका क्योंकि बॅटवारा तो ऐसे ही हुआ था। आखिर परेशान सा वह घूमने निकल गया। वह चलता गया चलता गया कि चलते चलते वह अपने गॉव के पास वाले जंगल के पास आ निकला।

वहॉ उसे एक साधु मिल गया जिसकी लम्बी लम्बी जटाऐं थीं और उसके सारे शरीर पर भस्म मली हुई थी। साधु ने बन्ता सिंह की तरफ देखा तो देखा कि वह बहुत दुखी सा चला आ रहा था।

उन्होंने उससे उसके दुखी होने की वजह पूछी। उन्होंने उसकी सहायता करने का वायदा भी किया अगर वह उनको अपने दुखी होने की वजह बता दे तो।

बन्ता सिंह ने उनको वे सारी घटनाऐं बता दीं जो पिछले कुछ दिनों में हुई थीं। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि घंटा सिंह ने उसको धोखा दिया है। उसको अपने दोस्त की बात नहीं माननी चाहिये थी।

तब उन्होंने उसको बताया कि उसको क्या करना है और यह उसके घंटा सिंह को सबक सिखाने के लिये करना ही चाहिये।

सारा प्लान सुन कर बन्ता सिंह बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर वापस आया। जब शाम को दोनों दोस्तों ने खाना खा लिया तो घंटा सिंह सोने चला। बन्ता सिंह ने कम्बल उठाया उसको पानी में डुबोया और घंटा सिंह को दे दिया।

यह देख कर तो घंटा सिंह तो बस चीख ही पड़ा। उसका यह काम देख कर तो उसको बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में भर कर बन्ता सिंह से पूछा कि उसने वह कम्बल पानी में क्यों भिगोया।

बन्ता सिंह ने ठंडे स्वर में जवाब दिया कि दिन में तो कम्बल उसका था सो वह उसका जो चाहे वह कर सकता था। चाहे वह पानी में भिगोये या सूखा रखे इससे उसे क्या मतलब।

घंटा सिंह तो यह देख सुन कर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया।

वह यह सोचने लगा कि आज बन्ता सिंह को हुआ क्या था। पर वह कुछ बोला नहीं। वह बस सोते में बड़बड़ाता रहा हालॉकि वह सारी रात ठंड से कॉपता रहा।

अगली सुबह घंटा सिंह उठा और जल्दी जल्दी गाय दुहने चला। अब बन्ता सिंह तो पहले ही जाग चुका था। उसने गाय को चारा भी खिला दिया था और ताजा पानी भी पिला दिया था पर फिर भी वह वहीं घूम रहा था।

घंटा सिंह ने अपने घुटनों के बीच बालटी रखी और गाय को दुहने के लिये बैठ गया। जब उसकी बालटी आधी भर गयी तो बन्ता सिंह ने घास के एक तिनके से गाय की नाक में गुदगुदी कर दी।

बन्ता सिंह के गुदगुदी करने से गाय कूद पड़ी। उसने घंटा सिंह की वालटी में अपनी लात मारी तो बालटी घंटा सिंह के मुँह में जा कर लगी जिससे उसका जबड़ा बुरी तरह जख्मी हो गया।

अब तो घंटा सिंह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह बन्ता सिंह पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। इस पर बन्ता सिंह फिर शान्ति से बोला कि गाय का अगला हिस्सा उसका अपना था वह वहाँ कुछ भी करे।

यह सुन कर घंटा सिंह फिर चुप रह गया वह तो कुछ बोल ही नहीं सका। उस सुबह वह अपना बड़ा गिलास भर कर दूध भी नहीं पी सका क्योंकि दूध तो करीब करीब सारा ही बिखर गया था। बालटी में बहुत थोड़ा सा दूध बचा था तो वह उसकी केवल एक छोटा सा गिलास चाय ही पी सका।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो घंटा सिंह बेर के पेड़ की तरफ चल दिया और उसकी एक डाल पर बैठ कर एक एक कर के उसके बेर खाने लगा। तभी अचानक बन्ता सिंह वहाँ कुल्हाड़ी ले कर आ गया और पेड़ का तना काटने लगा।

घंटा सिंह को बन्ता सिंह के इरादों का पता चल गया तो वह तो बहुत घबरा गया। उसने बन्ता सिंह से पूछा कि वह बेर के पेड़ का तना क्यों काट रहा था इससे तो वह गिर जायेगा।

बन्ता सिंह हॅसा और बोला कि पेड़ का तना तो उसका अपना था वह उसका जो चाहे करे। घंटा सिंह उसको रोक नहीं सकता था।

आखिर घंटा सिंह को पता चल गया कि वह अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता था। इसलिये उसने अपने इस बॅटवारे में बदल कर ली। इस बार यह बॅटवारा बन्ता सिंह ने किया और वह क्योंकि बहुत सीधा और एक न्यायपूर्ण आदमी था सो उसका बॅटवारा भी न्यायपूर्ण था।

क्या था उसका बॅटवारा? उसने कहा कि उसका कम्बल एक रात बन्ता सिंह इस्तेमाल करेगा और एक रात घंटा सिंह। गाय की देखभाल भी दोनों करेंगे और दूध भी दोनों आधा आधा बॉटेंगे।

बेर के पेड़ की देखभाल भी वे लोग दोनों एक साथ करेंगे। और फिर जब बेर के पेड़ पर फल आयेंगे तो उनको भी वे आधे आधे बॉट लेंगे।

घंटा सिंह ने इस बॅटवारे को स्वीकार किया। वह बन्ता सिंह के साथ इस तरह से चीज़ें बॉटने पर बहुत खुश था। अब दोनों फिर से बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे।

19 पॉसा पलट गया[88]

बहुत सारी लोक कथाऐं न्याय के ऊपर आधारित होती हैं। वे इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अपराधी को न्याय मिलना ही चाहिये।

इस तरह से चोर धोखा देने वाले और दूसरे बुरे आदमियों को सजा मिलनी ही चाहिये। और ईमानदार आदमी को उसकी ईमानदारी का इनाम भी मिलना ही चहिये।

न्याय की इस लोक कथा में यह एक सादा सा न्याय है। इसमें कोई कानून की बहस नहीं है कोई वकील नहीं है बल्कि एक जज एक सादा सा जाल बिछा कर अपराधी को पकड़ता है।

पॉसा पलट गया भारत देश के तमिल नाडु की एक बहुत पुरानी लोक कथा है इसमें वहॉ की पारम्परिक शादी के रीति रिवाज और हाथी की महत्ता दिखायी गयी है। हाथी वहॉ पर अभी बहुत लोकप्रिय है और बहुत सारे मौकों पर इस्तेमाल में आता है।

एक बार की बात है कि तमिल नाडु के गॉव में एक कुम्हार रहता था। उसके केवल एक ही बच्चा था और वह था एक बेटा। कुम्हार होने की वजह से वह कोई अमीर आदमी तो नहीं था पर उसने अपने बेटे के बारे में बहुत कुछ सोच रखा था।

[88] Table Turned – a folktale from Tamil Nadu, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/tamil_folktale_indian_folktales.htm

वह अपने बेटे के खाने और कपड़ों पर बहुत अच्छी तरह से खर्च करता था और अपने बेटे को स्कूल भी भेजता था। धीरे धीरे उसका बेटा बड़ा हो गया और एक सुन्दर नौजवान हो गया। अब वह अपनी कमाई अपने आप करने लायक हो गया था। इसलिये अब उसकी शादी करने का समय आ गया था।

कुम्हार ने अपने बेटे की तरफ देखा तो उसका सीना गर्व से फूल गया। उसने अपने बेटे की शादी के बहुत अच्छे प्लान बना रखे थे जिसमें उसने बहुत बढ़िया गाने बजाने वालों को बुलाना था। बहुत अच्छी सजावट करवानी थी। बहुत अच्छे फूल लगवाने थे। और बहुत अच्छा खाना खिलवाना था।

शादी के बाद उसको अपने बेटे और बहू को हाथी पर चढ़ा कर गॉव भर में घुमाना था। जैसे अमीर आदमियों के बच्चे हाथी पर चढ़ कर शहर भर में घूमने निकलते हैं ऐसे ही उसको भी उनको हाथी पर चढ़वाना था।

उसी गॉव में एक तेल बेचने वाला भी रहता था जिसके पास एक हाथी था। वह अपना हाथी कुछ पैसों के बदले में किराये पर दिया करता था।

कुम्हार उस तेल बेचने वाले के पास उसका हाथी मॉगने गया और उससे उसका हाथी एक दिन के लिये किराये पर ले लिया। उस रात उस कुम्हार ने अपने वेटे बहू का एक बहुत ही शानदार जुलूस निकाला।

दुलहा और दुलहिन दोनों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे थे। दोनों हाथी पर बैठे थे जिसको उस मौके के लिये खास तरीके से सजाया गया था।

उनके पीछे पीछे बहुत सारे खुश खुश आदमी स्त्रियॉ बच्चे चल रहे थे। ढोल बजाने वाले और गवैये उनके साथ साथ चल रहे थे। कि अचानक हाथी गिर पड़ा और मर गया।

यह देख कर कुम्हार तो बेचारा सकते में आ गया क्योंकि हाथी अभी तक तो ठीक था फिर इतनी जल्दी उसको क्या हो गया कि वह मर गया। किसी की भी समझ में नहीं आया कि उसको अचानक क्या हो गया था।

कुम्हार बेचारा रात भर घटनाओं पर विचार करता रहा। अगली सुबह वह तेल बेचने वाले के पास गया और बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि आपका हाथी मर गया।" कह कर उसने उसको या तो दूसरा हाथी या फिर हाथी की पूरी कीमत देने का वायदा किया।

तेल बेचने वाला स्वभाव से झगड़ालू आदमी था। वह खड़ा हो कर कुम्हार पर चिल्लाने लगा कि उसको तो अपना वही हाथी चाहिये था जिसको उसने पाला था।

अब यह तो साफ था कि कुम्हार वही हाथी वापस नहीं ला सकता था क्योंकि वह तो मर गया था। इसलिये तेल बेचने वाले ने कचहरी में शिकायत कर दी।

जब उनका मामला सुनने का दिन आया तो जज ने तेल बेचने वाले से उसकी शिकायत पूछी। तेल बेचने वाला बोला कि कुम्हार ने एक दिन के लिये उसका हाथी किराये पर लिया था पर वापस नहीं किया।

अब जज ने कुम्हार से पूछा कि उसने तेल बेचने वाले का हाथी क्यों वापस नहीं किया तो कुम्हार ने जज को सारी कहानी बता दी और वही कहा जो उसने तेल बेचने वाले से कहा था कि वह उसको या तो दूसरा हाथी दे देगा या फिर उसके हाथी की पूरी कीमत दे देगा।

जज ने सोचा कि यह सौदा ठीक भी था। उसने तेल बेचने वाले को समझाने की बहुत कोशिश की कि इन हालात में यह सौदा ठीक था पर वह था कि कुछ भी सुनने को तैयार ही नहीं था।

वह अपनी जिद पर अड़ा हुआ था कि उसको तो अपना वाला हाथी ही चाहिये और जज से कहा कि वह कुम्हार को इस बात के लिये ज़ोर दें कि वह उसका अपना हाथी वापस कर दे।

जज एक अक्लमन्द आदमी था। उसने देखा कि तेल बेचने वाले से बहस करने से कोई फायदा नहीं है सो उसने मुकदमा अगले दिन के लिये रख दिया।

यह सुन कर तेल बेचने वाला वहॉ से चला गया। जब वह वहॉ से चला गया तो जज ने कुम्हार को बुलाया और उससे कहा कि उसको मालूम था कि उसका सौदा एक ईमानदारी का सौदा था फिर

भी वह तेल बेचने वाले को उस सौदे पर राजी नहीं कर सका। इसलिये उसने कुम्हार को एक प्लान समझाया।

कह कर उसने कुम्हार के कान में कुछ फुसफुसाया। उसको सुन कर कुम्हार वहॉ से हॅसता मुस्कुराता चला गया।

अगले दिन सुबह को जब कचहरी खुली तो वहॉ कुम्हार कहीं नहीं था। तेल बेचने वाला यह कहता हुआ इधर से उधर घूम रहा था कि यह कुम्हार तो लगता है कचहरी से डर कर भाग गया।

थोड़ी देर तक इन्तजार करने के बाद तेल बेचने वाले ने जज से कहा "ऐसा लगता है कि कुम्हार कचहरी आने में डर रहा है इसलिये वह अपने घर में छिपा बैठा है।"

सो उसने कचहरी से कुम्हार के घर जाने और उसको खुद वहॉ से लाने की इजाज़त मॉगी। जज ने यह इजाज़त उसको तुरन्त ही दे दी और साथ में कचहरी का एक जूनियर औफीसर साथ कर दिया।

दोनों कुम्हार के घर पहुॅचे। तेल बेचने वाले ने उसके घर का दरवाजा बहुत ज़ोर से खटखटाया पर अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उसने दरवाजे पर अपने घूॅसे से भी मारा और अपनी सबसे ऊॅची आवाज में कुम्हार का नाम ले कर भी पुकारा पर अन्दर तो बिल्कुल ही शान्ति थी कोई आवाज नहीं थी।

यह देख कर तेल बेचने वाले को बहुत गुस्सा आ गया और गुस्से में भर कर उसने दरवाजे को एक बहुत ज़ोर का धक्का दिया।

अब उसको यह तो पता नहीं था कि दरवाजे के पीछे कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लगा रखे थे सो जैसे ही उसने दरवाजे में धक्का मारा तो उसके सारे बर्तन टूट गये।

बस उसी समय कुम्हार अपने पिछले दरवाजे से वहॉ आ गया और रोते हुए उस पर अपने मिट्टी के बर्तन तोड़ने का इलजाम लगा दिया।

वह बोला कि तेल बेचने वाले ने उसके पुरखों के दिये हुए बर्तन तोड़ डाले थे और वे बर्तन अब किसी भी तरह से वापस नहीं लाये जा सकते थे। अब वह तेल बेचने वाले से अपने वही बर्तन वापस मॉग रहा था।

अब परेशान होने की तेल बेचने वाले की थी। उसने कुम्हार से सौदा किया कि अगर वह उससे अपने वही मिट्टी के बर्तन नहीं मॉगे तो वह भी उससे अपना वही हाथी नहीं मॉगेगा और मुकदमा वापस ले लेगा।

कुम्हार काफी देर तक ना नुकुर करने का बहाना करता रहा पर आखीर में उसने उसकी बात मान ली और मामला तय हो गया कि न तो कुम्हार अपने वही बर्तन मॉगेगा और न ही तेल बेचने वाला अपना वही हाथी मॉगेगा। मुकदमा वापस ले लिया गया।

इस तरह तेल बेचने वाला दोनों तरफ से हार गया। उसका हाथी भी गया और उसको हाथी का पैसा भी नहीं मिला।

हालॉकि कुम्हार के भी थोड़े से बर्तन टूट गये पर वे इतने कीमती नहीं थे जितना कि तेल बेचने वाले का हाथी। एक हफ्ते के अन्दर अन्दर ही उसने नये बर्तन बना लिये थे।

20 एक लोमड़ा और एक मगर[89]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के बंगला देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें दो जानवर आपस में चीज़ों का बॅटवारा करते हैं पर इतनी चालाकी से जिससे दूसरे को बहुत नुकसान पहुॅचता है। पर फिर वे दोनों आपस में अपना झगड़ा सिलटा लेते हैं उनको न्याय मॉगने के लिये किसी दूसरे के पास नहीं जाना पड़ता।

बहुत दिन पहले की बात है कि एक बहुत सुन्दर झील के किनारे एक गॉव बसा हुआ था। उस झील के किनारे एक चालाक लोमड़ा और उसका एक बहुत ही वफादार दोस्त मगर रहता था।

दोनों दोस्त करीब करीब रोज ही मिलते थे और अपने अपने खानों के बारे में बात करते थे कि कैसे वे दोनों अपना अपना खाना बिना किसी परेशानी के इकट्ठा कर सकते थे।

जाड़ों के मौसम में खाना थोड़ी मुश्किल से मिलता था सो लोमड़े को गॉव के लोग जो अपना बचा हुआ खाना अपने घर के बाहर फेंक दिया करते थे उस खाने को चुराना पड़ जाता था।

पर लोमड़े के लिये यह काम थोड़ा सा खतरनाक था क्योंकि एक बार गॉव वालों ने इस डर से कि लोमड़ा कहीं उनकी मुर्गियॉ न खा जाये उसको पत्थरों से मारा।

---

[89] The Fox and the Crocodile – a folktale from Bangla Desh – Adapted from the Web Site : http://leverettfolktales.blogspot.ca/2015/12/folktale-from-bangladesh-fox-and.html

उनके ऐसे खराब व्यवहार से परेशान हो कर भूखा और घायल लोमड़ा अपनी मॉद में भाग आया। यह देख कर मगर उसकी सहानुभूति के लिये उसके पास आ गया।

एक दिन लोमड़े को एक विचार आया सो वह अपने जिगरी दोस्त मगर के पास पहुँचा और उससे बोला — "मेरे दोस्त मुझे एक विचार आया है कि क्यों न अपना खाना हम खुद ही उगायें।"

अब मगर तो पानी का जानवर था उसको तो जमीन का ज़्यादा पता नहीं था सो वह बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है पर हम लोग वहॉ किस चीज़ की खेती करेंगे? हम लोग वहॉ क्या उगायेंगे?"

लोमड़ा बोला — "हम लोग वहॉ पर चावल की खेती कर सकते हैं। चावल को बहुत पानी चाहिये सो हम उसको इस झील के पास ही बोयेंगे।"

मगर बोला — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर दोस्त यह चावल खाने में लगता कैसा है।"

लोमड़ा बोला — "अरे चावल? वह तो बहुत ही स्वादिष्ट होता है – मुलायम और मीठा। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मॉस के मुकाबले में हम उसको आसानी से खा सकते हैं।"

मगर बोला — "यह तो बहुत ही बढ़िया है। मैं तो चावल के बोने का इन्तजार भी नहीं कर पा रहा।"

सो मगर ने लोमड़े को चावल बोने में सहायता की और उसने चावल के पौधों की तब तक देखभाल भी की जब तक वे बड़े नहीं हो गये।

एक दिन लोमड़ा बोला — "अब हमारी फसल काटने लायक हो गयी है सो अब हमको अपनी फसल काट लेनी चाहिये।"

लोमड़े की यह बात सुन कर मगर के मुँह में पानी भर आया और वह अपने होठ चाटने लगा।

लोमड़ा बोला — "मेरे दोस्त अभी ज़रा सा इन्तजार करो। अब हम इस फसल को पहले बाँट लें।"

कह कर उसने कुछ देर सोचने का बहाना किया और फिर बोला — "मुझे एक विचार आया है। क्योंकि पिछले कुछ महीनों से तुमने इसको उगाने में बहुत मेहनत की है तुम इसका वह सारा हिस्सा ले सकते हो जो जमीन के नीचे उगता है और मैं इसका वह हिस्सा ले लेता हूँ जो जमीन के ऊपर उगता है।"

अब मगर को तो चावल के बारे में कुछ मालूम नहीं था सो वह बोला — "तुम्हारी बड़ी मेहरबानी। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

पर जैसे ही उन्होंने चावल के पौधे जमीन में से निकालने शुरू किये तो मगर ने देखा कि जमीन के नीचे तो चावल की केवल जड़ ही उग रही थी और चावल के पके हुए दाने तो जमीन के ऊपर उग रहे थे।

चालाक लोमड़ा हॅसने लगा पर लोमड़े की इस हरकत से मगर का दिल टूट गया और वह उससे कुछ गुस्सा हो गया। पर उसने अपना गुस्सा लोमड़े पर जाहिर नहीं किया और चावल के पौधों की जड़ें लेता हुआ बोला — "अगली बार हम कुछ और बोयेंगे।"

लोमड़े को कुछ पता नहीं चला कि मगर के दिमाग में क्या चल रहा था सो वह उसकी इस बात पर राजी हो गया। वह बोला — "इस बार हम आलू बोयेंगे।"

सो पिछली बार की तरह से इस बार भी मगर ने लोमड़े को उसकी आलू की फसल बोने में सहायता की और उनकी अच्छी तरह से देखभाल की जब तक आलू के पेड़ बड़े नहीं हो गये।

जब आलू के पेड़ बड़े हो गये तो लोमड़े ने कहा कि आओ अब अपनी आलू की फसल काटते हैं। मगर ने यह सुन कर फिर से अपने होठ चाटे।

चालाक लोमड़ा फिर बोला — "मेरे दोस्त थोड़ा इन्तजार करो। अब हम इस फसल को बॉट लें। पर हम इसको बॉटेंगे कैसे। मैं बताता हूॅ कि हम इसे कैसे बॉटेंगें। क्योंकि तुमने इन पिछले महीनों में इस खेत के ऊपर बहुत मेहनत की है तुम इसका...।"

पिछली बार के अन्याय की बात याद कर के मगर बीच में ही बोला — "अगर तुम्हें इसमें कोई ऐतराज न हो तो इस बार ऊपर का हिस्सा मैं लूॅगा।"

लोमड़ा यह सुन कर बहुत खुश हुआ क्योंकि वह तो यही चाहता था और उसने आलू के पेड़ के पत्ते उसको दे दिये।

मगर को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आलू तो जमीन के नीचे हुए थे ऊपर नहीं। उसने आलू के थोड़े से पत्ते खाये तो उनको उसने तुरन्त ही थूक दिया क्योंकि वे तो बहुत बेस्वाद थे। सो इस बार भी मगर ने धोखा खाया।

अबकी बार मगर बोला — "इस बार हम कुछ और बोयेंगे। इस बार हम नारियल बोयेंगे। मैंने देखा है कि बच्चे पेड़ पर चढ़ कर नारियल तोड़ते रहते हैं।"

सो अगली बार लोमड़े ने नारियल बोये। हर बार की तरह से इस बार भी मगर ने नारियल के पेड़ों की भी बहुत देखभाल की। जब नारियल के पेड़ों पर नारियल आ गये तो फिर एक बार नारियल तोड़ने का समय आया।

लोमड़ा बोला — "अब नारियल बढ़ कर पक गये हैं अब हम इनको तोड़ लेते हैं।"

मगर के साथ पिछली बार भी बहुत धोखा हुआ था सो अब की बार लोमड़ा मगर से बोला — "मगर अबकी बार तुम बताओ कि तुम नारियल का कौन सा हिस्सा लोगे।

मगर अबकी बार नारियल के ऊपर के चिकने खोल से धोखा खा गया सो उसने उसका बाहर वाला हिस्सा लेने का निश्चय किया

और उसके अन्दर का मीठा रसीला सफेद गूदा उसने लोमड़े के लिये छोड़ दिया।

वह बोला — "अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो दोस्त लोमड़े मैं अबकी बार नारियल का ऊपर का हिस्सा ले लेता हूँ उसके अन्दर का हिस्सा तुम ले लो।"

पर जब नारियल तोड़ा गया तो मगर ने देखा कि हरे रंग के नीचे एक कत्थई रंग का खोल था। कत्थई रंग के खोल के नीचे का हिस्सा सफेद गूदेदार था और उसमें दूधिया सफेद नारियल का पानी भी था।

यह देख कर मगर बहुत गुस्सा हो गया वह बोला — "लोमड़े भाई तुम मेरे साथ चालाकी खेलना बन्द करो। अबकी बार अगर हम कुछ बोयेंगे तो अबकी बार मैं अन्दर का हिस्सा लूँगा।"

लोमड़ा इस पर भी राजी हो गया। अगली बार उन्होंने आम की फसल बोयी। मगर के कहे अनुसार अबकी बार उसको आम का बीज मिला। मगर यह देख कर तो बिल्कुल पागल सा ही हो गया।

वह अपने इस निर्दयी दोस्त की पूँछ काटने ही वाला था कि इस बीच लोमड़ा सोच रहा था कि इस गुस्से से भरे मगर से अपने आपको कैसे बचाये कि उसके दिमाग में एक नया विचार आया।

उसने मगर को अपने नये काम के बारे में बताया कि वह अबकी बार गन्ना उगायेगा। वह उसको गन्ने के पत्ते और जड़ दोनों देने को तैयार था कि मगर की मुस्कान देख कर रुक गया।

लोमड़े ने पूछा — "क्या बात है मगर भाई क्यों मुस्कुरा रहे हो?"

दयालु मगर एक बड़ी सी मुस्कान अपने चेहरे पर ला कर बोला — "तुम्हारे किसी भी विचार से मुझे एक और अच्छा विचार आया है। इस विचार के अनुसार हम उपज को ज़्यादा अच्छी तरह से और ज़्यादा न्यायपूर्वक बॉट सकेंगे। अगर हम उसको मानेंगे तो फिर हमको भूखे भी नहीं रहना पड़ेगा।"

लोमड़ा तो इस अचानक नये विचार से आश्चर्य में ही पड़ गया।

उसने पूछा — "क्या विचार है तुम्हारा मगर भाई?"

मगर बोला — "हमको सारी फसल को बराबर बराबर बॉट लेना चाहिये न कि उसका कोई खास हिस्सा तुम लो और कोई खास हिस्सा मैं लूँ।"

आखिर लोमड़े की समझ में आ गया कि अब वह मगर को और ज़्यादा धोखा नहीं दे सकता सो वह मगर की शर्तों पर राजी हो गया। फिर उसके बाद उनको कभी खाने की कमी नहीं हुई।

21 बबून का फैसला[90]

एक दिन की बात है कि कुछ ऐसा हुआ —

एक बार एक चूहे ने एक दर्जी के कपड़े फाड़ डाले तो दर्जी एक बबून के पास गया और उससे बोला — "मैं तेरे पास इसलिये आया हूँ क्योंकि चूहे ने मेरे कपड़े फाड़ दिये हैं। पर वह कहता है कि उसको यह बात मालूम नहीं है और वह बिल्ली को इसका दोषी ठहराता है।

इसी तरह से बिल्ली भी अपने आपको निर्दोष ठहराती है और कहती है कि यह काम कुत्ते ने किया होगा। कुत्ता कहता है कि यह उसका काम नहीं है लकड़ी ने यह काम किया होगा।

लकड़ी आग को दोषी ठहराती है। आग का कहना है कि यह काम उसने नहीं किया बल्कि पानी ने किया होगा। पानी का कहना कि यह काम हाथी ने किया होगा और हाथी कहता है कि यह काम चींटी का है।

इस तरह उन सबमें आपस में झगड़ा हो रहा है। मैं दर्जी तुझसे यह कहने आया हूँ कि तू उन सबको इकट्ठा कर और पता लगा कि यह काम किसका है ताकि मुझे सन्तोष मिल सके।"

---

[90] The Judgment of Baboon – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft34.htm

जब दर्जी ने यह सब बबून से कहा तो उसने सब जानवरों को इकट्ठा किया तो उन्होंने उससे भी वही सब कहा जो उन्होंने दर्जी से कहा था। हर जानवर एक दूसरे को दोषी बता रहा था।

सो बबून को उनको सजा देने को कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखायी दिया सिवाय इसके कि वे आपस में एक दूसरे को ही सजा दे दें।

सो उसने सबसे पहले चूहे से कहा — "चूहे दर्जी को सन्तोष दो।"

चूहे ने कहा कि उसकी कोई गलती नहीं है फिर भी बबून ने बिल्ली से कहा कि वह चूहे को काट ले। बिल्ली ने चूहे को काट लिया।

फिर उसने वही सवाल बिल्ली से पूछा और जब उसने कहा कि यह काम उसका नहीं था तो बबून ने कुत्ते को बुला कर कहा कि वह बिल्ली को काट ले।

इस तरह से बबून ने सभी जानवरों को बुलाया और एक के बाद एक सभी से वही सवाल किया पर सभी ने यही कहा कि वे नहीं जानते कि यह किसने किया था। तब उसने उन सबसे कहा —

लकड़ी तुम कुत्ते को मारो
आग तुम लकड़ी को जलाओ
पानी तुम आग को बुझाओ
हाथी तुम पानी पियो
चींटी तुम हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटो

उन्होंने सबने ऐसा ही किया और उस दिन के बाद से वे कभी एक दूसरे के साथ मिल कर नहीं बैठते।

चींटी हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटती है
हाथी पानी पी जाता है
पानी आग बुझा देती है
आग लकड़ी खा जाती है
लकड़ी कुत्ते को मारती है
कुत्ता बिल्ली को काटता है
बिल्ली चूहा खाती है

इस फैसले से दर्जी को बहुत सन्तोष मिला और वह बबून से बोला — "बबून अब मैं सन्तुष्ट हूँ। और अब क्योंकि मुझे सन्तोष मिल गया है इसके लिये मैं तुझे दिल से धन्यवाद देता हूँ। तूने मेरे साथ न्याय किया है तूने मुझे नया कपड़ा दिया है।"

बबून बोला — "आज से मेरा नाम जैन[91] नहीं होगा मेरा नाम बबून होगा।"

उस दिन से बबून अपने चारों हाथों पैरों पर चलता है शायद इसलिये कि उसने उस दिन अपना यह बेवकूफी भरा फैसला सुनाया था तो उसका दो पैरों पर चलने का फायदा उससे छीन लिया गया।

[91] Jan

22 भूत ब्राह्मण[92]

एक बार की बात है कि एक गरीब ब्राह्मण था जो बहुत कुलीन घराने का नहीं था सो उसको शादी करने में बहुत मुश्किल हो रही थी। वह कई अमीर लोगों के पास गया और उनसे पैसा देने की भीख माँगी ताकि वह किसी लड़की से शादी कर सके।

असल में उसको काफी पैसे की जरूरत थी क्योंकि यह पैसा केवल उसको शादी के लिये ही नहीं चाहिये था बल्कि लड़की के माता पिता को देने के लिये भी चाहिये था।

वह बेचारा दर दर भीख माँगता घूम रहा था। बहुत सारे अमीर लोगों की चापलूसी कर रहा था। आखिर उसने धीरे धीरे कर के कुछ पैसे इकट्ठे कर लिये। फिर उसने शादी की और अपनी पत्नी को अपनी माँ के पास अपने घर ले कर आया।

कुछ समय बाद उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मेरे पास तुम्हें और अपनी पत्नी को खिलाने पिलाने के लिये कुछ भी नहीं है। इसलिये मुझे पैसा कमाने के लिये किसी दूर देश में जाना चाहिये। हो सकता है कि मुझे वहाँ सालों लग जायें। क्योंकि मैं तब तक वापस नही आऊँगा जब तक मैं काफी पैसा न कमा लूँ।

---

[92] The Ghost Brahman - a folktale from India, Asia.
Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. This book has been published by NBT, Delhi, 2020.

इस बीच जो कुछ भी मेरे पास है वह मैं तुमको दे कर जाता हूँ तुम उसको सँभाल कर खर्च करना और मेरी पत्नी का ख्याल रखना।"

माँ ने दुखी मन से उसको जाने की इजाज़त दी और आशीर्वाद दे कर विदा किया। माँ से आशीर्वाद ले कर वह ब्राह्मण अपनी यात्रा पर चल दिया।

उसी शाम एक भूत ने उस ब्राह्मण का रूप रखा और उसके घर आया। ब्राह्मण की पत्नी ने सोचा कि उसका पति वापस आ गया सो उसने उससे पूछा — "अरे तुम इतनी जल्दी वापस कैसे आ गये? तुम तो कह रहे थे कि तुमको तो शायद कई साल लग जायेंगे। फिर तुमने अपना विचार क्यों बदल दिया?"

भूत बोला — "आज का दिन जाने के लिये ठीक नहीं था इसी लिये मैं वापस आ गया। इसके अलावा मुझे कुछ पैसे भी मिल गये थे सो मैंने सोचा कि अब मैं बाद में जाऊँगा।"

माँ को कोई शक नहीं हुआ कि वह उसका बेटा नहीं था। सो वह भूत उस घर में ऐसे रहता रहा जैसे वही उस घर का मालिक हो। वही उस स्त्री का बेटा हो और वही उस नौजवान स्त्री का पति हो।

क्योंकि वह भूत ब्राह्मण और असली ब्राह्मण दोनों इतने एक जैसे लगते थे जैसे दो मटर के दाने तो पड़ोसियों ने भी सोचा कि वह असली ब्राह्मण ही है।

कुछ साल बाद असली ब्राह्मण अपनी यात्रा से वापस लौटा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने जैसे एक आदमी को अपने घर में देखा।

भूत ब्राह्मण ने असली ब्राह्मण से पूछा — "तुम कौन हो और तुम मेरे घर में क्यों आये हो?"

असली ब्राह्मण बोला — "तुमने क्या कहा कि मैं कौन हूँ? पहले मैं यह तो जान लूँ कि तुम कौन हो। और यह मेरा घर है यह मेरी माँ है और यह मेरी पत्नी है।"

भूत बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। हर आदमी जानता है कि यह मेरा घर है। यह मेरी पत्नी है और यह मेरी माँ है। और मैं तो यहाँ सालों से रह रहा हूँ। और तुम कहानी बना रहे हो कि यह तुम्हारा घर है और वह स्त्री तुम्हारी पत्नी है। ओ ब्राह्मण तुम्हारा दिमाग फिर गया लगता है।"

ऐसा कह कर भूत ने ब्राह्मण को उसके अपने ही घर से बाहर निकाल दिया। ब्राह्मण के मुँह से तो आवाज भी नहीं निकली। उसको यह भी अन्दाज नहीं पड़ा कि वह क्या करे। आखिर उसने अपना मामला राजा के सामने रखने का सोचा।

राजा ने भूत ब्राह्मण को देखा और फिर ब्राह्मण को देखा तो दोनों तो एक दूसरे की हूबहू एक सी शक्ल के थे। यह देख कर तो वह भी परेशान हो गया।

उसको तो पता ही नहीं चल रहा था कि कौन कौन था। और जब यही पता नहीं चल रहा था कि कौन कौन है तो वह उनका झगड़ा कैसे सिलटाये।

ब्राह्मण रोज ही राजा के पास जाता रहा और उससे अपना घर अपनी मॉ और अपनी पत्नी वापस दिलवाने की प्रार्थना करता रहा। और राजा यह न पहचान पाने की वजह से कि कौन असली ब्राह्मण था और कौन भूत ब्राह्मण रोज उसे अगले दिन आने के लिये टालता रहा।

राजा रोज ही उससे कहता "कल आना।" और असली ब्राह्मण रोज ही अपना सिर पीटता हुआ और यह कहता हुआ वहॉ से चला जाता "उफ़ यह कैसी नीच दुनियॉ है। मुझे अपने ही घर से बाहर निकाल दिया गया है और एक दूसरे आदमी ने मेरे घर मेरी मॉ और मेरी पत्नी को ले रखा है। और यह राजा भी क्या अजीब चीज़ है। यह भी कोई न्याय नहीं करता।"

अब ऐसा हुआ कि क्योंकि ब्राह्मण राजा के दरबार से रोज ही शहर के बाहर चला जाता था तो वह एक ऐसी जगह से गुजरता था जहॉ बहुत सारे चरवाहे बच्चे खेलते रहते थे। वे अपने गायों बैलों को घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ देते और वे खुद एक पेड़ के नीचे खेलने के लिये इकट्ठा हो जाते। वे शाही खेल खेलते थे।

उनमें से एक चरवाहे को राजा बना दिया जाता दूसरे को वजीर और तीसरे को कोतवाल और उनमें से कुछ पुलिस बन जाते।

वे रोज ब्राह्मण को उधर से रोते जाते हुए देखते तो एक दिन वजीर चरवाहे ने उस ब्राह्मण से पूछा कि वह रोज वहाँ से रोता हुआ क्यों जाता था। ब्राह्मण ने उसे अपनी कहानी सुनायी तो वजीर चरवाहा उसके सवाल का जवाब नहीं दे सका।

इस पर वजीर चरवाहा राजा चरवाहे के पास गया और उसे ब्राह्मण की बात बतायी। राजा चरवाहे ने एक सिपाही चरवाहे को बुलाया और उस ब्राह्मण को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

वह सिपाही चरवाहा ब्राह्मण के पास गया और उससे जा कर कहा — "हमारे राजा तुमको बुला रहे हैं।"

ब्राह्मण यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया — "मगर क्यों? मैं अभी अभी राजा के पास से ही तो आ रहा हूँ। उन्होंने अभी तो मुझसे कल आने के लिये कहा था। अब वह मुझे फिर क्यों बुला रहे हैं?"

सिपाही चरवाहा हँसा और बोला — "यह हमारे राजा हैं जो तुमको बुला रहे हैं। हम चरवाहों के राजा हैं शहर के राजा नहीं।"

ब्राह्मण ने पूछा — "यह चरवाहों का राजा कौन है?"

"आओ और अपने आप ही देख लो।"

ब्राह्मण उस सिपाही चरवाहे के साथ उनके राजा चरवाहे के पास चला गया।

राजा चरवाहे ने ब्राह्मण से पूछा — "हे ब्राह्मण देवता, मैं आपको रोज इधर से रोते जाते देखता हूँ। आप क्यों रोते हैं?" इस पर ब्राह्मण ने उसको भी अपनी कहानी सुना दी।

राजा चरवाहे ने उसकी कहानी सुन कर कहा— "मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ। मैं आपकी सब चीज़ें आपको वापस दिलवा दूँगा पर अभी आप शहर के राजा के पास जायें और उससे यह इजाज़त ले कर आयें कि मैं आपका मामला सिलटा सकूँ।"

ब्राह्मण फिर से राजा के पास गया और उससे चरवाहे राजा से अपना मामला सिलटाने की इजाज़त माँगी जिसने उसको यह मामला सिलटाने के लिये कहा था।

राजा ने देखा कि उससे तो उस ब्राह्मण का मामला सिलट नहीं रहा था तो उसने उस राजा चरवाहे को यह मामला सिलटाने की इजाज़त दे दी।

राजा चरवाहे ने असली ब्राह्मण को अगले दिन सुबह आने के लिये कहा और कहा कि साथ में वह भूत ब्राह्मण को भी साथ ले कर आये। ब्राह्मण चला गया।

ब्राह्मण के जाने के बाद राजा चरवाहे ने सारे मामले पर विचार किया और अगले दिन एक तंग गर्दन की शीशी ले कर अपनी अदालत में आया। अगले दिन ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण दोनों उसकी अदालत में आये। वहाँ काफी देर तक पूछागछी होती रही। गवाहियाँ होती रहीं।

उसके बाद राजा चरवाहा बोला — "मैंने आप लोगों के मामले के बारे में काफी सुन लिया। मैं आपका मामला अब बहुत जल्दी ही सिलटा देता हूँ।

देखिये यह शीशी है। आप दोनों में से जो कोई भी इस शीशी में पहले घुस जायेगा वही इस घर का मालिक होगा जिस पर लड़ाई चल रही है। अब मैं देखता हूँ कि कौन पहले इस शीशी में घुसता है।"

इतना कह कर उसने उस शीशी की डाट खोल दी और शीशी का खुला मुँह असली ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण की तरफ कर दिया।

यह देख कर असली ब्राह्मण बोला — "तुम तो गाय भैंस चराने वाले चरवाहे हो और तुम्हारी अक्ल भी वैसी ही एक चरवाहे वाली है। ऐसा कौन सा आदमी है जो इस तंग गर्दन वाली छोटी सी शीशी में घुस सकता है। उँह।"

राजा चरवाहा बोला — "अगर आप इस तंग गर्दन वाली छोटी सी शीशी में नहीं घुस सकते तो इसका मतलब यह है कि आप इस घर के मालिक नहीं हैं। यह तो बड़ी सीधी सी बात है।"

फिर वह भूत ब्राह्मण की तरफ देख कर बोला — "आपका क्या विचार है जनाब?"

राजा चरवाहा आगे बोला — "हाँ अगर आप इस शीशी में घुस सकते हैं तो यह घर, यह माँ और यह पत्नी सब आपके हैं।"

भूत ब्राह्मण बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं इस शीशी के अन्दर घुस सकता हूँ।"

और अपनी बात को रखते हुए और सबको आश्चर्य में डालते हुए उसने अपने आपको एक बहुत ही छोटे से कीड़े में बदला और तुरन्त ही उड़ कर उस शीशी में घुस गया।

जैसे ही वह भूत ब्राह्मण उस शीशी में घुसा तो राजा चरवाहे ने उस शीशी का मुँह उसकी डाट लगा कर बन्द कर दिया। अब वह भूत ब्राह्मण शीशी में बन्द हो गया और फिर उसमें से बाहर नहीं निकल सका।

फिर राजा चरवाहे ने असली ब्राह्मण से कहा — "लीजिये ब्राह्मण देवता अब आप इस शीशी को ले जाऐं और समुद्र में फेंक दें। और जा कर अपना घर अपनी मॉ और अपनी पत्नी को सॅभालें।"

ब्राह्मण तो उसका फैसला देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया और बहुत खुश हुआ कि जो न्याय शहर का राजा नहीं कर सका वह न्याय एक मामूली से चरवाहे ने पल भर में कर दिया।

उसको बहुत बहुत धन्यवाद देते हुए अपने घर चला गया और बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। उसके कई बेटे बेटियॉ भी हुए।

List of Stories of “Justice in Folktales”

1. Story of King Shibi
2. Stories of King Solomon
3. Story from Arabian Nights
4. Stories of Birbal
5. Story of Shakespeare
6. King Firdi
7. Why Male Mosquitoes Do Not Bite
8. A Lion's Division
9. Nine Hyena and a Lion
10. Difference in Justice
11. Guinea Fowl and Turkey Get Justice
12. Creative Division
13. The Judgment of Shemyak
14. Loki and Dwarves
15. The Stolen Soup Aroma
16. Money for What
17. Crow and Hawk
18. Fifty-Fifty
19. Table Turned
20. The Fox and the Crocodile
21. The Judgment of Baboon
22. The Ghost Brahman

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022